मैसूरमें

लेखक:—गुरुनाथ शर्मा

सन १९३०.

मैसूरमें

लेखकः—[illegible]नाथ शर्मा

प्रथम संस्करण सन् १९३९ मूल्य ।)

विषय-सूची

अपनी बात

अपनी बात

हिंदमें राष्ट्रीयता दिन दुगुनी और रात चौगुनी होरही है। ऐसी हालतमें देश सम्बंधी और बातोंमें भी राष्ट्रीयताका रंग आता है तो, यह स्वाभाविक है। साहित्य राष्ट्रका प्रण है। साहित्यकी प्रगतिपर राष्ट्रका भविष्य है। जब सारे देशकी प्रजाका मन राष्ट्रीय भावपूर्ण होगया है तो, साहित्य भी राष्ट्रीयता पूर्ण होना चाहिये। इसका कारण यह है कि साहित्य समयका द्योतक है।

हम आज राष्ट्रवाणी जगतके सामने अपनी पुस्तक 'मैसूरमें' पेश कररहे हैं। हमारी समझमें यह चीज समयानुकूल है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम सुशिक्षित पाठकोंका फैसला नहीं चाहते।

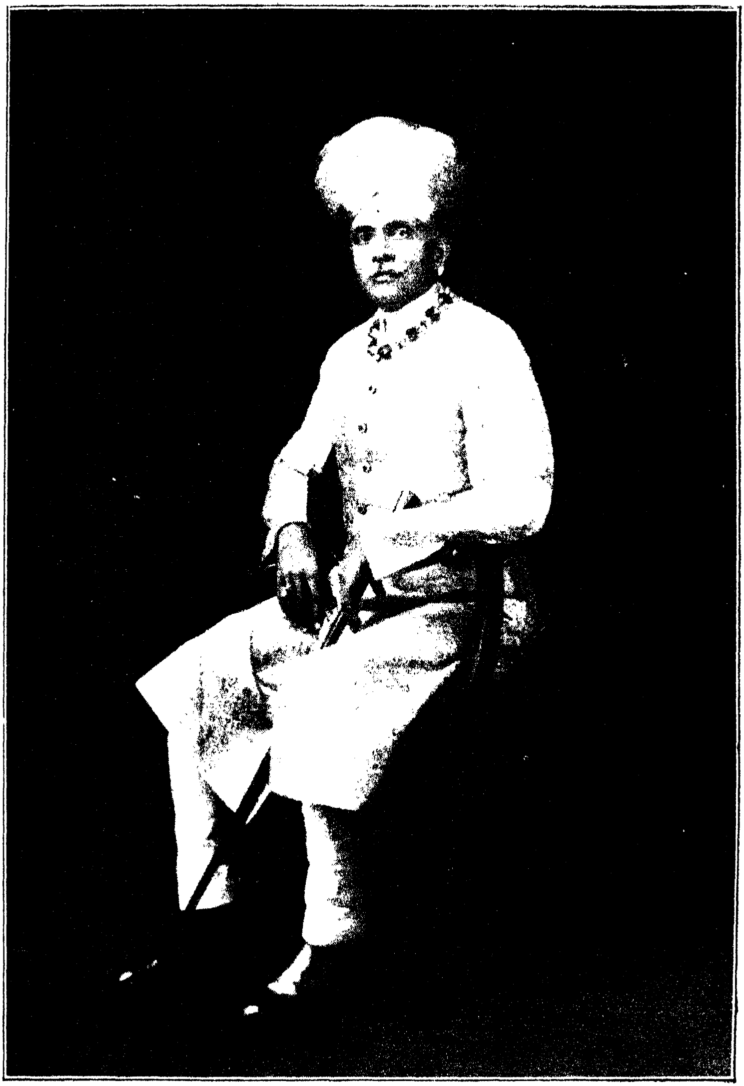
इसे लिखनेमें हम सचेत और संलग्न हैं। कारण कि इससे 'एक पंथ दो काज' सिद्ध होता है। एक काम यह है कि राष्ट्रवाणी जगतके सामने दक्षिण हिंदके एक देशी राज्यकी चीज रहेगी; दूसरा यह है कि देशी राज्योंके आंदोलनमें पाठकोंको एक देशी राज्यका अंदरूनी हाल मालूम होगा।

हमारा काम तो पाठकोंके सामने मैसूरकी बातोंको पेश करना ही है, जिससे पाठक मैसूरको समझ सकेंगे। हमारा ऐसा ख्याल है कि मैसूरको समझनेमें यह पुस्तक सहायक होगी। हम यह पूरी आशा रखते हैं कि इसपुस्तकको पढ़कर सुशिक्षित पाठक मैसूरको समझनेमें सफल होंगे।

लेखक हम और मुद्रकसे लेकर कंपोजिटर तक भी दक्षिणके हैं। ऐसी बातोंमें इसपुस्तकमें तृटियां रहगयी हैं तो, यह क्षम्य है। क्या, हमारी तृटियोंको सुशिक्षित पाठक क्षमा न करेंगे?

आशा है कि सुशिक्षित पाठक हमारे प्रयास और साहसका आदर करेंगे और दक्षिण हिंद सम्बंधी और चीजोंको लेकर प्रस्तुत होनेमें हमें प्रोत्साहन देंगे।

—लेखक



मैसूरके महाराजा श्री कृष्णराज ओडयर बहादुर

ओडयरोंकी भूमि

"ओडयरोंकी भूमि" याने मैसूर राज्य पहिलेसे ओडयरोंके शासनमें रहता आरहा है—चाहे थोडे अर्सेकेलिए दूसरोंके हाथमें रहा हो। यह खुदरती और इन्सानकी ईजाद कीगयी खूबसूरतीकी खान है। अपनी खूबसूरती और सिर ऊंचा रखनेवाली पुरानी तवारीखसे मैसूर राज्य हिंदमें और हिंदके बाहर भी नामी रहता आरहा है। आज तो दुनियाके सैरकरनेवाले, तवारीख जाननेवाले, विज्ञानकी खोज करनेवाले योजनकर्ता और लेखकके लिए मैसूर राज्य सोचने और समझनेकी चीज बना हुआ है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि मैसूर पहले अंधेरेमें था। श्रुतकेवली भद्रबाहुने दक्षिण भारतमें जैन धर्मको फैलानेके लिए मैसूर में अपना अड्डा जमाया। श्री शंकराचार्यने तो अपना 'आदिपीठ' शृंगेरीमें कायम किया। चोल राजाओंसे पिण्ड छुडाकर श्री रामानुजा-

चार्यको यही शरण लेनी पड़ी । श्री मध्वाचार्यने यहींसे अपने द्वैत मतको चलाया । फिर मुसलमानोंके जमानेमें भी मैसूरका हाथ ऊंचा रहा । यह कहना नामुनासिब नहीं कि मैसूरमें हिंदू और मुसलमानोंकी एकताकी नींवपडी । फिर दक्षिणमें अंग्रेज और फ्रेंच अपनी २ ताकत तौलने लगे तो मैसूर वजनदार पथ्थर बन गया । टिप्पूकी मौत हुईतो फ्रेंच लोगोंका नसीब फूट गया और अंग्रेजोंकी तकदीर खिल उठी । अबसे मैसूरमें नयी रोशनीका जमाना शुरू होता है । इसमें भी अंग्रेजों और फ्रेंच लोगों द्वारा मैसूर राज्यकी तारीफके पुल बांधे गये । कौन कह सकता है कि मैसूरपर कितनी किताबें लिखी गयी ! लेखोंकी गिनती ही नहीं! चाहे यह कम हो - हिंदके राष्ट्रीय प्राण और हिंदकी आजादीके जन्म दाता महात्माजीने कहा कि मैसूर ' रामराज्य ' है ।

तारीफकी भी हद होती है । कलियुगमें रामराज्यकी तारीफ मामूली नहीं । इससे ये सवाल किये जाते हैं कि क्या मैसूर रामराज्य है? क्या, मैसूर के महाराजा राम हैं ? क्या, मैसूरकी प्रजा दुःखी नहीं ? कहना आसान है, लेकिन सबूतके साथ बताना टेढी खीर है । हां, जब तक मैसूर राज्यकी अंदरूनी बातोंपर दिमाग नहीं लगायेंगे, तब तक सचाई रोशन नहीं होती । हमारी इसकिताबसे मैसूर बनाम रामराज्य की सच्ची बातें पाठक समझलेंगे तो हम समझेंगे कि हमारा प्रयत्न सफल हुआ । आज हमारे मुल्कमें राष्ट्रीयता दिन दिगुनी और रात चौगुनी हो रही है । वह अपने वतनके पेचीदा सवालोंको सोचने और हल करनेके जतन में लगे हुए हैं । सबकी नजर देशी हिंद और ब्रिटीश हिंदके सवाल पर लगी है । है तो यह सवाल टेढा-मेढा, लेकिन खानगी है । चाहिए इसको हल करने में खानगी तौर अख्तियार करना । लेकिन रूस और तुर्की वगैरह मुल्कोंकी हवासे नयीं बातें पैदा हो रही हैं । इसी लिए कई लोग देशी हिंद और ब्रिटीश हिंदके सवालके हल करनेमें नये तरीके अख्तियार करना चाहते हैं । लेकिन हमको यह नहीं भूलना चाहिए कि

हमारी राष्ट्रीय प्रगतिकी बुनियाद सद्भावनापर पडी है। इसी लिए हमारी तरकीबोंको भी सद्भावनापर कसना पड रहा है। हम यह जानते हैं कि देशी रियासतोंकी राज्य व्यवस्था बहुत खराब है। लेकिन हम यह यकीन रखते हैं कि हमारे मुल्ककी अंधेरी रियासतोंमें मैसूर जुगनू है और यहांतक भी कहा जा सकता है कि मैसूरमें जो तरक्की हो रही है, उससे ब्रिटीश हिंदके बहुतसे प्रान्त पीछे पडे हैं। हां, यह हो सकता है कि मैसूर रूस या तुर्कीकी तरह आगे नबढ़ा हो। मैसूरकी प्रगतिपर मन लगानेसे यह जरूर कहा जा सकता है कि वह कूपस्थ मंडूक नहीं।

हिंद अपने ढंगका निराला मुल्क है। यह पराये मालपर गुजर-बजर नहीं कर सकता। दूसरोंको अपना माल रफ्तानी करना ही हिंदुस्थान का काम था, है और रहेगा भी। सत्वानुभूति हिंदुस्थानकी पूंजी है। इसी पर यह फूला-फला रहा और रहेगा भी। मैसूर इसी सत्वानुभूतीपर खडा है और उसकी वह हिफाजित कर रहा है। क्या, यह कम गर्वकी बात है? लेकिन खेदकी बात है, हम लोग मैसूरको भी दूसरी रियासतोंकी तरह देखने लगे और इस ख्यालको लेकर महात्मजीकी भी हम खिल्ली उडा रहे हैं। महात्माजीकी मैसूरकी तारीफकी खिल्ली उडाना हमारा काम है या हमें यह समझनेकी कोशिश करनी चाहिये कि क्या सचमुच महात्माजीकी बात तथ्य है? हम यहांपर अपने पाठकोंसे यह अपील करना चाहते हैं कि आप लोग लार्ड जटलांडकी तरह यह मत कहिए कि महात्माजीने मैसूरको देखा होगा लेकिन वह इसको नहीं समझ सके। हमारा ऐसा एतबार है कि ऐसी बात कहनेसे फिर जटलांडकी तरह हमको भी काला मुंह बनालेना पडेगा। इसकी वजह यह है कि महात्माजीने इण्डिया याक्टको जैसा पढा है, उसी तरह मैसूरको भी पढा है। लेकिन मैसूर इण्डिया याक्ट नहीं। यह हिंदकी चीज है। चाहे सोहबतसे मैसूरमें कोई खराब बात दीखती हो, लेकिन जरा आंख

खोल कर देखनेसे सचमुच यह अंधेरे हिंदुस्थानमें जुगनू है —चाहे बडी रोशनी न हो।

पहलेसे मैसूरके महाराजा निराले हैं। आजके महाराजा श्री कृष्णराज ओडयर बहादूर सबसे निराले हैं। आमना-सामना होकर उनको देखने और समझनेका हमें तो मौका न मिला, बल्कि उनके भाषणों और उनके राज्यकी सिलसिलेवार तरक्कीपर नजर डालनेसे यह मालूम होता है कि उनमें "अहं" नहीं। वह "आत्मवत्सर्व भूतानि" का सच्चा अर्थ समझते हैं। उनके दिलमें अपनी प्रजाका दर्द है। वह अपने राज्यको किसगतिपर चला रहे हैं, इसबातपर गौर करनेसे हमें यह लिखनेकी हिम्मत हो रही है कि यह हिंदुस्थानके आदर्श राजाधिराजा हैं। गद्दीपर बैठनेके दिन श्री कृष्णराजा ओडयर बहादूरने कहा कि "आज मेरे ऊपर जिम्मेदारीका बोझ डाला जा रहा है। यह सचमुच बोझ ही है, लेकिन मैं यह इरादा कर रहा हूं कि इस जिम्मेदारीको बातोंमें नहीं, बल्कि क्रियामें अदा कर सकूंगा"। ....मैं अपने बुजुर्गोंके सुकर्मोंपर टिक नहीं सकता। अब तक मेरी प्रजाको जो फायदे हुए हैं, उनकी हिफाजित करना ही मेरा काम नहीं, बल्कि उनको बढाकर प्रजाकी जिंदगीको और ऊंचा करना ही मेरा फर्ज है"। ऐसा हर एक राजा कहते हैं, लेकिन कहनेमें ही नहीं, बल्कि क्रियामें मैसूरके महाराजा कहां तक कामयाब रहे, यही जानना हमारा काम है।

दुनियाकी नजरमें मैसूरके महाराजा कट्टर सनातनी हैं। अभी हालके उनके यूरोपके दौरेपर भी नजर डालनेसे उनके सनातनी होने की बात और पक्की होती है। इससे सुधारक और क्रान्तिकारी विचारोंके रखनेवाले हिंदवासी महाराजासे हताश होसकते हैं और इस हाता-शीसे यह सोचा जासकता है कि ऐसे महाराजा कैसे प्रगतिशील हो सकते हैं, और उनका राज्य। लेकिन लोगोंका यह ख्याल गलत है।



मैसूरके युवराजा श्री कंठीरव नरसिंहराज ओडयर बहादुर

चाहे महाराजा अपनी खानगी जिंदगीमें भले ही सनातनी हों, लेकिन राज्यके कामोंमें और बाहरी कामोंमें वह पूरे सुधारक हैं। वह धर्मके पाबन्द हैं, लेकिन उनका धर्म रूह को पाक करने वाली चीज है नकि, अडचन डालनेवाला और डाह पैदा करनेवाला। उनके धर्ममें सब इन्सान एक हैं। वह मुसलमान और ईसाई नौकरों और हिंदू नौकरोंमें कोई भेद नहीं रखते। वह सबसे बडे मेल-जोल से बर्तते हैं। यहां उनकी ये बातें समझनेकी हैं। वे हैं—"हमें तरक्की करनी है तो, उन सब पुराने उसूलों और ख्यालातको छोड देना चाहिए, जिनसे तरक्की में अडचन पडती हो। इससे यह मालूम होता है कि मैसूरके महाराजाका धर्म और है। फिर वह एक जगह कहते हैं—" स्टेटकी आर्थिक उन्नतिमें अनुकूल हुई बातों और दूसरे मुलकोंकी तरक्कीमें अनुकूल हुई बातोंको मिला लेना चाहिए। इस मिलानसे हासिल तजुर्बेको लेकर उन सब रास्तोंको पकडना चाहिए, जिनसे स्टेटकी प्रजाकी आर्थीक उन्नति हो। और साथही साथ हम स्टेटकी तरक्कीकेलिए जो काम करना चाहते हैं, उनकी बातोंको प्रजाके सामने रखना चाहिए, जिससे वह भी हमारे कामोंको समझसके और उनके मुताबिक चल सके........ ऐसा करनेसे उनमेंसे चंद लोग काम चलाने लायक ही नहीं होंगे, बल्कि नेता बनकर स्टेटके कामोंको आसान बना सकेंगे।

पाठक! आप लोगों के सामने मैसुर के महाराजाकी कही हुई बातोंका सार रखागया है। इसका मतलब यह नहीं कि आप लोग महाराजाकी बातोंको पढकर ही खुश रहेंगे। जब महाराजा खुद बातोंसे क्रियामें यकीन रखते हैं तो आप लोगोंके सामने उनकी क्रियाका सच्चा रूप रखना बहतर है। अब हम आपको मैसरसे परिचय कराना चाहते हैं। अभी हालमें लंदनके मैसर भोजमें एक गोरेने कहा कि मैसूर एक खुली हुई किताबकी तरह है। जो कोई वहां दौड जायगा, वह उसे पढ सकता है। तो ऐसे कितने है, जो मैसुर जा सकेंगे और मैसूरकी बातोंको

समझ सकेंगे। देश की गरीबीमें मैसूर तक जाना ही मुश्किल है तो अभी हालमें मद्रासकी रेडियोमें बोलते हुए अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, शहीद सर प्रभाशंकर पटनीके दर्जेके राष्ट्र-भक्त सर मिर्जा इस्मायल यह सलाह देते हैं कि दौडनेवालेसे चलनेवालेके और इससे भी थोडे दिन केलिए मैसूरमें आकर रहनेवालेके बदन और रूहको बडा फायदा पहुंचेगा। इससे भी सर मिर्जा साहेब खुश नहीं हुए होंगे कि वे फिर कहते हैं कि यदि कोई मैसूरमें आकर बस जायगा तो उसे १८०० में लिखे हुए एक फ्रेंच इतिहासज्ञकी इसबातकी सचाई मालूम होगी कि मैसूरके मैदान वह सुंदर वास दे सकते हैं, जो इन्सानको जमीनपर खुदरत ही दे सकती है।

लंबाई-चौडाई (रकबा) और आबादीके लिहाजसे मैसूर राज्य देशी राज्योंमें दूसरे नंबरका है। इसका क्षेत्रफल २९४७२ वर्गमील है। यहां करीब ७० लाख आदमी आबाद हैं। इनमें हिंदू, मुसलमान, पार्सी और ईसाई सब तरहके हैं। मैसूरकी आबादीमें हिंदू ज्यादा हैं। यहांकी खास बोली कन्नडी है। थोडे अंध्रोंके रहनेसे और दक्षिण हिंदुस्थानमें ज्यादा फैली हुई बोली होनेके सबबसे तेलुगु याने आंध्रभाषा भी बहुत फैली है। थोडे अर्से तक यह राज्य मुसलमानोंके हाथमें रहने की वजहसे हिंदुस्थानी भी यहां चलती है। कन्नडी भाषामें हिंदुस्थानी शब्दोंकी भरमार देखकर यह कहा जा सकता है कि मुसलमनोंका मैसूर राज्यपर बडा असर रहा। यों तो तेलुगु साहित्यका कन्नडी साहित्यपर बडा असर पडा है, फिर भी कन्नडी भाषा अपनी खास हैसियत रखती है। लिपि और साहित्य प्रगतिमें मेल होनेसे यह कहा जा सकता है कि तेलुगु और कन्नडी बहिनें हैं। जो हो, यहां चार बोलियां चलती हैं। वे कन्नडी, तेलुगु, तामिल और हिंदुस्थानी हैं। अंग्रेजी तो सिर्फ पढे-लिखे लोगोंकी शोभाकी भाषा है। इस तरह पांच बोलियोंसे अंतरप्रान्तीय ओहदेको प्राप्त यह स्टेट चारों तरफ ब्रिटीश हिंदुस्थानसे घिरी हुई है।



मैसूरके राजकुमार श्री जयचामराज ओडयर

भूगोलिक दृष्टिसे यह स्टेट ज्यादहतर दक्षिण और साथ ही साथ इन्डियन पेन्सुलाके थोडेसे मध्यम टेबल लांडको समाया हुआ है। दो तरफ पूर्वी और पश्चमी घाटकी श्रेणी और दक्षिणमें नीलगिरी पहाडों से घिरा हुआ यह राज्य त्रिकोणाकार है। इसकी जमीन दरियासे १००० फीटसे ३००० फीट तक ऊंची है। यहांकी आब-हवा हर मौसाममें बराबर रहती है, जो आदमी और जानवरकेलिए फायदे मंद है। इसी लिए इस जगहको आराम-तलब हिंदुस्थानी और युरोपवासी बहुत पसंद करते हैं। गर्मीके दिनोंमें सैर सपाट करने और गर्मीसे बचनेके लिए हिंदुस्थानके बहुतेरे लोग यहां आकर रहते हैं। यहां पानी २१-३५ इंचसे लेकर ७४-६६ इंच तक पडता है।

पहाड, जंगल नदियां और झरने वगैरह खुदरती देनोंसे यह राज्य दिल लुभानेवाला और मन बहलानेवाला है। यहांकी नदियां —कावेरी, हेमावती, तुंगभद्रा, शरावती, शिंशा, अर्कावति, पालार, उत्तर पिनाकिनी दक्षिण पिनाकिनी हैं। खुदरती देन कावेरी, शरावती और शिंशासे महाराजा कृष्णदेवराय ओडयरने बहुत फायदा उठाया हैं। इननदियोंसे बिजली पैदा की जाती है, जिससे कई सुरतोंमें स्टेटको फायदा होता है। यह कहा जासकता है कि खेतीबारीमें सब नदियोंसे बराबर फायदा उठाया जारहा है, जिससे खेती बढ रही है और प्रजाको फायदा हो रहा है। नदियोंके जरिये खेतीबारीके लिए ही नहीं, बल्कि व्यवसाय-धंधोंके लिए भी अगर हिंदुस्थान में किसीने फायदा उठाया है तो वह मैसुर स्टेट ही है।

सोनेसे लेकर चांदी, तांबा लोहा वगैरह कितने ही खनिज इस स्टेटमें मिलते हैं। घर और खेतीबारीके सामान बनानेकी लकडीकी यहां कमी नहीं। टीकसे लेकर यहां तरह तरहकी लकडी मिलती है। चंदन तो यहीं पैदा होता है। चंदन और उससे बने साबून और तेलका

इतना व्यापार होता है, जिसकी हद नहीं। यहां चंदनके जंगल ही जंगल है। इसी लिए यहां से विलायतको भी चंदनका तेल और साबून भेजा जाता है। इन्सानकी जिंदगीको खुश बनानेके लिए जितनी चीजोंकी जरूरत है, वह सब यहां मिलती हैं। यहांकी खास पैदावरकी चीजें—आनाज, मक्का, रागी, मूंगफली, ऊंख, रूई, तंबाकू, नारीयल और रेंड वगैरह हैं। इसके अलावा फल-सागकी कमी नहीं। सुपारी और एलची यहांकी खास उपजे हैं।

मुल्ककी खास जायदादमें माने जानेवाले छोटे आर बडे तालाबोंकी गिन्ती करीब २५००० है। इनसे खेतीबारीमें बडा काम होता है। नालोंकी सुविधा भी काफी है। खेतीबारीमें नदियां, तालाब और नाले कामकी चीजें हैं। नयी रोशनीकी नजरसे खास चीजें माने जानेवाली रेल और सडक का काफी इन्तजाम है। ७०० से ज्यादा मीलकी रेल लाइन है। २७०० मील तककी सडकका बंदोबस्त है। इनदोनोंसे शहर और गांववालोंको भी फायदा होता है। मजबूती और खूबसूरतीमें यहांकी चंद सडके अच्छी है। ब्रिटीश हिंदुस्थानी सडकोंसे यहांकी चंद सडके बहुत मजबूत और खूबसुरत हैं। रेलगाडीके तीसरे दर्जेमें बिजलीके पंखोंका इन्तजाम करनेका विचार हो रहा है।

मैसुर स्टेटपर खुदरतकी बडी मेहरबानी है। सब तरह के खनिजोंको देनेवाली खानें, पानी देनेवाली नदियां, लकडी देनेवाले जंगल, और खानेकी चीजोंको देनेवाली ऊपजाऊ जमीन, इन खुदरती देनोंसे यहां स्वर्ग या रामराज्य बनाया जा सकता है तो कोई बडी बात नहीं। इतनी सुविधायें पाकर अगर मैसुरके महाराजा दूसरे देशी राज्यों के राजा और नवाबोंकी तरह सैरसपाटी बनते तो वह ओछी नजरसे देखने काबिल हो जाते, लेकिन वह ऐसे नहीं। उनको मैसुर ही सब कुछ है। वह कभी विलायत जाते ही नहीं—चाहे हालमें मजबूरीसे



मैसूरके दिवान अमीन–उल–मुल्क सर मिर्जा एम. इस्मायल

एक बार गये हो । आरामकेलिए भी वह हिंदुस्थानकी खास जगहोंपर अक्सर नहीं जाते---चाहे यात्रा या किसी कामसे कभी जाते हो। इस लिए समझदार, दूरदृष्टि प्राप्त महाराजाने अपनी वक्तको खुदरतसे फायदा उठानेमें हीं लगाया है। मैसूरके धंधोंकी और खेतीबारीकी तरक्कीपर मन लगायेंगे तो आपको यह कहना पडेगा कि मैसूरके महाराजा मेहनती हैं, न कि आराम तलब। हां, इसमें वफादार और दूरकी सूझको रखनेवाले दिवान सर मिर्जा इस्मायलका भी हाथ है। इस बातको अभी हालमें मैलसमें बोलते हुए सर एम. विश्वेश्वरय्याने भी मान लिया है, जो मैसूरके दिवान रह चुके। कितना भी हो, आखिर को आदमी आदमी ही है। इस लिए हो, यह कहा जाता है कि अब भी मैसूरमें कुछभी नहीं हुआ और महाराजा और दिवान स्टेटकी तरक्की काफी नहीं कर सके। इस नुक्ताचीनीका अंत कहां ? क्या, कोई आदमी सारे कामको एकदम पूरा कर सकता है ? क्या, नुक्ताचीनी करनेवाले एकदम बडे कामको पूरा कराके दिखा सकते हैं ? जोहो, मैसूरमें जो तरक्की की गयी है, उसको देखकर कमसे कम इतनातो कहा जा सकता है कि देशी राज्यों और ब्रिटीश हिंदुस्थानमें जो तरक्कीकी गयी है, उससे मैसूर राज्यने चागुना कर दिखाया है। किस देशी राज्यमें मैसूरके बराबर तरक्की की गयी है ? ब्रिटीश हिंदुस्थानकी सर्कारने बार-बार यह कहा कि व्यवसाय-धंधोंसे ही देशकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो सकती है और सर्कारकी तरफसे व्यवसाय-धंधोंकी तरक्कीमें मदद की जानी चाहिए। तो क्या मैसूर स्टेट में जो कुछ तरक्की हासिल की गयी है, उसमेंसे पांचवा हिस्सा ही सही ब्रिटीश हिंदुस्थानकी सर्कारने करदिखाया है ? इस नजरसे मैसुर स्टेट-पर नजर दौडायी जायगीतो मैसुरके महाराजा सचमुच धन्यवादके पात्र हैं। हां, इधर कांग्रेसकी वजहसे हिंदुस्थानमें व्यवसाय-धंधोंका कुछ इन्तजाम किया जा रहा है। व्यवसाय-धंधोंकी तरक्कीमें मैसुरसे कुछ फायदा उठाया जा सकता है, ऐसा हमारा ख्याल है। कितना अच्छा हो, मैसुर और कांग्रेस व्यवसाय-धंधोंकी तरक्कीमें परस्पर सहयोग बढाले !

मैसूरकी व्यवसाय-धंधोंकी तरक्कीने मैसूरवासीको देशी चीजोंसे खारिज नहीं किया। इस बाबत सर मिर्जाकी यें बातें समझनेकी है :— मैसूरमें सोने और लोहेसे लेकर बहुतसे खनिजोंकी खाने हैं। उनके लिए मैसूरवासियोंको बाहर जानेकी जरूरत नहीं। यहां रेशम और रूईसे तरह २के कपडे तय्यार करनेवाली फाक्टरियां हैं। साबून, शक्कर, सीमेंट और कागज तय्यार करनेवाली फाक्टरियां भी हैं। चन्दन तेल पैदा करनेकी फाक्टरी मैसूरकी खास चीज है। इसके अलावा दवाइयां, पत्थरकी चीजें, लाखकी चीजें और खिलौने बनानेकी खास फाक्टरियां हैं। तंबाकूका व्यवसाय क्रमोन्नतिपर है। बिजलीके सब सामान यहां तय्यार होते हैं। चीनी चीजें भी यहां बनती हैं......................... ....मैसूरवासी अपने साबूनसे धोसकता है। मैसूरी अंगोछेसे पोंछ सकता है। मैसूरी सूती और रेशमी कपडेसे बदनको ढक सकता है। पेटभर मैसूरका ही खाना खासकता है। मैसूरी काफी पी सकता है। मैसूरी शक्कर काममें ला सकता है। मैसूरी लकडी और मैसूरी लोहेसे अपना घर बनवा सकता है और मैसूरी सामानसे अपना घर सजा सकता है। मैसूरमें ही सब तरहकी शीक्षा मिलती है और लिखनेमें मैसूरकी चीजेही काममें लायी जा सकती है ....।

मैसूरकी यह प्रगति किसकी प्रेरणासे हो सकी? मैसूर क्यो इतना उन्नतिशील होसका? हमतो यह मानते हैं कि यह सब मैसूरकी प्रकृतिसे हो सका। लेकिन कभी यह भूलना नहीं चाहिए कि इसमें प्रजाप्रेमी महाराजा और मतद्वेषसे परे सर मिर्जा इस्मायल दोनोंका हाथ नहीं। हां, पाठकोंके दिलमें यह सवाल उठ सकता है कि सब तो स्टेटका घर भरनेके लिए तो न हुआ और प्रजा जहांकी तहां भूखी नंगी तो नहीं? है तो यह सवाल। इस सवालका जवाब जरूर आगे मिल जायगा। लेकिन हम आपने पाठकोंसे यह विनती करना चाहते हैं कि वे इस जवाबको समझनेके पहले स्टेटकी पुरानी तवारीखपर गौर करेंगे।



जोग पात



गगन चुक्की पात

अन्तर्दशा

इतिहास जरूर बेशकीमती चीज है। इतिहाससे हमें पहिलेकी बातें मालूम होती हैं। अपने बुजर्गोंकी बातें जाननेके लिए इतिहास बड़े कामकी चीज है, जिससे पिछली और हालकी बातोंको मिलाकर आयन्देका रास्ता बनाया जा सकता है। लेकिन पहिलेसे हिंदुस्थानके लोगोंमें एक तरह इतिहास लिखरखनेकी आदत नहीं। इतिहासकी जरूरत पहले पहल ग्रीसवालोंने समझी। योंतो हिंदवासी ग्रीसवालोंसे पहिलेसे ही पढ़े-लिखे हैं, लेकिन इनके पारमार्थिक भावने इनको लापरवाह बनादिया। पारमार्थिक भाव इहसे परेकी चीज है। इसलिए, हिंदवासियोंने अपने रोजमर्राकी खास बातोंको--जिनसे आगेकी औलादको फायदा होगा--लिख रखना छोड़ही दिया। इससे हमें अपने मुल्ककी पिछली बातोंको जाननेमें अड़चन पड़ती है। इससे यह समझना नहीं चाहिए कि इस

तरफ हमारे बुजुर्गोंका ख्याल ही नहीं रहा । हमारे त्योहारों, मन्दिरोंकी लेखनी और ताम्र और पाषाण शासनोंको समझनेसे यह जरूर मालूम होता है कि हमारे बुजुर्ग इतिहासकी जरूरतको समझते थे। लेकिन खेदकी बात यह है कि इनचीजोंसे ऐतिहासिकसे धार्मिक बातें मालूम होती हैं। हां, महाभारत और रामायण आदिको आजके थोडेसे लोग ऐतिहासिक ग्रंथ मानते हैं। चाहे लाख कहिए, हमारे बुजुर्गोंकी लिखरखी हुई चीजोंसे पहलेके ऐतिहासिक और राजनीतिक हालको समझना बडा कठिन है। हां, इनसे जरूर पहलेकी धार्मिक बातें मालूम होती हैं। इस लिए कभी किसी प्रान्त या किसी देशीराज्यकी बाबत कुछ लिखनेकी ख्वाहिश होती है तो एक तरह अडचन ही अडचन है।

छोटपर छोटकी तरह गुलाम मुल्कोंकी बातोंपर सोचना और अडचन है। भगवान बचावे दूसरोंको गुलाम रखनेवालोंसे! इनमें अंग्रेजोंकी बात और है। सच पूछा जाय तो अंग्रेजोंकी बपौती है, ऐसा नहीं समझना चाहिए। इनकी नीति और रीति आदि रोमवालोंसे सीखीहुई है। जिसकी लाठी उसकी भैंसकी तरह आज अंग्रेज जहां कही जाते हैं, वहां अपना रंग जमानेकी कोशिश करते हैं। हिंदकी वह रौनक कहां गयी! हिंदवासियोंने मिस्रको अपनी ज्ञान-संपत्ति दी थी। उधर पश्चिममें फिर मिस्रने अपना रोब जमाया। फिर ग्रीसने मिस्रसे सब कुछ सीख लिया। बादको रोमकी बारी आई। अब आये अंग्रेज, जो रोमकी सारी बातें सीखकर आज दुनियाके सिर मौर बन बैठे हैं। वह हिंद, मिस्र, ग्रीस और रोम कहां? विधिकी गति न्यारी है। हिंदको अंग्रेजोंने तालवारसे जीता है या भस्मलगाकर, यह एक सवाल है। आज इस बातको समझनेकी कोशिश करनेवाला कौन है? हिंदवासियोंकी नौबत यहांतक होगयी है कि अंग्रेजोंकी देख-रेखमें लिखवाकर दीगयी चीजें पढी जाती हैं और यह समझाजाता है कि येही वेद हैं। इसीलिए हम अपने देशके प्राचीन नगरोंका नामतक भी समझने नहीं पाते। सिरसे पैरतक एक तरह हिंद

क्रिस्तान बनायागया है। एक मैसूर नामको लीजिये। यह पहलेका नाम नहीं। पहले मैसूरका नाम महिशाऊरु था। महिशका अर्थ भैसा और ऊरुका अर्थ गांव है। यह नाम ऐसा क्यों पड़ा है, इसकी एक कहानी है। बात यह थी कि आज भी मैसूरसे तीनमील दूरपर एक चामुण्डी पहाड है। इसपर एक बडा मंदिर है, जिसमें चामुण्डेश्वरीकी मूर्ति है। ऐसा कहा जाता है कि यहां पहले जमानेमें भैसेकी सूरतका एक राक्षस मारा गया। इसी लिये यह चामुण्डेश्वरी स्थित पर्वत—चामुण्डी पर्वत और उसके पास ही स्थित उस समयका गांव महिशाऊरु कहे जाते थे। आज इसका क्रिस्ता रूप मैसूर पडगया है। न मालूम, कबसे इस मंदिर में स्थित चामुण्डेश्वरी रोशनी में आयी, लेकिन आज तक यह मैसूरके राजाओंकी इष्ट देवता है। पहिलेसे आज तक मैसूरके महाराजा इस देवीके पूरे उपासक होते आ रहे हैं।

पहिलेसे मैसूर स्वतंत्र नहीं था। जब कि दक्षिणमें अशोकसे लेकर काकतीय, चोल, आंध्र और कर्नाटक आदि राजा शासक थे, तब तो यह एक अधीनस्थ गांव सा रहा: लेकिन सन १३९९ से मैसूरको राजनैतिक गौरव मिला, ऐसा मालूम होता है। इसकी वजह यह थी कि द्वारकाके दो यदुवंशी जवान भाई यदुराय उर्फ विजय और कृष्णराय अपनी तकदीर को जांचनेकेलिए घरसे बाहर निकल पडे। आखिरको वे दक्षिणमें आ पहुंचे। इधर, उधर सफर करते हुए वे मैसूरमें आये। इसके पहिले ही जमुना के किनारेके मथुराके राजा भूपके वंशज एक सुयदेवराय मैसुर में अपना एक छोटासा राज्य कायम कर चुके थे। यह पता नहीं कि यह राज्य कबसे चालू था। जो हो, उनके वंशज चामराय अपनी एकलौती लडकीको छोडकर चल बसे। इस राज्यकी एकलौती लडकीके साथ शादी करके राजा बननेके फेरमें उसराज्यका सिपहसलार मारनायक भागीरथ प्रयत्न कर रहा था, जो वह लडकी नहीं चाहती थी। इसी मौकेपर द्वारकावासी यदुवंशी बंधुद्वय मैसुरमें आ पहुंचे। बातकी बात

में वह दोनों मौकेको ताड गये और उन्होंने मारनायकका काम तमाम करडाला। मुसीबतों और अनाश्रयसे व्याकुल वह लडकी रक्षक यदुरायपर मुग्ध होगई। नसीबके फेरमें निकले हुए यदुराय कब इस मौकेको हाथसे जाने देनेवाले थे ! दोनोंकी शादी होगयी। बादको यदुरायने मैसुर राज्यकी पक्की नींव डाली।

मैसुर राज्यकी गाडी बेरोकटोक चलने लगी। मैसुरके नौवे राजा ओडयर अपने बुजर्गोंसे बहादुर निकले और उन्होंने मैसुर राज्यको और मजबूत बनाया। इस समय राज्यकी सीमायें बढाई गयी। राज्यके नीचे कई सामंतराजा होगये। कर्नल विलसनकी लेखनीसे यह पता लगता है कि राजा ओडयरने बागी राजाओंको दबाया और प्रजाको खुश रखा।

राजा ओडयरके बाद कंठीरव नरसराय ओडयरने अपनी बहादुरी से बीजापुरके खदुल्हाखांको हराकर श्रीरंगपट्टनको ले लिया। यही नहीं, उन्होने और छोटे-मोटे राजाओंको हराकर कितना ही माल कमाया और अपना सोनेका सिक्का भी चलाया।

राजा नरसरायके बाद दोड्डदेवराय राज्याधिकारी हुए। इनके समयतो कोई खास बात नहीं हुई, लेकिन खास तौरसे मैसुरकी इज्जत और बढ गयी। हां, इस समय आस पासके राजा मैसुरसे एक तरह खौफ खाते थे। जो हो, राजा नरसरायके पुत्र राजा चिक्कदेवराय ऐसे शूर निकले कि मैसुरका सूरज दुगुना होगया। जब कि मुसलमान और मराठे अपनी अपनी किस्मतका फैसला करनेपर तुले हुए थे; तब चिक्कदेवराय अपने राज्यकी रक्षा ही नहीं कर लेते थे ! बल्कि साथ ही साथ अपने राज्यकी आर्थिक दशा सुधार लेते थे। हां, शासनमें भी अनोखे सुधार किये गये। इससे यह कहा जा सकता है कि राजा चिक्कदेवराय बहादुर ही नहीं, बल्कि ऊंचे दर्जेके साहसी और राजनीतिज्ञ थे। इनमें और

औरंगजेबमें बडा मेल था। इनके समय 'अंच' के तौरपर डाककी व्यवस्था भी की गयी। राज्यको बढाना, राज्यकी आमदनी को ४० लाख तक बढ़ाना और उस वख्तके मुताबिक मजबूत और पसंदकी राज्य-व्यवस्थाको कायम करना, राजा चिक्कदेवरायका बडप्पन था। करीब ३३ साल तक राजा रहकर चिक्कदेवराय चल बसे। राजा चिकदेवरायके साथ मैसूरक सूरजपर बादल घिर गये। यह कहना ना मुनासिब नहीं कि मैसूरमें अंधेरा छा गया। एक तरफ मुसलमान और दूसरी तरफ मराठे अपनी अपनी ताकत तौल ही रहे थे कि फ्रेंच और अंग्रेज भी हिंदुस्थानमें आ पहुंचे। ऐसी खतरनाक हालतमें मैसुरके महाराजा दोड्डदेवराय ओडयर बिलकुल निकम्मे निकले। उनकी बडी गलती यह थी कि उन्होने दो 'कलार' जातिके नरसिंहराजय्या और देवराजय्याको क्रमश: सर्वाधिकारी और दलवाय [सेनापति] बनाया। इन दोनोंने छिपे छिपे महाराजाके खिलाफ षडजंत्र किया और नतीजतन राजगद्दीकी इज्जतमें भट्टा लग गया। इसबातसे मैसुर राज्य अब डूबे, तब डूबे की हालतमें रहगया।

मैसूरकी ऊपरी लिखी हुई हालतमें हैदरअली आ पहुंचे। हैदरअलीकी बाबत जुदे २ ख्यालात हैं। लेकिन मैसूरकी कागजातसे यह पता लगता है कि हैदरअलीके पिता कर्जदार होगये और मरगये। कर्जकी बुरी हालतसे हैदरअली और उनका भाई घबराये हुए थे। थी तो यह खतरनाक हालत, लेकिन हैदरअलीका चाचा मैसूरके महाराजाके एक सूबेदारके पास आया और उसने उससे हैदरअलीकी मुसीबतें बताई। अब सूबेदारने रहम खाकर हैदरअलीको नौकरीमें लेनेका और बदलेमें हैदरअलीका कर्ज चुकानेका वादा किया। आखिरको हैदरअली राज्यकी खिदमतमें लगगये। देवनहल्लीपर कब्जा करनेमें हैदरअलीकी बहादुरी मालूम होगयी। इसके बाद हैदराबादके नजरजंगने आर्काटपर चढाईकी तो मददमें मैसूरके महाराजाने सेना भेजी; जिसके हैदरअली सिपाहसलार थे।

इसमें भी हैदरअलीने बडी बहादुरी दिखाई। इस मददसे खुश होकर नजरजंगने हैदरअलीके साथ महाराजाके पास तेरह ऊंटोंसे ढोने भरकी अकबर मोहरें भेजी। हैदरअली इस धनके साथ राज्यमें वापस आये तो महाराजाने हैदरअलीको तीन ऊंट मोहरें भेटमें दी। इसके थोडे अर्सेके बाद मैसूरकी आर्थिक दशा खराब होगयी और सेनाका खर्चा निकलना भी दूभर था तो हैदरअलीने अपने पासके धनसे महाराजाको इस आफतसे बचाया। बहादुर और मौकेपर मददगार हैदरअलीसे महाराजा खुश होगये। इसका नतीजा यह हुआ कि हैदरअली राज्यका सिपहसालार बनायेगये और उनको बहादुर और नवाबके खिताब बख्शेगये। हैदरअली थे तो होशियार और बहादुर। अब उन्होने कई हिम्मतके काम कर दिखाये। इनमें मराठोंको हराना और आसपासके सामंतराजाओंको कब्जेमें कर लेना खास बातें थी। अबतो हैदरअली महाराजाके और प्रेमपात्र होगये, जिससे वह धीरे २ राज्यके सर्वाधिकारी होगये और महाराजा नाममात्रके रहगये।

हमने ऊपर लिखा ही है कि हिंदुस्थानमें अंग्रेज और फ्रेंच आगये। ये दोनो हिंदुस्थानकी आपसी फूटको समझगये और दोनों यहां अपनी २ सत्ता जमानेके फेरमें लगगये। हिंदुस्थानकी फूटसे हुई लडाइयोंमें दोनों अपने २ ढंगसे एक २ दलकी तरफदारी करनेलगे। हैदरअली फ्रेंच लोगोंका साथ देते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि हैदरअली सन १७६९ में अंग्रेजोंके खिलाफ भिडगये और उन्होने अंग्रेजोंको नीचा दिखाया। ऐसे ही फिर सन १७८१ और ८२ में भी हैदरअली अंग्रेजोंके खिलाफ लडे, लेकिन सन १७८२ की लडाईमें एकदम हैदरअली मरगये।

योंतो हैदरअली पढे-लिखे न थे। मुश्किलसे वह अपना नाम लिख लेते थे। आम तौरपर वह H ही लिखाकरते थे। हां, वह हिंदुस्थानी,

तेलुगु, कन्नडी, तामिल, और मराठी अच्छी तरह बोललेते थे। अपढ़ हुए तो क्या, उनमें बहादुरी और हिम्मत बेहद थी। वह इसी लियाकतपर उठे। वह पूरे घुडसवार और तलवारचलाऊ थे। अपढ तो थे, लेकिन आला दर्जेके समझदार, यादरखनेवाले, और राज्यके काम संभालने में काबिल थे। लडाकू होनेके कारण वह लडना ही राजनीति समझते थे। यह कहना बेजा नहीं कि लडाई ही उनकी जिन्दगी की खास चीज थी। एक इन्सान अकेला कहांतक कामयाब रहसकता है? हैदरअली हिंदु-मुसलमान राजाओं और नवाबोंकी ताकतपर खडे हुए अंग्रेजोंके मुकाबिलेमें कई बार भिडतो गये, लेकिन मौत ऐसी चीज है, जिससे भिडना मुश्किल है। बस, वह मौतसे हारगये, नकि अंग्रेज और उनके मददगारों से। सचमुच वह हिंद के चुने हुए वहादुर थे।

हैदरआलीके बाद टिप्पू अधिकारमें आगये। टिप्पू अपने बापके सच्चे लडके थे। वह भी अंग्रेजोंके दुश्मन बन गये। लेकिन खराब बात यह हुई कि वह राजवंशके भी दुश्तन होगये। बात यह थी कि अधिकारमें आते ही टिप्पू महाराजाको कुछ भी न समझने लगे। इसी समय महाराजा भी मरगये। अब याने सन १७९६ में महारानी लक्षम्मण्णीने अपने पुत्रको गद्दीपर बिठानेका विचार किया। लेकिन टिप्पू बीचमें आ पडे और उन्होंने राजकुमारको गद्दीपर बिठानेसे रोक दिया। इससे महारानी आग बबूला होगई और वह अंग्रेजोंकी शरणमें गयी। यह तो पाठक जानते ही हैं कि टिप्पू अंग्रेजोंके दुश्मन होचुके। अंग्रेज करिमस्तक पर जा बैठनेवाले शेरकी तरह मौकेके ताकमें बैठे ही थे कि महारानीका आश्रय देखकर वह खुश हुए और उन्होंने मौकेपर सन १७९९ में मराठों और नीजामकी मददसे टिप्पूको हरादिया। इसमें कौनबहादुर थे?

कोई दुनियामें सबको बराबर नहीं लगता। चाहे टिप्पू अपने बापकी तरह राजनीतिज्ञ, होशियार, और समझदार न रहे हो, लेकिन बहा-

दुरी और हिम्मतमें वह हैदरआलीके बच्चे थे। यह माननेकी बात है कि सिर्फ बहादुरी और हिम्मतकी ही नहीं, बल्कि राज्यके काममें और चीजों की भी जरूरत होती है। समझदारी, होशियारी, और राजनीतिज्ञताकी कमीसे टिप्पूने अपने घरमें ही दुश्मनी पैदा कर ली। उन्होंने समझा कि हिम्मत और बहादुरीसे सब कुछ होसकता है, लेकिन घरकी फूटने उनको गड्ढेमें ढकेलदिया। हां, वह हिंदू द्वेषी न थे। प्रजा उनसे खुश रही और वह बहादुर भी थे। लेकिन वह फोडनीतिमें स्वाहा होगये। यह कहना बेजा नहीं कि वह हिंदुस्थानकी गुलामीके पहले बलिदान थे।

यहां यह लिख देना काफी है कि महाराजा तृतीय कृष्णदेवराज ओडयर मैसूरके राज्यके अधिकारी होगये। इस समय महाराजा पांच सालके बालक थे।

न्यायका रंग

पेट भर खाना, बदन ढकने भरका कपडा, और गुजर-बसर करने भरकी झोपडी, येही इन्सानकी जरूरतें हैं। इनजरूरतोंको पूरा करनेके लिए इन्सानने खुदरतकी खिदमत की। खुदरत इतनी नरम है कि उसने इन्सानकी खिदमतसे खुश होकर यह असीस दिया कि हे बेटा! खुश रहो। यह हवा, पानी, पेड-पत्ते, पहाड, जमीन और जंगल वगैरह तुम्हारे लिए ही बनायेगये हैं। यहां रहो, खाओ-पीओ, और मौज करो। खाना, कपडा और बसनेकी जगह देनेके लिए जमीन मां खडी है। और बातोंके लिए जमीन, जंगल, नदियां, और पहाड वगैरह बनाये गये हैं। लेकिन खुदरतसे इतना पाकर भी इन्सान दुःखी क्यों है? खुदरतकी मेहरबानी पाकर प्राणी क्यों हाय २ कर रहा है? मुनि, ज्ञानि, फकीर, पण्डित, और मौल्वी सब कहते आरहे हैं कि खुदरतमें ऐसी

किसी चीजकी कमी नहीं, जिससे इन्सान रंजकर सकता हो। यह कौनसा गुनाह है, जिससे इन्सान नंगा, भूखा और कमजोर बनाहुआ है? दुनियाके बडे बडे विज्ञानी कहते हैं कि दुनियामें पैदा होनेवाली चीजोंको देखकर यह कभी नहीं कहा जासकता कि इन्सान दुःखी हो सकता हो। फिर यह सुननेमें क्यो आता है कि रोज लाखों आदमी भूखे मर रहे हैं? विज्ञानी और अर्थशास्त्रज्ञ, और राजनीतिज्ञ जलसोंमें नसीहत देते हैं, बयान निकालते हैं और बडी २ किताबें लिखते हैं, जिससे यह मालूम हो कि उनके बताये हुए रास्तोंपर चलनेसे इन्सान खुश रहेगा। बयानों, भाषणों और किताबोंको सब इकट्ठाकरलेंग तो एक पहाड बनेगा, लेकिन हुआ क्या? इन्सानका रोना कम हो रहा है?

यहां सर मिर्जा इस्मायलकी ये बातें मार्के की हैं। वह हैं:- "The forces of nature are enduring wealth of mankind. But the command of the forces of nature in the wrong hands can be turned from the highest purpose to the basest, most demonical uses" .... जैसे सर मिर्जा साहेबने कहा खुदरती ताकतोंका बुरे हाथोंमें पडना नहीं तो इन्सानके इस गमकी वजह और क्या है?

बेवकूफ इन्सान करे बेवकूफी और भगवान उबारे, यह कहांका इन्साफ है? बिगाडो तुम, बरबाद करो तुम, और यहांतक खुदरतसे बगावत करो तुम, खुदा, अल्ला, भगवान, और रामपर क्यों रोता है इन्सान!

खुदरतने रहम किया। इन्सान फूला-फला रहनेलगा। इससे वह फूल गया। इसीखुशीमें बेवकूफ इन्सान बगावत कर बैठा। उस बगावतका हदपार काम साम्राज्यकी ख्वाहिश है। इस ख्वाहिशके लिए इन्सानने क्या नहीं किया। किया हो; लेकिन हिंदू, तुरूष्क और रोमक साम्राज्य कहां? क्यों ये मिटगये?

हर एक चीजकी हद होती है। महल बनानेकी ख्वाहिश करना बुरा नहीं: लेकिन महलके बनानेमें लालचसे खराब जीजोंको लेकर नींव डालना बेवकूफी है। राष्ट्र भी घर है। जनताकी एकतापर राष्ट्र खडा रहता है। लेकिन राष्ट्रोंको बनानेमें और उनको साथ लेनेमें राष्ट्रोंके लोगोमें फूट, डाह और कमजोरी पैदाकरो, एक फिर्केसे दूसरे फिर्केको लडाने की बात पैदाकरो, और अलग २ फिर्कोंकी संस्कृति, धर्म और रीतिरिवाजपर पानी डालो तो क्या कही साम्राज्य रह सकते हैं? इसीलिए साम्राज्य ऐसे गिरगये कि अब उनका नामों-निशान तक नहीं रह गया—चाहे किताबों में उनकी सुंदर २ बातें मिलती हो। अब भी सही इन्सानको सोच समझकर चलना चाहिए कि नहीं?

सुजलां, सुफलां मलयज शीतलां, सस्य श्यामलां, सुखदां, त्रिंशत्कोटि भुजैद्दत करकरवाले यह था हिंद; लेकिन आपसी फूट और डाहसे हिंदवासी सल्तनतके लिए जंगली जानवर बनगये। अपने वतनका ख्याल भूलगये। एक ही मांईके लाल हिंदू और मुसलमान भाई चारे और इन्सानियतको भूलकर तलवारोंसे मिले। किसलिए? सिर्फ खुदरती देनोंको अपने २ कब्जेमें रखनेके लिए, लेकिन वे इस ख्वाहिशमें ऐसे गिरगये कि सल्तनतकी बात तो दूर, उलटे गुलाम होने और अपने मुल्क को गारत करनेपर तुल गये। हिंदकी ऐसी खतरनाक हालतमें हमारे मालिक अंग्रेज आ पहुंचे।

योंतो अंग्रेज यहां लडाई-फिसाद करके राज्य कमानेकी ख्वाहिशसे नहीं आये। आये थे सिर्फ तिजारत करनेके लिए। आप लोग जानते ही हैं कि हमारे राजा और नवाब कोई ज्योतिषी, वैद्य या पसंदकी मजेकी बात कहनेवाला कोई आया और उससे कुछ मन लगी बात कही गयी हो या काम किया गया हो तो वह खुश हुए और उन्होंने मन भर सोना और जमीनको लुटादिया। अंग्रेजोंको भी राजाओं और नवाबों द्वारा जमीनें

और तिजारत करनेकी सुबिधायें मिली। यह तो राजाओं और नवाबोंकी भलमनसाहतकी बात हुई। लेकिन अंग्रेज मेल-जोलसे अपना काम ही नहीं बनालेते थे और साथ ही साथ राजा और नवाबोंकी कमजोरियां भी समझलेते थे। यह तो खुली बात थी कि राजा और नवाबोंमें डाह घर कर गयी। ऐसी हालतमें 'आम का आम और गुठलीका दाम' के मुताबिक अंग्रेज यहां पैर जमनेके बाद यह ख्वाहिश लेकर आगे बढे कि राजा और नवाबोंकी कमजोरीकी आडमें अपनी सल्तनत क्यों कायम कर न लें! क्या अंग्रेजोंकी यह ख्वाहिश खराब थी? जब कि राजा और नवाबोंमें मेल न था और आपसमें लडते थे, ऐसी हालत में अंग्रेज —चाहे फौजी ताकतसे खारिज क्यों न हों - चतुराईसे राजा और नवाबोंकी ताकतपर अपना एक राज्य बनाने लगे तो हम अंग्रेजोंको क्यों बुरा समझें? इसमें बुराई हमारे राजा और नवाबोंकी थी, न कि अंग्रेजोंकी। 'मत्स्य न्याय' याने बडी मछलीके छोटी मछलीके खानेकी बातके जमानेमें ताकतवर कमजोरको दबाता है और अपना हक जमाता है तो इसमें अंग्रेजोंका गुनाह क्या था?

पाठकोंको मालूम ही है कि अंग्रेज यहां पहले पहल व्यापारके लिए आये थे। व्यापारियोंके पास सेना कहां? हां, थोडेमें धन था। यह तो मानी हुई बात है कि कहीं अपनी सत्ता जमालेनी है तो धनसे जनकी बडी जरूरत होती है। बिदेशी अंग्रेज जनके न होने पर भी हताश नहीं हुए। उसकी वजह यह थी कि वह यह खूब जान गये कि हिंदुस्थानमें एकता नहीं और राजा, महाराजा और नवाब भी पूरे भोगविलासी हैं। हिंदुस्थान की कमजोरी ही अंग्रेजोंके लिए किला बन गयी। इसकिलेमें बैठकर अंग्रेजोंने हिंदुस्थानकी आपसी फूटको और बढाया और ऊपरी हमदर्दी दिखा कर इने-गिने राजा और नवाबोंकी मेहरबानी पाई। हिंदुस्थानसे अनजान और फौजी ताकतसे खारिज अंग्रेज हिंद में कमजोर, एक दूसरेसे डाह रखने वाले राजा और नवाबोंको अपने कब्जेमें रखसके, जिससे दिन बदिन उनकी ताकत बढतीगयी। एक राजाको दूसरे राजासे भिडाकर

मुफ्तमें वह हिंदुस्थानमें अपने हकोंको जमासके। आपलोगोंको यह भी मालूम ही है कि अंग्रेज पहले-पहल दक्षिणमें आये। यहां उससमय मुसलमान नवाब और हिंदूराजा बहुत ठंडे पडगये। योंतो सारा हिंद भी ठंडा था। फिर भी दक्षिणमें भी अंग्रेजोंके रास्तेमें थोडी बहुत रुकावट आयी। यह कहना बेजा नहीं कि मैसूर अंग्रेजोंके सामने एक बलासा तय्यार होगया। जबतक यह बला टली नहीं, तबतक अंग्रेजोंका अस्तित्व ही ख्वाबकी बात सा दीखता था।

कुदरतकी खान हिंदमें दो चार रोटी कमानेके लिए अंग्रेज आये थे। लेकिन रूस्य श्यामला हिंदमाताको और हिंदमाताके कमजोर और मतलबी लालोंको देखकर कूटनीतिज्ञ अंग्रेज यहां सल्तनत कायम करनेकी ख्वाहिश लेकर आगे बढनो वह कैसे दोषी कहे जा सकते हैं जिसमें बल नहीं, जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता, वह भले ही यह कह सकता है कि अंग्रेजोंने चालबाजीसे इस हिंदको लेलिया है, नकि साहसी और शक्तिशाली मनुष्य। मैसूरके हैदरअली उस जमानेमें भी ऐसे निकले कि वह अंग्रेजोंके लिए बला होगया। हैदरअली थे तो अपढ; लेकिन वह बातकी बातमें यह समझगये कि कैसा भी हो अंग्रेजोंको हिंदमें पैर जमने ही नहीं देना चाहिए। फिर क्या था, हैदरअलीके शारीरक बल और अंग्रेजोंकी कूटनीतिमें जंग छिडगया। दक्षिणकेपेश्वा और हैदराबादके नवाबको साथ लेकर अंग्रेजोंने हैदरअलीपर हमला किया। फिर भी अकेले हैदरअलीने कई बार अंग्रेजोंका नाकों दम कर दिया, लेकिन अकेला कहां तक लड सकता था। जो हो, बुद्धिबलपर खडी हुई कूटनीति और फूट पैदाकर हासिल की गयी पेश्वा और हैदराबादकी ताकत दोनोंको लेकर अंग्रेजोंने लडाकू, बहादुर और आला दर्जेके राजनीतिज्ञ, किन्तु अकेले हैदरअलीको हरा दिया। अब अंग्रेजोंकी खुशीका पार नहीं रहा, लेकिन अपने बापके सच्चे लडके टिप्पूने हैदरअलीका रास्ता पकडा तो अंग्रेजोंके सामने फिर वही बला आखडी हुई। टिप्पू

तो बली थे, लेकिन टिप्पूकी नीतिने ही अंग्रेजोंके रास्तेको साफ किया। हां, टिप्पू तो बहादुर और जनताकी भलाई चाहनेवाले थे। यह मानना पडता है कि टिप्पू राजनीतिमें कच्चे थे। पाठकोंको मालूम ही है कि टिप्पूने पुराने हिंदूराजवंशके साथ बगावत की थी। इससे पुराने राजवंशकी माता महारानी लक्षम्मण्णी अंग्रेजोंके साथ मिलकर टिप्पूके खिलाफ काररवायी करनेलगी। इसके आलावा टिप्पूके मातहत अफसर टिप्पूके खिलाफ होगये। इस तरह घरमें फूट पैदा हुई। ऐसी हालतमें पेश्वा और नीजामकी ताकतपर खडे हुए अंग्रेजोंका रास्ता और साफ होगया। फिर भी टिप्पूने फ्रेंच लोगोंके साथ मिलकर अंग्रेजोंका विरोध किया। जो हो, आखिरको टिप्पूकी हार हुई और सारा मैसूर राज्य अंग्रेजोंके हाथमें आगया। लेकिन अंग्रेजोंके सामने अब यह सवाल उठ खडा हुआ कि मैसूरका राज्य किसको दिया जायं। माथा-पच्चीके बाद अंग्रेजोंने यह तै करलिया कि यह राज्य खानगी हिंदू राजावंशको ही मिलना ही मुनासिब है। इस पर मार्क्यूस वेलस्ली लिखते हैं .... इन्साफ और इन्सानियतके उसूलपर सोचा जांय तो जनताकी भलाईके लिए यह राज्य हिंदूराजवंशको ही सौंपना ठीक है ....। इस फैसलेपर आनेकी वजह सिर्फ यह थी कि अंग्रेज खास तौरसे इस बातसे डरगये कि अगर टिप्पूकी औलादको इसराज्यकी गद्दी दी जायगी तो कभी न कभी वह अपने बापकी तरह फ्रेंच लोगोंकी तरफदारी करेंगे। अंग्रेजोंका यह डर मार्क्यूस वेलस्लीकी चिट्टियोंसे साफ जाहिर होता है। जो हो, वेलस्लीने इन्साफ और इन्सानियतके लिए इस राज्यको हिंदूराजवंशजको सौंप दिया। क्या, सचमुच अंग्रेज इसराज्यको इन्साफ और इन्सानियतके लिए ही हिंदूराजवंशको दिया था ?

सन १७८८में अंग्रेजों और मैसूरके हिंदूराजवंशज बालक महाराजाकी तरफसे महारानी लक्षम्मण्णीके बीचमें दो समझोते हुए। एक राज्य

वापस करनेका और दूसरा राज्यके मिलनेसे सेना का खर्चा [Subsidy] भरनेका। इन दोनों समझौतोंके पूरा करनेके बाद सन १७९९ जूनको वंशपरंपरागत राजवंशज और महारानी लक्षम्मण्णीके पोते तृतीय कृष्णराज ओडयर राज्य-सिंहासनाधिकारी हुए।

तृतीय महाराजा कृष्णराज ओडयर सन १७९९ से १८६८ तक जिंदा रहे। सन १७९९ से १८३१ तक राज्यके पूरे हकदार थे। फिर सन १८३१ से १८६७ तक यह राज्य कमीशनरोंके अधीन किया गया—चाहे महाराज जिंदा रहे हो। अब यह सवाल उठता है कि जब अंग्रेजोंने इन्साफ और इन्सानियतके लिए मैसूर राज्यको सौंपदिया, तब सन १८३१ से १८६७ तक महाराजा तृतीय कृष्णराज ओडयरकी मौजूदगीमें यह राज्य क्यों कमीशनरोंके आधीन सौंप दिया गया ?

सन १७९९ से मैसूर राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पेनी द्वारा फिर हिंदू राजवंशजोंको मिलगया। इसका मतलब यह नहीं कि यह राज्य हिंदू राजवंशजोंका नहीं था और ईस्ट इण्डिया कम्पेनीने अपनी ताकतपर लड़कर इसराज्यको हिंदू राजवंशजोंको दिया था। सच्चीबात यह थी कि मैसूरके महाराजा द्वितीय कृष्णदेवराज ओडयरकी नर्मी, भलमनसाहत और लापरवाहीसे मैसूर राज्यपर हैदरअलीका हाथ लगगया और आखिरको टिप्पूके जमानेमें नौबत यहां तक आगयी कि हिंदू राजवंशज मैसूरके हकदार नहीं रह गये। ऐसी हालतमें अंग्रजोंने मैसूरके राजवंशजों और मैसूरके इने-गिने अधिकारियोंकी मदद या सलाह पाकर यह समझा कि इस मौकेपर टिप्पूको-जो अंग्रजोंके जानी दुश्मन होचुके—किसी तरह हराना ठीक है। इसके लिए अंग्रेजोंने पेश्वा और नीजामको किसी तरह अपने साथ कर लिया और टिप्पूको हरादिया। अब अंग्रेजोंने नीजामको समझाया और उनके साथ समझोता करलिया कि मैसूर राज्यको वंशपरंपरागत हिंदू राजवंशजोंको दे दिया जाय। इस समझौतेमें

यह साफ लिखागया कि जबतक सूरज और चांद रहेंगे, तबतक यह राज्य हिंदू राजवंशजोंके हाथमें रहेगा। इससे यह मालूम होता है कि नीजाम और अंग्रेजोंने मिलकर इस राज्यको हिंदू राजवंशजोंको दिया था। यह सन १७९९ की बात थी। लेकिन फिर सन १८३१ में अंग्रेजोंने रंगमें भंग करदिया याने मैसूरके महाराजा तृतीय कृष्णराज ओडयर राज्यके हकसे खारिज करदिये गये और यह राज्य कमीशनर के अधीन करदिया गया। यह ऐसा क्यों हुआ, इस बातपर गौर करनेके पहिले सन १७९९ से मैसूर राज्यकी बातोंको समझना जरूरी है। सन १७९९ से सन १८०४ तक राज्य की कुल आमदनी १,११,५४,३४८ पेगोडा थी। इसमेंसे २३,१८,५८३ पेगोडा राज्यकी व्यवस्थामें खर्च किया गया और २,३१,८८३ पेगोडा खजानेमें जमा किया गया। इस अर्सेमें याने पांच सालके अंदर सिर्फ खेतीकी तरक्कीके लिए ५१,३३९ पेगोडा खर्च किया गया। इसी तरह महाराजा तृतीय कृष्णराज ओडयरके जमानेमें सुरीतिसे राज्यकी व्यवस्था हुई। बराबर अंग्रेजों द्वार राज्यकी व्यवस्थाकी बडी तारीफ हुई। अपने राज्यकी व्यवस्थाको संभालते हुए, मैसूर राज्यने ईस्ट इण्डिया कम्पेनीकी जन और धनसे जो मदद की, इस बातपर गौर करनेसे यह कहना बेजा नहीं कि मैसूरकी मददसे ही दक्षिण हिन्दुस्थानमें अंग्रेजोंके पैर जम सके। एक तरफ अपने राज्यकी रक्षा, दूसीरी तरफ अंग्रेजोंके साथ हुई लडाइयोंमें की गयी मददसे मैसूर राज्यका बोझ दुगुना होगया। सन १७९९ से १८०९ तक मैसूर राज्यको अंग्रेजोंकी मददके लिए ८ बार धन और जनको देना पडा। कम्पेनीसे हक पानेके बादसे मैसूरके महाराजा एक तरफ प्रजा और दूसरी तरफ अंग्रेजोंके साथ कितने बफदार, काबिल और जनताकी भलाई चाहनेवाले रहे, इस बातपर नजर डालिएगा तो यह कहना पडेगा कि मैसूरके महाराजा कृष्णदेवराज ओडयरने अंग्रेजोंके साथ कोई नामुनासिब बात नहीं की। हम यहां यह लिख देना काफी समझते हैं कि राज्यमें अमन चैन पैदा करने, उस समयकी रूचिके अनुसार राज्यकी व्यवस्था करने, पिछली

लडाइयोंकी वजहसे हुए नुकसानोंको भरने, कम्पेनीको दीजानेवाली रकम को आदा करने और कम्पेनीके साथ होनेवाली लडाइयोंमें मैसूर राज्य लापरवाह नहीं था। हम यहां जनरल आर्थर वेलस्लीने सन १८०४ की १८ वी जुलाईको जो लिखा है, वह यहां देरहे हैं। वह इस तरह थाः- मालूम होता है कि राज्यकी आमदनी २४ लाख पगोडा है।............... इस आमदनीकी बढती नहरे खुदवाने, तालाब साफ कराने, सडकें और पुल बंधवाने और स्टेटकी और स्टेटके बाहरसे आयी हुई प्रजाको मुनासिब मदद देनेसे हुई है। ....जनताकी भलाईको चाहते और उसके लिए खर्च करते मैसूर स्टेटने कम्पेनीकी लडाइयोंमें भी बडी मदद की है।

सन १७९९ से १८३१ तक मैसूर राज्य फूला-फला रहा और उसकी व्यवस्थामें कोई तृटि न रहीं, इस बातका सबूत काफी है। न मालूम कि एकदम सन १८३१ में अंग्रेजोंको क्यों यह सूझा कि मैसूर राज्यको कमीशनरके अधीन कर देना मुनासिब है? इसके लिए अंग्रेजोंने दो वजहें बताई। एक वजह यह थी कि महाराजाकी तरफसे कम्पेनीको फौजी खर्चकी सूरतमें दीजानेवाली रकम (जो सन १७९९ के समझौतेके मुताबिक लागू है) बकाय पडी है। दूसरी वजह यह थी कि नगर नामक स्थानमें हुई बगावतको महाराजा दबा नहीं सके। अंग्रेजोंकी दोनो वजहें सिर्फ गलतफहमीसे पैदा हुई, यह बात आगे चलकर साबित हुई। लेकिन गलतफहमी या मतलब हो, अंग्रेजोंने यह ठहरा लिया कि मैसूर राज्य कमीशनरके अधीन कर दिया जाय, मौजूदा महाराजाको खर्च केलिए एक लाख पगोडा सालाना दिया जाय और नामके लिए महाराजा रहने दिया जाय।

यह तो मालूम ही है कि इस राज्यको वंशपरंपरागत राजवंशको सौंपते समय मक्वार्यूस वेलस्लीने यह कहा था कि इन्साफ और

इन्सानियतके लिए यह राज्य हिंदू राजवंशजोंको दिया जा रहा है और यह भी पाठकोंको मालूम है कि नीजाम और कंपेनीके साथ हुए समझौतेमें यह साफ लिखा गया है कि जबतक सूरज और चांद रहेंगे, तबतक यह राज्य हिंदूवंशके हाथमें रहेगा; लेकिन फिर राज्यको कमिशनरोंके अधीन कराते समय वह इन्साफ और इन्सानियत कहां गयी? इन्साफ और इन्सानियत मिटगयी हो; लेकिन नीजामसे पूछे ताछे बिना यह राज्य अंग्रेजोंने क्यों अपने कब्जेमें करलिया? हां, यह कहा जासकता है कि महाराजा राज्यको फायदेमें नहीं चला सके, कंपेनीको दीजानेवाली रकमको आदा न करसके और नगरमें हुई बगावत को दबा न सके; लेकिन इसमें महाराजा ही क्यों दोषी थे? ऐसी अनहोनी बातोंको होते हुए उस समयके रेसिडेंट कोले क्यों चुप रहे? कोले भी दोषी क्यों नहीं ठहराये गये? क्या, वफादार, प्रजावत्सल और देवभक्त महाराजाके साथ यह अन्याय नहीं था? इसमें न्याय की जगह स्वार्थका हाथ था, ऐसा कहा जासकता है।

इस बाबत बहुतसी तहकीकत हुई। उसतहकीकातसे यह मालूम हुआ कि कंपेनीकी लडाइयोंका खर्चा बढजानेसे, १८१५--१७ और १८२३--२४ के अकालोंमें करीब नब्बे लाखका खर्चा बढने, ५९,२७८ पेगोडा प्रजोपयोगी कामोंमें लगाने और धर्मावलंबी महाराजाके धार्मिक कामोंमें ज्यादह धन लगानेसे खजानेमें जमाकी हुई रकमके खर्च होनेके बाद भी जरूर स्टेट की आर्थिक दशा कुछ ढीली होगयी। नगरकी बगावतकी बात पहिली ही नहीं थी, बल्कि इसके पहिले भी ऐसी बगावतें हो चुकी थीं; जिनको महाराजाने दबाया और स्टेटमें शान्ति कायम की। नगरकी बगावतको दबानेमें देरी हुई हो, लेकिन महाराजा उससे लापरवाह नहीं रहे, इसका भी सबूत मिला।

अंग्रेजोंकी खूबी यह है कि जब वे एक काम करना चाहते हैं, तब एक कमेटी खडी करते हैं, जिसमें वह व्यक्ति रहेंगे, जो असली हालतसे नावाकिफ हो। उनकी कमिटियोंका मतलब वस्तुस्थितिको

आननेका न रहकर सिर्फ मतलबकी पूर्तिका होता है। ऐसी कमिटियोंकी मुखालिफत लाख कीजिए, लेकिन अंग्रेज इससे टससे मस नहीं होते। हां, जरूर वे झूटपर भी इन्साफका रंग लगा सकते हैं। क्या, यही कूटनीति (Deplomacy) है? किसीने ठीक कहा:-- The act of Concealing truth is Deplomacy याने सचाईको छिपाना ही कूटनीति है। जो हो, उस जमानेमें भी अंग्रेजोंने मैसूर राज्यपर फैसला-देनेके लिए एक कमिटी कायम की। इस कमिटिने यह फैसला देदिया कि महाराजा रेसिडेंटकी सलाहके मुताबिक नहीं चले। नतीजतन राज्य की आर्थिक व्यवस्था खराब होगयी और बगावत भी हुई। रेसिडेंटके बारेमें कमिटीने इशारा किया कि रेसिडेंट अपने फर्जको अदा नहीं कर सके। इस कमिटीके फैसलेपर लार्ड विलियम बेंटिकने यह हुकुम जारी किया कि मैसूर राज्य कमीशनरके अधीन कर दिया जाय। मैसूर राज्य कमीशनरोंके अधीन होगया और वफादार महाराजा राज्यके हकसे खारिज कर दिये गये। लेकिन यहांसे इंग्लेंड वापस जानेके बाद बेंटिकने अपनी करनीपर बेहद पछताया और यह साफ जाहिर किया कि यह बेहूदा काम उस समयकी मद्रास सर्कारकी बढा-चढाकर लिखी हुई बातोंपर किया गया। लार्ड बेंटिक यहीं तक चुप न रहे, बल्कि उन्होंने यह कहकर अपना प्रायश्चित कर लिया कि मैसूरके साथ किये गये अन्यायसे उसकी अंतरात्मापर बडा धक्का पहुंचा। फिर भी कम्पेनीके अधिकारी टससे मस नहीं हुए। नतीजतन मैसूरकी बेडी दिन ब दिन और मजबूत होती गयी। बस, महाराजा भरणपोषकमात्र रह गये। यह कहना बेजा नहीं कि सन १७९९ में जो इन्साफ और इन्सानियत थी, फिर सन १७३१ में महाराजाको राज्यके हकसे खारिज करना भी इन्साफ और इन्सानियत बन गया तो अंग्रेजोंकी इन्साफ और इन्सानियत क्या है?

टिप्पूकी औलाद राज्यके हकसे इसलिए खारिज की गयी कि वह उस बापके लडके थे जो अंग्रेजोंके दुश्मन फ्रेंच लोगोंके मददगार थे।

अंग्रेजोंने इन्साफ और इन्सानियतकेलिए मैसूर राज्यके हकदार ओडयरों-को सौंप दिया। शायद यह राज्य फिर इसलिए खींच लिया होगा कि इन्साफ और इन्सानियतकी हिफाजित हो! क्या, अंग्रेजोंकी राजनीतिकी तरह इन्साफ और इन्सानियत भी बदलती है? Every thing is fair in politics याने राजनीतिमें सब कुछ ठीक है, यह अंग्रेजोंकी राजनीतिका उसूल है। यह उनका उसूल होसकता है, लेकिन यह कदापि माना नहीं जा सकता कि अंग्रेज जो करते हैं, वह ठीक है। क्यों? अंग्रेजोंने अपने बूतेपर मैसूरको नहीं हासिल किया। इसमें नीजामका धन और जन गये। लेकिन नीजामसे पूछे ताछे बिना अंग्रेजोंने मैसूरको अपने कब्जेमें क्यों कर लिया? क्या, यही इन्साफ और इन्सानियत थी? सूरज और चांद टले नहीं: लेकिन जैसा मैसूर टल गया, उसी तरह अंग्रेजोंकी इन्साफ और इन्सानियत मिट गयी: लेकिन अंग्रेजोंका मददकर नीजाम कहां? अल्लाके बच्चे टिप्पूको अल्लाके बच्चे नीजामने हरा दिया, लेकिन मैसूर गया कमीशनरके हाथ!

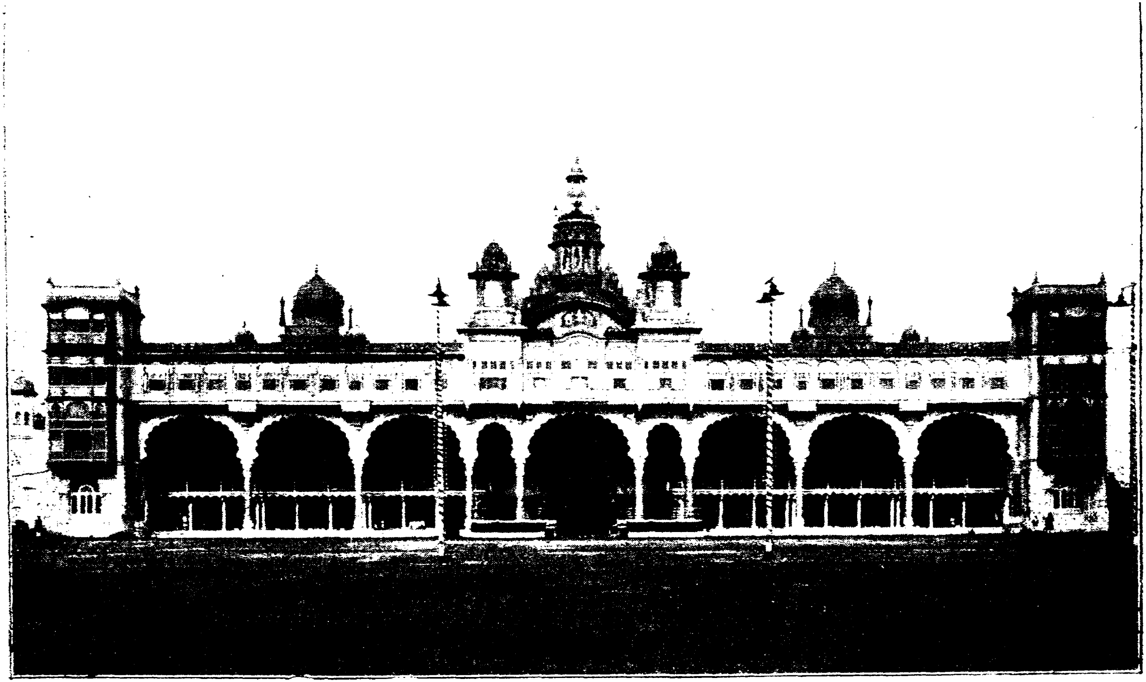
चोटपर ही चोट लगती है, यह सच्ची बात है। मैसूरके महाराजाका राज्य गया; लेकिन यह चोट कम हो, इस चोटपर और चोट लगे बिना मैसूर कांड समाप्त नहीं हुआ। पाठक जानतेही हैं कि लार्ड डेलहौसी एक वयसराय थे। वह अपने जमानेमें अपने कामसे जागजाहिर होगये। हिंदको देखते ही उनको देशी रियासतोंमें डाह पैदा हुई। आज तो देशी हिंदुस्थान और ब्रिटीश हिंदुस्थानका सवाल पेचीदा है। डेलहौसीने तो देशी राज्योंका हिंदुस्थान और ब्रिटिश हिंदुस्थानको मिलानेकी कोशिश की, उसकी इस नीतिका मतलब यह था कि ब्रिटीश इण्डियामें देशी राज्योंको मिलानेसे ब्रिटेनकी आमदनी और बढ जायगी। उस लार्ड साहबकी मेहरबानीसे अवध और झान्सी आदि देशी राज्य ब्रिटीश हिंदुस्थानमें मिलादिये गये। क्या, यह नीति खण्डित भारतको अखंण्डित बनानेके लिए ही अपनायी गयी? मतलब जो कुछ भी रहा हो, लेकिन उससमय इसनीतिसे हिंदुस्थानभरमें

होहल्ला मचगया। मैसूर तो एक तरह डूब ही गया, लेकिन यह कम हो, डेलहौसीकी नजरसे मैसूर बच नहीं सका। बात यह थी कि महाराजा तृतीय कृष्णराज ओडयर निसंतान थे। यों तो महाराजा राज्यके हकसे खारिज ही किये गये थे, लेकिन अंग्रेजोंने यह सोचा कि डेलहौसी तूफानमें मैसूरके महाराजाको बिलकुल ही क्यों न उडा दिये जायं? पहिले तो राज तलवारोंसे जीत लिये जाते थे; लेकिन अंग्रेजोंने यह तरकीब निकाली कि कलमसे भी राज मिटाये जासकते हैं। उनको हिंदुस्थान तलवारसे नही मिला। हां, देशी रियासतोंकी तलवार तो चली। जरा यहां अंग्रेजोंके पैर जमनेके बाद अंग्रेजोंने मैसूरकी तलवारोंको नंगा कर ही दिया। इसी लिए ही, बाकी देशी रियासतोंकी तरह मैसूरको भी कलमकी लकीर पर अंग्रेजोंने उडा देना चाहा। अब यहां कूटनीति और मैसूर महाराजाके आत्मबलमें जंग छिडगया। इसजंगमें ब्रिटेनकी कूटनीति हार गयी। नतीजतन मैसूर कमीशनरकी कैंचीसे ही नहीं; बल्कि डेलहौसी की आंचसे भी बचगया। सन १८६७ की २२ वी फरवरीको कामन्स सभामें यह फैसला हुआ कि मैसूरके हकदार महाराजा कृष्णराज ओडयर हैं और उनके बाद उनके दत्तपुत्र अधिकारी होंगे। इसका फल यह हुआ कि आज मैसूर हिंदमें एक देशी रियासतके तौरपर खडा है। यह आज देशी रियासतोंमें एक नहीं; बल्कि कई सूरतोंमें देशी रियासतोंका सिर माना जा रहा है। कई आफतों, अनगिनित झंझटों और खास तौरसे डेलहौसकी आंचसे बचकर नव मैसूर किस गतिसे बढता आरहा है, यह समझनेकी बात है। लार्ड डेलहौसीकी आंचमें यह झुलस गया होता तो यह किताबोंकी चीज होकर रह जाता; लेकिन बचगया। क्यों? क्या यह हिंदकी राष्ट्रिय जागृतिमें रामराज्य होकर रहेगा?

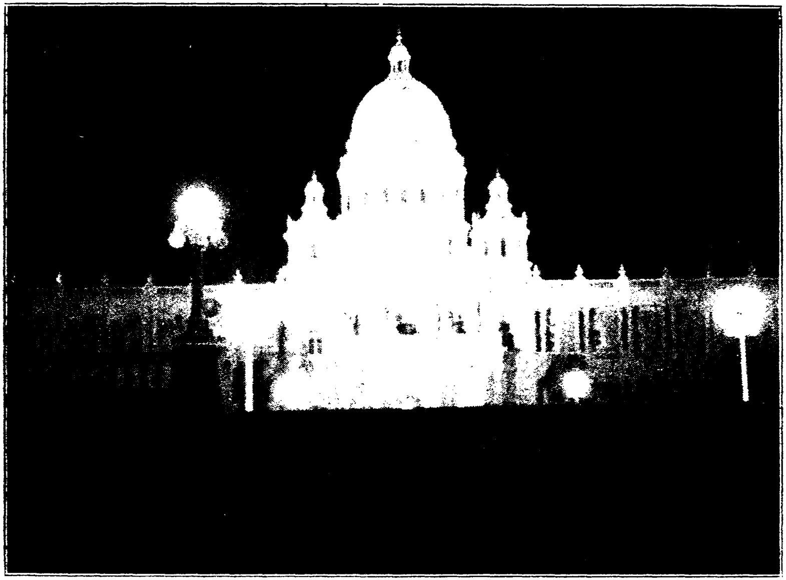
क्या, सचमुच मैसूर रामराज्य है?

नव मैसूर

राजनीतिमें अंग्रेज बेजोड हैं। फ्रांसवासी आला दर्जेके विज्ञानी होसकते हैं। जर्मनीके बाशिन्दे लडाकू होसकते हैं। रूसवासी हिम्मतवर होसकते हैं। लेकिन अंग्रेज राजनीतिमें अपना सानी नहीं रखते, यह यूरपीय तवारीखसे मालूम होता है। बडी आफतमें भी अंग्रेज दिलसे नहीं हारते। फौजी ताकतसे उन्हें अपनी चतुराईपर पूरा भरोसा है। वे मौकेके मुताबिक चाल चलते हैं। मामूली बातसे वह बडी बातको हल करलेते हैं। नामके लिए वह कभी अपनी जानको खतरेमें नहीं डालते, मर्दानगी दिखानेके लिए अपनी ताकतके बाहरका बोझ नहीं उठाते। आफत दीखीतो धीरजके साथ पीछे हटते हैं। वे जल्दीमें वादे नहीं करते। हां, मौका आपडा तो वादे भी करते हैं; लेकिन बचाव रखकर। मौका मिला तो वादे तोड देते हैं। हठमें वह एक ही हैं।



राजभवनका दृश्य



ललित महल

चाहिए उनको फायदेकी तिजारत। इसके लिए वह क्या नहीं करते? सारकी बात यह है कि कूटनीति उनके छटीके दूधमें मिली हुई है। यह उनका जिरह-बख्तर है। इसीके बलपर वह दुनियामें अपना एक साम्राज्य खडा करसके और दूसरे राष्ट्रोंपर अपना असर और बडप्पन कायम करसके। दुनियामें आज भी फ्रेंचभाषा अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक भाषा मानी जाती है; लेकिन फ्रांसवालोंमें कूटनीति कहां? सच बात यह है कि अंग्रेजी ही अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक भाषा है। यह मानना पडता है कि अंग्रेज अपनी कूटनीतिसे ही इस दुनियामें नामी होगये हैं।

यह माननेकी बात है कि अंग्रेजोंकी नीतिकी या उनकी जीतकी जड हिंदुस्थान है। यह अभागा देश अंग्रेजोंकी खुराक न बनता तो यह कहना दुस्तर है कि ब्रिटीश साम्राज्य इतना फूला-फला और नामी रहसकता। जो हो, हिंदुस्थानियोंके बुरे दिन कहिये या इनकी कमजोरी, आंग्रेज इसदेशके जन और धनको काममें लाकर विश्वव्यापी होगये हैं और उनकी नीति सफल हुई है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि कूटनीति याने सत्यसे दूर कूटनीति विजयी होकर रहेंगी। विजयकी बात तो भविष्य बतायगा; लेकिन हिंदुस्थानियोंको यह अच्छी तरह समझना चाहिये कि कूटनीतिकी वास्तविकता क्या है। जबतक यह हिन्दुस्थानी नहीं समझेंगे, तबतक हमारा ऐसा ख्याल है कि हिन्दुस्थानी छुटकारा नहीं पायंगे। इस नीतिका सच्चा रूप समझना है तो आसान नहीं। कारण कि इसकी सूरत इतनी बडी है, जिसतक विचार दौड ही नहीं सकता हां, इसका एक अंग देशी राज्योंमें है जहां, अंग्रेजोंकी कूटनीति चकाचौंध करनेके काम करती है।

हमारे पाठक यह तो समझही गये कि मैसूर राज्य फिर मूल वंशके परंपरागतोंके हाथमें आगया और उसके बाद फिर महाराजा तृतीय कृष्णराज ओडयर तक क्या बीता। लेकिन, पाठकोंको यह मालूम नहीं

कि सन १७९९ के समझौतेमें क्या लिखा गया। निचोडमें वह समझौता यह बताता है :— (१) मैसूर राज्य एक देशी राज्य है। (२) इसके महाराजा वह होंगे, जो पुराने राजवंशके वंशज हैं। (३) इसके महाराजा अपने राज्यकी व्यवस्था सम्बंधी वह काम करसकते हैं, जिनपर हिन्दुस्थानके वायसरायकी मंजूरी हो। दूसरा समझौता जो सेनाका खर्चा [Subsidy] भरनेका है, उसकी चौथी क्लाजमें यह लिखागया है कि जब कभी Subsidy की रकम अदा नहीं की जायगी तो कम्पेनीके अधिकारियोंको यह हक है कि वह यह रकम वसूल करनेका बन्दोबस्त करसकती है; लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उस रकमके लिए राज्य हडप लिया जासकता हैं। इसतरहके दोनों समझौतोंको आगेचलकर हमारे मालिक अंग्रेजोंने अपने बुजुर्ग वेलस्लीका भी ख्याल किये बिना यह अर्थ निकाला कि महाराजा सेनाका खर्चा (Subsidy) नहीं भरेंगे तो और महाराजा निस्संतान होंगे तो राज्य हडपलिया जासकता है।

जिसकी लाठी, उसकी भैंसके जमानेमें बलवानोंका कौन बिरोध करसकता है? अंग्रेज ठहरे मालिक और महाराजा कृष्णराज ओडयर ठहरे सेवक-चाहे वह राज्यके मूल अधिकारी क्यों न हो और कंपेनीकी लडाइयोंके सहायक। गोरोंने उलटा अर्थ निकाला तो कोई 'ना' नहीं कहसका। इस बाबत मोर्लेने यह सलाह दी कि दूध और शहदसे भरपूर याने समृद्धिशाली मैसूर राज्यके मोहमें पडकर साम्राज्यको खोना ठीक नहीं। और एक जगह वह अंग्रेजोंकी नीतिकी आलोचना करते लिखते हैं कि पहली बात यह है कि हिन्दू और मुसलमान जंगली और असभ्य नहीं। वह विचारवान हैं। उनके कानून हैं। वह अपनी नीति रखते हैं। उनकी संस्कृति और शिक्षा पुरानी है। वह अपने सामाजिक आचार-विचारोंको मानते हैं। लेकिन हम (अंग्रेज) उनकी अवहेलना कररहे हैं। उनको समझकर उनका आदर करना चाहिये, लेकिन उलटे हम ऐसा कररहे हैं, जिससे वह एक दिन बिगडकर हमारे ऊपर

हमला करेंगे। दूसरी बात यह है कि हम उन दोनों कौमोंके उन लोगोंको नीचा दिखारहे हैं, जो अपने अपने कौममें हैसियत रखते हैं और मौका आपड़ा तो अपना प्रभाव दिखासकते हैं। तीसरी बात यह है कि हम (अंग्रेज) उनशक्तियोंको, जो सचमुच बलवान हैं—बेकार समझते हैं, जिससे हम दोस्तोंके बिना होरहे हैं। इसतरहके कई अंग्रेजोंकी सलाह मानकर ब्रिटीश सरकारने आखिरको यह फैसला दिया कि मैसूर राज्य फिर पुराने वंशके महाराजा तृतीय कृष्णराज ओडयरको सौंपदिया जाय और महाराजाके दत्तपुत्र श्री चामराजेंद्र ओडयरको भावी महाराजा माने जाय।

आखिरको अंग्रेजोंने मैसूर राज्यके बारेमें अपनी हड़पनेकी नीतिको छोड़ तो दिया; लेकिन सबसे ताज्जुबकी बात जो उनलोगोंने की, वह यह कि उन्होंने मैसूरके साथ सन १८८१ में एक और समझौता करलिया है, जिससे यह जाहिर होता है कि सन १७९९ का समझौता रद्द ही होगया है। यह इस लिए कि सन १७९९ के समझौतेमें मैसूरके महाराजाका राज्यपर जो पूर्णाधिकार है, वह सन १८८१ के समझौतेसे रद्द होता है। कैसे? सन १८८१ के समझौतेकी दूसरी क्लाजमें यह साफ लिखागया है कि श्री महाराजा चामराजेंद्र ओडयर और वह जो उनके बाद उत्तराधिकारी होंगे तभी तक मैसूर राज्यको अपने कब्जेमें रखसकेंगे और शासन करसकेंगे जबतक वे समझौतेमें लिखेगये शर्तोंको अदाकरेंगे। इससे तो यह बात ही जाहिर हुई कि मैसूरके महाराजा समझौतेके शर्तोंके अदाकरनेपर ही राज्यके हकदार होंगे; लेकिन फिर सन १९१३ के समझौतेमें यह हक फिर इसतरह बदल दियागया कि मैसूरके महाराजाके पुत्र या वायसरायकी मंजूरीपर गोदलिये गये दत्तपुत्र तभी स्टेटके शासक होंगे जब उनकी काबिलियत वायसराय द्वारा मानी गयी हो। यह तो हुई हककी बात। इससे भी सन १८८१ के समझौतेसे जो ताज्जुबकी बात हुई वह यह थी कि सेनाका खर्चा

(Subsidy) ३५ लाख रूपया करदिया गया, जो सन १७९९ के खमझौतेकी रकमसे करीब साढेदस लाख ज्यादह है। पाठक जानते ही है कि सेनाका खर्चकी [Subsidy] रकम बकाय पडनेसेही मैसूर स्टेटपर आपत्ति आपड़ी थी। फिर उसी बोझदार रकमको बढानेका मतलब क्या है?

इस तरह हम मैसूर स्टे के साथ किये गये समझौतोंपर विचार करेंगे तो इसलिताबकी सूरत और बढ जायगी। लेकिन थोडेमें हम यह लिखदेना काफी समझते हैं कि मैसूर राज्यपर मैसूरके महाराजाओंसे ब्रिटीश सरकारका हाथ ऊंचा है। जो हो, इस तंग दायरेके अंदर मैसूरके महाराजाओंने अपने राज्यमें जो अनोखे काम करदिखाये हैं, उनको देखकर यह कहा जासकता है कि मैसूरके महाराजा नाममात्रके महाराजा ही नहीं; बल्कि आला दर्जेके प्रजा-हितू और आदर्श महाराजा हैं, जिनके बराबर राजाको हिन्दुस्थानमें और कहीं पाना दुस्तर है।

मैसूरकी प्रगति सन १८८१ से देखने और समझनेकी चीज है। क्रमोन्नतिपर आगे बढनेवाले नये मैसूरको साथ लेकर आगे बढनेवाले मैसूरके पहले महाराजा श्री चामराजेंद्र ओडयर थे। आपका शासनकाल सन १८८१ से शुरु होता है और अंत होता है सन १८९४ में। इस थोडे अर्सेमें महाराजा श्री चामराजेंद्र ओडयर सबसीडीका बोझ ढोते हुए [चाहें सबसीडी पांच सालके लिए साढेदस लाख कम कर दीगयी हो] इस राज्यकी ऐसी नींव डाली है, जिसका फूला-फला रूप आज हम देख रहे हैं। यह कहना नामुनासिब नहीं कि श्री महाराजा चामराजेंद्र ओडयर नव मैसूरके निर्माता थे। खेदकी बात यह है कि वह थोडी उमरमें ही चल बसे। यहां आपके बारेमें यह लिखदेना काफी है कि राज्य-व्यवस्था और राज्यकी सुविधाओंकी तरक्कीमें श्री चामराजेंद्र ओडयरने जो राह दिखाई है, उसीपर आजका मैसूर खडा है—चाहे क्रमोन्नतिमें और तरक्की हुई हो।

सन १८९५ से सन १९०२ तक यह राज्य महारानी कॆंपु नंजम्मणी अवरु वाणी विलास सन्निधानकी देख-रेखमें मैसूर राज्यकी व्यवस्था हुई। आप आजके मैसूरके महाराजाकी राजमाता थी। आजके महाराजा सिंहासनाधीन होनेतक महारानीने अच्छे ढंगसे राज्यकी व्यवस्था की थी।

सन १९०२ में आजके महाराजा श्री कृष्णराज ओडयर सिंहासनारूढ हुए। आप नव मैसूरके दूसरे महाराजा हैं।

आजके महाराजा

दुनियाकी नजर में मैसूरके महाराजा महाराजा चतुर्थ श्री कृष्णराज ओडयर हैं। लेकिन मैसूरकी प्रजाकी नजरमें आप राजर्षि हैं। मैसूरकी प्रजाके दिलमें महाराजाको वह स्थान प्राप्त हुआ है, जो स्थान इज्जत और मानको मिलसकता है। यह नहीं तो, मैसूरकी प्रजा महाराजाके दर्शन करनेके लिए क्यों भीड लग जाती है? अभी हालमें दशहराके अवसरपर हमें मैसूर जाना पडा। हमतो ज्यादहतर भीडमें जाया करते थे। वहां लोगोंकी महाराजाके प्रति भक्ति, आदर और पूज्य भाव देखकर, हमारे दिलमें यह भाव उठा कि यह प्रजा महाराजाको क्यों देवके समान देखती और पूजती है? समाधान तो हमें मिला नहीं: लेकिन बहुत पूछ-ताछ करनेपर यह मालूम हुआ कि महाराजाके सादा जीवन, निर्लिप्तता प्रजावत्सलता और निर्ममताने ही प्रजाको बांध लिया है।

प्रजाके भावमें अर्थ है। मैसूरके महाराजा शराबखोर और हवाखोर नहीं। परस्त्री-गमन उनसे कोसों दूर है। काम, क्रोध, मद, मत्सरसे दूर

रखनेवाली चीजोंसे भागे भागे फिरनेवाले इस महाराजाको प्रजा पूजती हैं तो प्रजाका कौनसा दोष है ?

प्रजाको चाहिये अन्न और कपडा। जहां इनचीजोंपर कहीं राजाकी तरफसे रोक पडती है तो प्रजा आप ही आप उठ खडी होती है और अर्थका अनर्थ कर डालती है। मैसूरके महाराजा दूरदृष्टि रखनेवाले हैं। उन्होंने पहले अपने जीवनको ऐसा बनालिया है कि फिर कहीं प्रजाके दिलमें यह भाव न उठे कि महाराजाके कर्मोंसे ही यह हमारी गति हुई है। दूसरी बात महाराजाने जो की है, वह यह है कि खेती-बारी और व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीमें कोई कसर नहीं छोड रखागया। अपने तंग दायरेमें कोई त्रुटि नहीं रखते हैं तो प्रजा क्यों महाराजाको बुरा समझे !

राज्यकी आमदनीमेंसे मोटी रकम महाराजा अपने लिए नहीं रखते। उनके निज खर्चकी रकम कौन्सिलमें पास की जाती है। कौन्सिलमें मंजूर हुई रकमके अलावा वह और एक पाईकी भी मांग नहीं करते। उनका खर्च भी है क्या ? पेटभरनेका खाना और शरीर ढकनेका कपडा। हां, बाहर दिखाऊके लिए वह कुछ अच्छे कपडे रखते हैं। यह तो ओहदेके बचावके लिए चाहिये भी। लेकिन और दर्बारोंके यहांका नाच-रंग और बोतल-खर्च बिलकुल नहीं। हां, जरूर संगीत, साहित्य और कलाके वह पूजारी हैं। पूजा-पाठमें भी उनको शौक है। वह धर्मावलंबी जरूर हैं, लेकिन उनका धर्म बहुरूपी द्वेषोंसे परे है।

मैसूरके महाराजाको राज्यकरते ३६ साल गुजेर हैं। इसअर्सेमें महाराजाने अपने राज्यकी जो उन्नति की है, उसपर मन लगानेसे यह जरूर कहना पडेगा कि वह और नहीं ; बल्कि मैसूर राज्य ही वह हैं।

युवराजा

महाराजा सर कंठीरव नरसिंहराज ओडयर मैसूरके महाराजाके भाई हैं। आपका अध्ययन किसी कालेजमें नहीं हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा प्राइवेट तौरपर हुई है। शौकसे नहीं; बल्कि विषय ग्रहणके लिए आपने विदेशोंमें खूब भ्रमण किया है। आप भी बडे परिश्रमी हैं। राज्यके कामोंमें आप भी दिलचस्पी लेते हैं। ऐसा मालूम होता है, आपको स्कौट, छोटे धन्धों और गरीबोंके घर बनवानेमें खास शौक है। ऐसा मालूम होता है कि खादीकी तरक्कीमें भी आप दिल लगाते हैं। ऐसा तो महाराजा और दिवान साहेब सर मिर्जा भी खादीमें शौक रखते हैं। हमारा ऐसा एतबार है कि युवराजा साहेबके उद्योगोंसे स्टेटके कामोंमे बहुत फायदा पहुंच रहा है।

राजकुमार

राजकुमार श्री जयचामराज ओडयर मैसूरके उत्तराधिकारी महाराज हैं। आप युवराजा याने महाराजाके भाईके पुत्र हैं। श्री महाराजाने आपको गोद लिया हैं। आपकी शिक्षा मैसूरके महाराजा कालेजमें हुई है। आप बी. ए हैं। शिक्षा आपकी मामूली लडकोंके साथ ही हुई है। आपको विलायतकी हवा नहीं लगी। हां, सन १९३१ में जापान हो आये हैं, ऐसा मामूल होता है, आपने इस दौरेमें जापानके व्यवसाय-धन्धोंका खूब अध्ययन किया है। अब आप स्टेटके कामोंको सीखनेमें तल्लीन हैं।

दिवान

एक तरफ कांग्रेसके पूजारी महात्मा और दूसरी तरफ ब्रिटेनके मठाधिपतियों और प्रतिक्रियावादी नरमदलके नेताओं द्वारा प्रशंसाकी मालायें प्राप्त मैसूरके दिवान सर मिर्जा इस्मायल हैं तो मैसूर राज्यके ही बासिन्दे; लेकिन आज वह दुनियाकी नजरमें हैं। हैं तो यह नरम और सीधे-सादे मिजाजके; लेकिन सूरत और अक्लसे वजनदार दीखते हैं। उनको यह बडप्पन क्यों मिला, इस बातपर सोचनेसे यह मालूम होता है कि सिर्फ लगन और अक्ल ही इसकी वजहें हैं। यह बात वहीं समझ सकता है, जिसे उनसे बात करनेका मौका मिला हो। जब वह बोलने लगते हैं या सोचते हैं तो उनकी भौंहें चढ जाती हैं। तब ऐसा मालूम होता है कि उनका सारा दिल मुंहपर झलक रहा है। सचमुच मुंह दिलका सीसा है या मुंहसे दिलकी बात जानी जासकती है की बात सच है, इसका सबूत देना है तो सर मिर्जका मुंह गवाह है। हमारे कहनेका मतलब यह है कि वह जो बोलते हैं, वह दिलसे बोलते हैं, नकि बाहरसे।

लेकिन बोलते समय उनकी भौंहोंका चढाव विचारकी रेखाकी सूरतमें बनकर उनके मुंहको भद्दा बनानेके बदले रोशनदार और सीधा-सादा बनाता है। ऐसे मुंह और मीठी और मानी रखनेवाली सर मिर्जाकी बात-चीतसे कोई नाखुश होता है तो हम समझते हैं कि वह और ढंगके आदमी हैं। उनका व्यक्तित्व उनके शरीरसे ऊंचा है।

सर मिर्जाका दिमाग कैसा है और वह कितने पहुंचे हुए आदमी हैं, इस बातको समझना है तो यह तब मुमकिन है, जब वह अपने मतलबको समझाते हैं और अपने मतलबकी रूप-रेखाको खींचते हैं

हमारा ऐसा विचार है कि उनकी इसीताकतने उनको जग-जाहिर बनाया है ।

किसी फ्रेंच कविने कहा कि किये गये सब कामोंको देखकर आदमी की परख नहीं की जाती; बल्कि उनमेंसे एकाध-काम ऐसा होता, जिससे आदमीकी परख होती है। ऐसे ही हम सर मिर्जाके सब कामोंको देख-कर उनको परख नहीं सकते। मैसूरके शहरोंको सुंदर बनाना और व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्की, यह दोनों ऐसे काम हैं, जिनसे सर मिर्जाकी परख होसकती है। हम हिन्दुस्थानमें कितने ही सालसे सुनते आरहे हैं और कितनी ही कमेटियोंकी रिपोर्टें पढते आरहे हैं, जिनसे यह पता लगता है कि हमारी ब्रिटीश सरकार व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीके लिए जीजानसे कोशिश कर रही है। लेकिन सर मिर्जाने १२ सालके अंदर व्यवसाय-धंधोंकी तरफ जो तरक्की की है, उसमेंसे क्या, चौथा हिस्सा ही सही ब्रिटीश सरकार कर दिखासकी ? सर मिर्जाकी इस कामकी अभी हालमें सर एम विश्वेश्वरय्याने बडी तारीफ की है। क्या, इसके लिए मिर्जा साहेब बधाईके काबिल नहीं ?

मिर्जाके स्टेट साम्यवादपर इधर, उधर हंसी ऊडाई जारही है। अगर कोई स्टेट साम्यवादकी बात न समझकर हंसी उडारहा है तो बुरी बात नहीं; लेकिन कोई स्टेट साम्वादको नहीं समझनेकी कोशिश करताहै और स्टेट साम्यवादकी दिल्लगी उडाता है तो जरूर बडी बुरी बात है। हम तो यह समझते हैं कि मिर्जा साहेब स्टेट साम्यवादकी तरफ जाकर बडा काम कर रहे हैं। अगर वह इस तरफ फुर्तीके साथ बढेंगे तो इस मैसूर राज्यको जापानके बराबर छोटे-मोटे व्यवसाय-धन्धोंसे समृद्धिशाली बनासकेंगे। अगर वह अपने समयमें ऐसा करही जायेंगे तो इससे बढकर और कोई बडी बात नहीं होगी।

दुनियामें कोई आदमी ऐसा नहीं, जो अपने कामोंसे सबको पसंद होते हो। ऐसे ही मिर्जा साहेबसे कुछ लोग नापसंद होते हैं तो, यह कोई बडी बात नहीं। फिर भी हम यह दावेके साथ कहसकते हैं कि उनमें ऐसे कुछ खास गुण हैं जिनके जाननेसे सारी दुनिया उनसे खुश होसकती है। पहली बात यह है कि वह पापसे डरते हैं। दुर्गुणोंमें खास शराब और परस्त्रीगमनके वह कट्टर दुश्मन हैं। यों तो वह बचपनसे नवाबीढंगसे लाले-पाले गये; लेकिन वह गरीबोंकी आहको समझते हैं। उनके यहां जैसे धनी या बडे आदमीकी पहुंच आसान है, वैसे ही गरीबकी भी। सबसे बडी बात उनमें जो देखनेमें आती है, वह उनका कोमल हृदय है। शायद इसीलिए हो कि सरस्वती और लक्ष्मी उनके यहां नतमस्तक हैं।

दुनियाकी नजरमें सर मिर्जा साहेब राजनीतिज्ञ और अन्तरराष्ट्रीय व्यक्ति, वक्ता, स्टेटसमन और योजनकर्ता हैं। उनकी भाषापर गौरकरनेसे यह कहना आसान है कि वह साहित्यकी पूरी जानकारी रखते हैं। साहित्य रससे ओत प्रोत उनका हृदय प्रेम और सौंदर्यकी खान होगया है। प्रेम और सौंदर्यकी सूरतें कई हैं। मानव इनको अपनानेमें बडी गलती करते हैं। लेकिन सर मिर्जाने प्रेमको लोक-सेवाके अर्थमें और सौंदर्यको शहर और गावोंको सुन्दर बनानेमें लेलिया है। इन दोनोंको इस व्यापक अर्थमें लेकर सर मिर्जाने जनताकी उत्पत्ति-शक्ति और जरूरतोंकी पूर्तिमें अपने दिमागको लगाया है। इसमें वह कहां तक कामयाब रहे, यह समझनेकी बात है, जो इस पुस्तकमें मिलेगी। आप बडे मेहनती हैं। सबेरेसे शामतक काम करते हैं। बेंगलूरमें रहतेसमय भी वह आराम नहीं लेते। मौका मिला तो गावोंका दौरा करते हैं। यह कहना बेजा नहीं कि सर मिर्जाके समय ही मैसूर राज्य "आदर्श राज्य" बनगया है। अब देखना यह है कि सर मिर्जाके समय मैसूर जवाबदारी सरकारका आदर्श राज्य होकर रहेगा।

मैसूरके महाराजा, मैसूरके युवराजा और मैसूरके दिवान तीनोंके जीवन चरित्र देनेके लिए यह हमारी किताब नहीं। यह सिर्फ मैसूरकी अंदरूनी बातोंपर रोशनी डालने केलिए ही है। लेकिन प्रसंग मैसूरका है, इसीलिए नवमैसूरके उक्त खास व्यक्तियोंका परिचय दिया गया है। अब आगे मैसूरकी प्रगति, जो इनतीनों द्वारा की गयी है, उसे समझना है। हमारा काम तो पाठकोंके सामने मैसूरकी बातोंको रखना ही है। इनपर फैसला देनेके पूरे हकदार पाठक ही हैं। हां, हमतो पाठकोंसे यही अपील करसकते हैं कि ब्रिटीश साम्राज्यके दबावमें रहकर मैसूरके आधार पुरुषोंने जो किया है, उसपर सदृष्टि डालेंगे और समझेंगे कि इसमें मैसूरके महाराजा किसकोटिके हैं और नव मैसूरका देशी राज्योंमें कौनसा स्थान है।

मैसूरकी राज्य-व्यवस्था

मेरी जिन्दगीकी यह ख्वाहिश है कि मेरे राज्यकी जनता अपने खास गुणोंको बढ़ालेंगे और देशके प्रगतिशील आंदोलनोंमें राह दिखाने-वालें होकर आगे रहेंगे। लेकिन यह याद रखना चाहिये कि पिछले जमानेके तजुर्बेपर ही आयन्देका रास्ता बनाया जासकता है। ऐसा मालूम होता है कि जल्दी ब्रिटीश हिन्दुस्थान और देशी राज्य मिलकर एक राष्ट्र होगा। इसका मतलब यह है कि हमारा राज्य हमारे महान राष्ट्रका एक हिस्सा होगा। इसके मानी यह है कि हमें ब्रिटीश हिन्दुस्थानकी जनताके साथ मिलकर सारे राष्ट्रकी तरक्कीमें हाथ बंटाना होगा। इसीलिए उसके पहले ही शिक्षा और आर्थिक दशामें हमें ऐसा तय्यार होकर रहना होगा, जिससे ब्रिटीश हिन्दुस्थानकी और दूसरे देशी राज्योंकी प्रजासे हम पीछे न रहें। .... हम तो धीरे धीरे चलरहे हैं; लेकिन अपनी



वृन्दावनका दृश्य



शिवसमुद्रका दृश्य

योजना और राज्य-व्यवस्थाको जरूरतों, ख्वाहिशों और मौकेके मुताबिक अपना रहे हैं। .... जनताका सुख सरकारका सुख और सरकारकी जड है .... ।

[मैसूरके महाराजाके एक भाषणसे]

" इन्सानकी बनायी गयी कोई संस्था गलतियोंसे बची नहीं होती और कोई नयी योजना बनाओ उसमेंसे गलतियां निकले बिना नहीं रहेगी " इस ऊंचे उसूलको मैसूरके महाराजाने एक जगह जाहिर किया है। यह उसूल ऐसा है, जिसकी सचाई हर एक आदमी महसूस करसकता है। आजतक दुनियामें कितनी ही संस्थायें खडी हुई और राष्ट्रोंने सोच-समझकर ही अपने लिए कितनी ही योजनायें बनायी; लेकिन उनमेंसे कौनसी लगातार टिकसकी? अगर हम खुदरतपर भी नजर डालेंगेतो यह मालूम होता है कि खुद खुदरतको भी अपनी रचना पसंद नहीं होती या यों कहना चाहिये कि वह भी अपनी रचनामें रद्दो-बदल करना चाहती है। तब खुदरतकी औलाद इन्सान अपनी बातोंमें हेर-फेर करता है तो, इसमें कौनसा गुनाह है? इसी लिए देशोंकी योजनायें एक तरह नहीं रहने पाते। अब कौनसी योजना इन्सानको चाहिये? हमारी समझमें यह बात आती है कि दुनियामें इसका जवाब कोई दे नहीं सकता। हां, समय और समयकी रुचि ही इसका जवाब दे सकती है।

आज हमारे देशमें योजनाके बारेमें तूफान सा चलरहा है। इस बाबत तूफानकी जरूरत नहीं; लेकिन परसत्ताकी वजहसे इस बातको लेकर देशमें बडी खलबली मची है। चाहिये तो इस तरफ तो जनताकी आवाजकी कद्र; लेकिन अपनी बात रखनेके लिए ब्रिटीश सरकार अपने ढंगपर देशका कानून बनाना चाहती है। लेकिन यहां ब्रिटेनका दाल गलने नहीं पाता और हिन्दुस्थानकी जनता यह अंडगा लगाकर बैठी है कि वह पूरी आजादीसे कम किसी योजनासे मजूर नहीं।

ऐसी बात है तो इधर देशी राज्योंमें जवाबदारी सरकारकी हवा चल गयी। ब्रिटीश हिन्दुस्थानकी मांग "स्वराज्य" का अर्थ यह है कि देशकी योजना बनायी जाय, देशकी जनता द्वारा और देशकी सब बातोंमें रहे, देशका ही हाथ, नकि पर देशवालोंका। देशी राज्योंकी मांग "जवाबदारी सरकार" का अर्थ यह है कि देशी राज्योंके कामोमें जनताका हाथ रहे; लेकिन इस मांगमें यह मानी नहीं कि देशी राज्योंके राजा और नवाब उडादिये जायं। ऐसी देशकी हालतमें हमारी समझमें मैसूरकी राज्य-व्यवस्थाका रूप समझना बेजा नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि मैसूरकी राज्य-व्यवस्था अच्छी है, ऐसा हम समझते हैं। जब कि मैसूरके महाराजाने खुद अपने राज्यकी व्यवस्थामें रद्दो-बदल करनेके विचारसे एक कमेटी कायम की है तो, हम यह क्यो लिखें कि यह राज्य-व्यवस्था सर्वोत्तम है? हां, दूसरे देशी राज्योंकी व्यवस्थासे मैसूरकी राज्य-व्यवस्था कई गुने अच्छी है, यह मानते हुए हम प्रसंग -वशात इसे भी जैसा का तैसा पाठकोंके सामने रखरहे हैं, जिससे और बातोंके साथ यह भी पाठकोंको मालूम हो। महात्मा द्वारा "रामराज्य है" ऐसा घोषित इस मैसूरकी व्यवस्थाको समझनेमें पाठकोंको फायदा ही होगा, यह भी हमारा एक ख्याल है।

दुनियाके बडे बडे लेखक राजनीतिके ज्ञाता और हिन्दुस्थानके प्रतिक्रियावादी नरमदलके नामी नेता मैसूरकी राज्य-व्यवस्थाकी तारीफ करते हैं। इसके अलावा हिन्दुस्थानके करीब २० राजकुमार मैसूर आकर मैसूरमें राज्य चलानेका काम सीखगये हैं। इनमें आजके नामी ट्रावनकूरके महाराजा और राजकोटके दर्बार भी हैं। इससे भी बडी बात यह है कि लार्ड सांकेने कहा कि मैसूर राज्यकी व्यवस्था-जिसके कर्णधार सर मिर्जा साहब हैं हिन्दुस्थानके लिए ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाको नकल करने लायक है। रौंडटेबिल कान्फरेन्सके अवसर पर ऐसी बात करनेवाले लार्ड सांकेकी बातोंमें गूढार्थ जरूर होना चाहिये

और इसपर भी पाठकोंका मन जाना जरूरी है। इसतरहकी तारीफ हासिल मैसूर स्टेटकी राज्य-व्यवस्थाका रूप समझकर कौन खुश नहीं होंगे?

इस स्टेटके महाराजा सर श्री कृष्णराज ओडयर बहादुर जी, सी, एस, ऐ, जी, बी, ई. हैं, जो अपने राज्यके शासनकर्ता हैं। आपके नीचे राजकी देख-रेख करनेकी एक कौंसील है, जिसमें दिवान और दो मेम्बर (Councillors) होते हैं। इस समयके दिवान अमीन-उल-मुल्क सर मिर्जा एम, इस्मायल के, सी, ऐ, ई; औ, बी, ई. हैं

यह स्टेट आठ जिलोंमें बंटा हुआ है। एकेक जिला फिर तालूकों और फिर्कोंमें बंटा हुआ है। हरेक जिला एक डिप्यूटी कमीशनरके अधीन है-जो जिला माजिस्टेट भी है। हरएक तालूका एक अमलदारके नीचे है। कही दो या कहीं तीन इस तरह हरेक जिलेमें असिस्टेंट कमीशनर भी हैं, जो जिला खजाना और रिविन्यू सबडिविजनोंकी देख-रेख करते हैं। सारे राज्यकी हाई कोर्ट बंगलोरमें है, जिसके तीन जज होते हैं। यह हाई कोर्ट ही स्टेटका सबसे ऊंचा न्याय विभाग है। चाहे मैसूर, राज्यका प्रधान नगर है; लेकिन बंगलूरमें ही खास दफतर होते हैं। महाराजा तो खास तौरसे मैसूरमें रहते हैं; लेकिन दिवानसे लेकर खास अफसर बंगलूरमें ही रहते हैं। इसी लिए हाईकोर्ट और सेक्रेटेट बंगलूरमें हैं। न्यायकी ठीक व्यवस्था करने केलिए सारा राज्य तीन सेशन हिस्सोंमें बंटागया है। इसके अलावा मुनिसिफ और सबमुनिसिफ कोर्टोंकी भी काफी व्यवस्था है।

यहां दो वैधानिक संस्थायें हैं। एक लेजिसलेटिव कौन्सिल; दूसरी रिप्रसेंटिटिव असेंबली हैं।

रिप्रसेंटिटिव असेंबली सन १८८१ में कायम की गयी है। लेकिन सन १९२३ में एक विशेष कमेटी द्वारा इससंस्थामें कई सुधार कियेगये हैं, जिससे इस संस्थाकी सदस्य संख्या २५० की गयी और सरकारके हाथमें यह हक है कि वह चाहे तो इस संख्याकी सख्याको २७५ तक बढासकती है। यह हक इस लिए है कि अगर किसी संस्था या जातिकी तरफसे कोइ मांग आयी हो और वह मुनासिब हो तो व्यवस्था की जासके। इससंस्थाके अध्यक्ष दिवान होते हैं और दोनों मेम्बर (Councillors) उपाध्यक्ष होते हैं। हां, स्टेटके खास अफसर भी इससंस्थामें मौजूद होते हैं, जिनको वोट देनेका अधिकार नहीं; बल्कि ये सिर्फ जरूरतपर जवाब देनेके लिए ही रहते हैं। इससंस्थाके दो अधिवेशन होते हैं। एक महाराजाके जन्मदिनके बाद और दूसरा दशहराके अवसरपर।

रिप्रेसेंटिटीव असेम्ब्लीमें प्रतिनिधियोंका काम अपने विचारोंको पेश करने भरका है। यहां कानून बनाये या रद्द नहीं किये जाते हैं। अगर मैसूर सरकार कोई बिल पास कराना चाहती है तो इसके लिए कौंसिल ही काबिल है। हां, उस बिलको पेश करनेके पहले सरकारकी तरफसे उसबिलके मूल सिद्धांत रिप्रेसेंटिटीव असेम्बीमें पेश किये जाते हैं और प्रतिनिधियोंकी उसके सम्बधकी विचारधारा जानी जाती है। हां, कोई प्रतिनिधि चाहे तो उस बिलमें संशोधन पेश करसकता है। लेकिन अंतमें असेम्बलीसे कौंसिलकी मंजूरी ही मानी जाती है। हां सरकार किसी तरहका कर लगाना या कर बढाना चाहती है तो वह, असेम्बलीकी सम्मति लिए बिना नहीं करसकती। सालानी बजट असेम्बलीके सामने पेश की जाती है और असेम्बलीमें उसपर चर्चा होती हैं; लेकिन उस बजटको मंजूर करनेका या नामंजूर करनेका हक कौंसिल को ही है। हां, असेम्बलीके प्रतिनिधियोंके विचारोंका आदर जरूर किया जाता है। जो हो, यह मानना पडता है कि रिप्रेसेंटिटिव असेम्बली प्रातिनिध्यकरनेकी जगह है और प्रतिनिधियोंको वहां बेरोकटोक बोलनेका

हक है; लेकिन सरकार इसलिए बाध्य नहीं कि वह असेम्बलीकी मांग मानले। हां, सरकार जरूर असेम्बलीकी विचार-धाराका आदर करती है।

यों तो लेजिसलेटिव कौंसिल सन १९०७ में कायम की गयी। फिर सन १९२३ की १९ वी धाराके मुताबिक सुधार की गयी है। इसकी प्रतिनिधि-संख्या ५० है। कौंसिलके दिवान अध्यक्ष और उपाध्यक्ष दोनों कौंसिलर होते हैं। ५० मेंसे २० आफसरी याने सरकार द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि होते हैं, बाकी ३० गैर सरकारी प्रतिनिधि होते हैं। इनमेंसे १६ एक जिलेके दोके हिसाबसे प्रजाद्वारा चुने हुए होते हैं। २ बंगलूर और मैसूर नगर म्युनिसिपालिटियों द्वारा चुने हुए होते हैं। १ मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा, १ व्यापारी क्षेत्रद्वारा, २ प्लांटरोंकी तरफसे चुने होते हैं। बाकी ८ प्रतिनिधियोंमेंसे १ मजूरोंकी तरफसे, १ सोनेकी खानोंकी तरफसे, १ हिन्दुस्थानी ईसाइयोंकी तरफसे, २ मुसलमानोंकी तरफसे और १ आदिकर्नाटकों या आदि द्राविडियोंकी तरफसे चुने हुए होते हैं। आदि कर्नाटकों और मजूरोंकी खास संस्थायें नहीं, इसलिए इनदोनोंके प्रतिनिधि उन-उन लोगोंकी सम्मतिपर नियोजित किये जाते हैं। इस तरहकी प्रतिनिधियोंकी संख्याको देखकर यह कहा जासकता है कि गैरसरकारी प्रतिनिधियोंका कौंसिलमें बहुमत होसकता है।

कौंसिलको स्टेटसम्बन्धी कानून-धारायें बनानेका हक है। स्टेटकी आय और व्ययका ब्यौरा दिखाकर कौंसिलमें ग्रांटके तौरपर मांग की जाती है, जिसपर कौंसिलको मंजूरी या नामंजूरी देनेका हक है। यहां प्रतिनिधि प्रस्ताव पेश कर सकते हैं और तरह तरहके सवाल करसकते हैं। यह कौंसिल सालमें दो बार बंगलूरमें बैठती है, जो जून और दिसेम्बरमें होता है।

लोकल सेल्फ सरकारकी मैसूर राज्यमें बडी अच्छी प्रगति हुई है। यहां ग्राम पंचायतें, म्युनिसपालिटियां और जिला बोर्ड तेजीके साथ काम कररहे हैं। स्थानिक-प्रजा-सरकारकी प्रगतिपर यह कहा जासकता है कि इनसे गावों और शहरोंका बहुत फायदा पहुंच रहा है। इन संस्थाओंकी तरफसे शिक्षा, आरोग्य और सफाई वगैरह बातोंमें बडा काम होरहा है, जिमें प्रजा और सरकारका सहयोग सराहने काबिल है।

किसी राज्यकी व्यवस्थाको समझाना है तो सिर्फ उस व्यवस्थाके आधारभूत मूल विधानको बतानेसे काम नहीं चलता। चाहिये तो यह है कि उसव्यवस्थाके अंतर्गत कानून-धाराओंपर भी रोशनी डाली जाय। मैसूरकी राज्य-व्यवस्थापर भी ऐसी रोशनी डालनेका हमारा भी विचार है; लेकिन किताबकी सूरत बढजानेके डरसे हम लाचार हैं। हां, हम यह उम्मेद रखते हैं कि हमने मैसूरकी राज्य-व्यवस्थाका जो वैधानिक रूप दिया है, उमसे हमारे पाठक यह समझसकेंगे कि इसमें त्रुटि क्या है और राज्य-व्यवस्था और प्रजामें मेल है या नहीं। आजकी प्रजाकी विचार-प्रगतिको देखकर यह नहीं कहाजासकता कि मैसूरकी राज्य-व्यवस्थामें कोई रद्दो-बदल नहीं होना चाहिये। हां, इतनातो कहा-जासकता है कि सारे देशी राज्योंकी राज्य-व्यवस्थाओंसे मैसूरकी राज्य-व्यवस्था सर्वोत्तम है और उसके साथ प्रजाका सम्बंध है। जो हो, हम अपने पाठकोंसे यह अपील करना चाहते हैं कि आप लोग दूसरे देशी राज्योंकी व्यवस्थाओंको सामने रखकर मैसूरकी राज्य-व्यवस्थाको तुलनात्मक दृष्टिसे देखेंगे और यह फैसला देंगे कि मैसूरकी राज्य-व्यवस्था अच्छी है या नहीं।

हमने इस परिच्छेदकी शुरुआतमें मैसूरके महाराजाके एक भाषणमेंसे थोडासा अंश उद्धृत किया है, जिससे यह मालूम होता है कि वह अपने राज्यकी योजना और राज्य-व्यवस्थाको जरूरतों,

ख्वाहिशों और मौकेके मुताबिक अपनाना चाहते हैं और उनकी यह भी ख्वाहिश है कि मैसूरकी प्रजा देशी राज्योंकी और ब्रिटीश हिन्दुस्थान की प्रजासे पिछा न रहे। ऐसे प्रजाहित् महाराजाका आदर्श है:— सत्यमेवोद्धरामयहं। सत्यका उद्धरण ही उसका आदर्श है तो यह कौन कहसकता है कि वह अपनी प्रजाकी रुचिके विरुद्ध अपनी राज्य-व्यवस्थाको चलायेंगे? हमारा तो ऐसा विश्वास है कि मैसूरके महाराजा दूरंदर्शी हैं। वह समयको परखते हैं। ऐसे ही उनके अनुकूल उनके दिवान सर मिर्जा साहेब भी हैं। इसीलिए सन १९३८ की १७ वीं मईको मैसूरके महाराजाने राज्य-व्यवस्थामें सुधार लानेके विचारसे एक कमेटी कायम की है। हम आशा करते हैं कि इस कमेटिका फैसला वह होगा, जो प्रजाको खुश रखसकेगा। कितना अच्छा हो कि मैसूरकी राज्य-व्यवस्था जवाबदारी सरकारमें बदल जाय और मैसूर आदर्श जवाबदारी सरकार हो।

मैसूरकी कृषि

हिन्दुस्थान फूला-फला देश है। यहांकी जमीन उपजाऊ है। यहांके जन मेहनती हैं। सन १९१४ की लड़ाई तक अंग्रेजोंको यह मालूम ही न था कि खेती-बारी देशका पहला रक्षण है। हिन्दुस्थानियोंने इस बातको जुगों पहले जानलिया है और जुगोंसे खेती-बारीपर ऐसा गुजर-बसर करते आरहे हैं कि हिन्दुस्थानमें यह बात जड़ पकड गयी कि कोई बगैर खूराख मरता नहीं। लेकिन आज यह बात देखनेमें आती है कि पलमें चार शख्स भूखे मररहे हैं। यहां खेतीकी कमी है, ऐसी बात नहीं। और यह पता लगता है कि हिन्दुस्थान भर जितना अनाज पैदा होता है, वह देशमें ही रखाजाय तो वह सारे देशकी जनताके लिए काफी ही नहीं; बल्कि और बचभी सकता है। लेकिन हिन्दुस्थानी क्यों भूखे मररहे हैं?

इस बातपर विचार करनेवाले हमारे नेताओंका कहना यह है कि देशकी गरीबीकी और गरीबीकी वजहसे मरनेवालोंकी गिन्तीकी वजह ब्रिटीश सरकार है। ब्रिटीश सरकार क्यों भला हमारे देशकी गरीबीकी वजह है ? बात यह है कि हमारे देशकी उत्पत्तिमेंसे करीब ४०० करोड रुपया इस देशसे विदेशमें जानेका रास्ता ब्रिटीश सरकारने खोलरखा है। ऐसा जब देशका धन बाहर जाता है तो देशके लोग गरीबीसे मरते हैं, तो कौनसा ताज्जुब है ?

ऐसी खतरनाक हालतसे देशको बचाना है तो एक ही इलाज है। वह इलाज आजादी है। आजादी इसलिए चाहिये कि हम अपने देशके धनको बचासके और देशकी प्रजाको सुखी बनासकें। आजादी नहीं तो हमें अपने दुःखों और सुखोंको समझनेका और उनको समझकर देशकी गति-विधिको चलानेका सुविधा हीं नहीं। इसीलिए आज हमारे देशमें आजादीकी गूंज हैं। इसमें हिन्दुस्थानियोंका दोष क्या है ?

देशी राज्य तो देखनेमें ब्रिटीश सरकारके नीचे हैं, ऐसी बात नहीं दीखती। हां, मोटी नजरसे देखाजाय तो ये देशी राज्य भी एक तरह ब्रिटीश सरकारके दबावमें हैं और यहां भी ब्रिटीश सरकारकी अर्थनीति गजबका काम कररही है। इसीलिए देशीराज्योंकी जनतापर भी गरीबीका पिशाच लगगया है। ब्रिटीश हिंदुस्थानमें तो एक ही रोग है: लेकिन देशी राज्योंमें दो हैं। एक ब्रिटीश सरकारका और दूसरा देशी राजाओंका। ब्रिटीश सरकार याने व्यापारी सरकार देशी राज्योंसे व्यापार और सबसीडी दोनोंरूपोंसे देशी राज्योंका धन खींचती है और देशी राजा और नवाब अपने रंग-नाच और मौजकेलिए अपने राज्यकी प्रजाको चूसते हैं; इसतरह दोनों तरह चूसाजाकर देशी राज्योंकी प्रजा भी बहुत सतायी जारही है। इसीलिए वहांकी जनता भी आज सचेत हैं और यह चाहरही है कि वह भी अपने राज्यकी बातोंमें अपना हाथ रखें।

इसका मतलब यह है कि वह अपने राज्यकी आय और व्ययपर अपना हक चाहती है और अपने राज्यकी उन्नति।

देशकी ऐसी हालतमें आज देशी राज्योंके बारेमें बहुत सोचा और समझा जारहा है। इसीलिए हम अपने पाठकोंके सामने मैसूरकी कृषिकी उन्नतिका रूप पेश करना चाहते हैं। इसतरफ मैसूरी सरकार अपनी प्रजाका भला कहां तक कररही है, यह समझना बेजा नहीं। हां, इस बातको समझनेके पहले पाठकोंको यह भी समझना जरूरी है कि मैसूर पर ब्रिटीश सरकारकी तरफसे कोई बोझ हैं या नहीं। पाठकोंको मालूम ही है कि सन १८८१ में ब्रिटीश सरकारने मैसूरके साथ एक समझौता करलिया है। इस समझौतेसे मैसूर राज्यको ब्रिटीश सरकारकेलिए ३५ लाख रूपयेकी सबसीडी देनी पडती है। हां. इसमेंसे साढे दस लाख सन १९३२ में कम करदिया गया है। अब मैसूरसे ब्रिटीश सरकारको चाढे चौबीस लाख मिलता है, जो सन १७९९ के समझौतेकी रकमके बराबर है। इसी रकमके बारेमें बोलते हुए मोर्लेने कहा कि मैसूरकी सबसीडीकी रकम सारे देशी राज्योंकी तरफसे मिलनेवाली रकममें आधी है। ऐसी बोझदार और बेइन्साफ रकमको अदा करना पडता है, मैसूरको। इसके अलावा मैसूर सरकार अपने डाककी व्यवस्था करके फायदा नहीं उठासकती। मैसूर राज्य अपना सिक्का नहीं चला सकता। यहां ब्रिटीश सरकारका सिक्का ही चलता है। मैसूर राज्यमें तारके बंदोबस्तके लिए मैसूर राज्यको जमीन मुफ्तमें देनी है; लेकिन तारकी आमदनी मैसूर राज्यको नहीं। ऐसी आमदनियोंसे खारिज मैसूर राज्यकी कुल आमदनी करीब चार करोड है। अंदाजन मैसूरकी जनताकी कुल आमदनी ४० करोड होसकती है याने राज्यके एक शख्सकी सालाना आमदनी ६८) है।

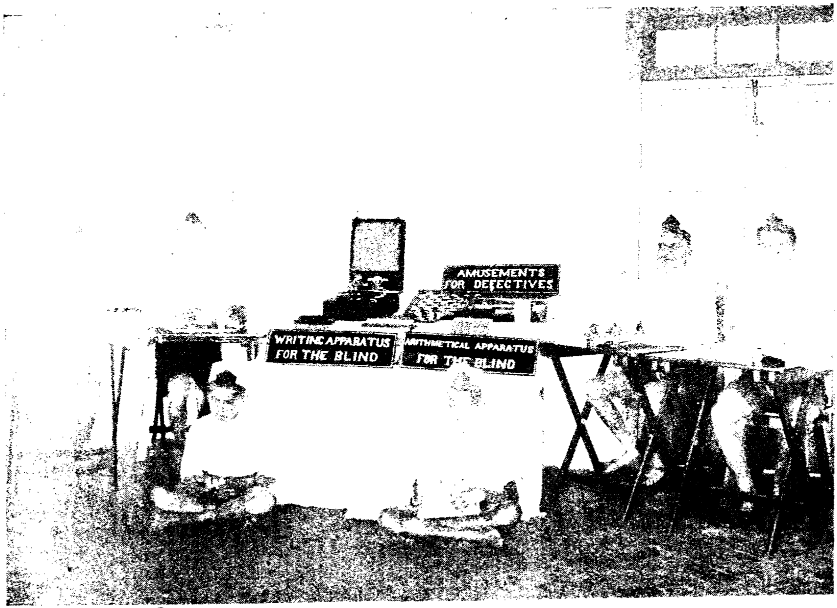
इस राज्यके खास व्यवसाय खेतीबारी, खनिजोंको निकालना, व्यवसाय-धन्धे, व्यापार, सेनामें भर्ती होना और नौकरी करना हैं। इस

हजारमेंसे ४५५४ जन मजदूर होते हैं। इनमजूरोंमेंसे ३४७४ खेतीबारीमें और ३५९ व्यवसाय-धन्धोंमें काम करते हैं।

खेतीबारीको ही प्रधान व्यवसाय मानना चाहिये या व्यवसाय धन्धोंकी तरफ प्रगति करनी चाहिये, यह एक सवाल है। इस तरफ थोडे अर्सेतक कोई फैसला नहीं होसका। अभी हालमें कांग्रेसने यह तय करलिया है कि व्यवसाय धन्धोंकी तरफ भी खेतीके साथ तरक्की होनी चाहिये और नतीजतन कांग्रेसने इसकामके लिए एक कमेटीभी कायम की है। जो हो, मैसूर सरकार इस तरफ अंधी न रही। उसने कांग्रेससे पहिले ही यह तय करलिया कि व्यवसाय धन्धोंकी तरक्की किये बिना देशकी प्रगति नही हो सकती। इस दूर दृष्टि मैसूरने व्यवसाय धन्धोंकी जो उन्नति की है, उसपर विचार करनेके पहले हम यह अच्छा समझते हैं कि मैसूरकी खेतीबारीकी प्रगतिपर रोशनी डाली जाय।

पाठकोंको पिछले पृष्ठ पढ़ लेनेसे यह मालूम हुआ कि मैसूरकी जमीन उपजाऊ है और यहांकी आब-हवा बहुत अनुकूल है। इसीलिए यहांकी जमीनमें ऐसी कोई चीज नहीं, जो अच्छी तरह उग नहीं सकती हो। यहांकी खास उपज धान, रागी, ज्वार, अरहर, चना, मूंगी फल, तिल, रेंडी और काली मिर्ची वगैरह हैं। ऊंख यहांकी खास उपज है, जो मालोमाल करदेता है। तंबाकू, मिर्चा और कई तरहकी बगीचोंमें पैदाहोनेवाली चीजें भी यहां होती हैं। सुपारी, लवंग और काफी, नारियल, रूई और मलबरी (Mulberry) यहांकी खास जगहोंमें बडे तादादमें होनेवाली उपजें हैं। मलबरी यहां की खास चीज है, जिससे रेशमकी उत्पत्तिमें बडा फायदा होता है। Horticultural Department के कारण मैसूरमें फलोंकी उत्पत्तिमें बडी प्रगति हुई है, जिससे यह कहाजासकता है कि फलोंकी उत्पत्तिसे मैसूरकी आर्थिक दशामें बडा फायदा होता है।

मैसूरका कृषि विभाग (Department of Agriculture) हिंदुस्थान भरमें एक ही उत्तम विभाग है। ऐसा तो इस किभागका जन्म हुए कई साल हो चुके: लेकिन सन १९१४ से यह विभाग डा. कोलमनकी देख-रेखमें बहुत कामकी चीज बनगया है। इस विभाग द्वारा मैसूरकी खेतीबारीमें जो अनोखे सुधार लाये गये हैं, उनको समझना सचमुच जरूरी है। ज्यादहतर मैसूर राज्यमें खेतीबारीमें पुराने औजार ही काममें लाये जाते हैं। लेकिन जमीनकी उत्पत्तिशक्ति बढानेके लिए नये ढंग काममे लाना जरूरी है। मैसूरके कृषि-विभाग और कोलार [एक जिला] मिशन संस्थाने दो जुदे जुदे हल निकाले हैं, जिनसे खेतीबारीमें बहुत तरक्की की गयी है। मैसूरके रय्यतोंने इन नये हलोंकी महत्ताको समझा और नतीजतन दस हाजार हल स्टेटमें चालू हैं। हां, यह तो मानना ही पडता है कि इन हलोंका दाम पुराने हलोंसे कई गुने ज्यादह है। इसी लिए मैसूर राज्यमें अब भी करीब आठ लाख पुराने हल काममें लाये जाते हैं। यह तो हलकी बात हुई। कुए खुदवाने, पंप और मिशीन लगवानेमें मैसूर सरकारकी तरफसे खास इन्तजाम है। इसके लिए स्टेटकी तरफसे रय्यतोंको कर्ज दिया जाता है। कोई चाहे तो पंप या मिशीन उधारपर लेसकता है और उधारको महीने या दो महीनेकी मुहलतपर चुकासकता है। जहां बिजली चालू है या जहां बिजली पहुंचानेका सुभीता है, वहां बिजली द्वारा पंप और मिशीन काममें लाये जाते हैं। ऐसे और दूसरे कई उपायोंसे मैसूरके कृषिविभागकी तरफसे यह कोशिश रहती है, जिससे उपजकी तरक्की हो। स्टेटकी खास उपज और जनताकी खास खूराख रागीकी विशेष उत्पत्तिके लिए मैसूरमें अनोखे खोज-ताज होते हैं। इस तरफ यह लिखना बेजा नहीं कि वैज्ञानिक खोज-ताजमें बहुत पैसा खर्च किया जाता है। रागीकी उपजको बढानेके लिए, अब करीब एक लाख एकडोंमें नयेढंगके रागीके बीज काममे लाये गये हैं। फलतः रागीकी उत्पत्ति २५ फीसदी बढगयी है। ऐसे ही रूईके लिए भी खोज-ताज


AMUSEMENTS
FOR DEFECTIVES
WRITING APPARATUS
FOR THE BLIND
ARITHMETICAL APPARATUS

अंधोंकी शिक्षा



अमृतमहलके पशु

हुआ है। अब मैसूरमें नयी रुईकी उपज है, जिसमें बीज बहुत होते हैं और रुई बहुत सफेद होती है। अब मैसूरमें यही रुई पैदा की जाती है। हमने ऊपर लिखा ही है कि ऊंख ज्यादह रूपया देनेवाली उपज है। इसीलिए इधर भी सरकारकी काफी नजर है। इसीलिए टिप्पूके जमानेमें चलू की गयी पटापटीकी (ऊंख) बडी तरक्की होरही है। जगहके गुणके अनुसार खेतीबारीमें नये तरीके अपनाने पडते हैं। इसीलिए अब तक इधर जो तरीके काममे लाये जाते हैं या उनको अपनानेमें कोशिश होती है, उनमें देरी होती है; लेकिन यह मानना पडता है कि नये ढंगोंको अपनानेमें हिचकिचानेवाले देशमें यह देरी क्षम्य है।

खेतीबारीकी तरक्की करना अच्छा है। इसतरफ सरकारकी मददके बिना काम नहीं चलसकता। ऐसी मदद मिलनेपर भी दैवीय कोपसे बचना मुश्किल है। दैवीय कोपसे हमारा मतलब बीमारियोंसे है। मैसूरकी कृषि इन बीमारियोंसे बची नहीं। मैसूर सरकारकी तरफसे इधर भी बडा इन्तजाम रहता है, जिससे बीमारियां दूर हो।

मैसूरमें पशुओंकी कमी नहीं। गाय और बैल यहांके सुन्दर और मजबूत होते हैं। इनकी देख रेख भी यहां अच्छी होती है। मैसूरके महाराजाओंकी तरफसे इसतरफ बडा अच्छा इन्तजाम होता आरहा है। मैसूरके अमृतमहल या पशुपोषक विभाग बडे अच्छे हैं। इस विभागकी तरफसे पशुओंकी देख-रेखका ख्याल किया जाता है। इसलिए मैसूरके पशुओंकी दक्षिण हिंदुस्थानमें ही नहीं; बल्कि सिलोन, जावा और मलया द्वीपोंमें भी अच्छी मांग है। पहले तो यह था कि मैसूर राज्यको पशुओंद्वारा बाहरसे सालाना २५ से ३० लाख तक आमदनी होती थी। अब मोटरगाडी, बस और मशीनके कारण यह आमदनी कम होगयी है। जो हो, मैसूर और मैसूरके आसपास दक्षिण भारतमें आज भी मैसूरके पशुओंकी काफी मांग है। मैसूरकी गायें, भैंसें, भैंसे, बैल, बकरे, बकरियां वगैरह

ढोरोंसे मैसूर राज्य बहुत समृद्धशाली है। आज मैसूरके पशु खेतीबारीमें बहुत काम आरहे हैं। मैसूरके किसान पशुओंसे काम लेते हैं और पशुओंके दूधसे काफी कमालेते हैं।

खेतीबारीमें अनोखे सुधार लाये जासकते हैं; लेकिन इसकेलिए धन और मनकी जरूरत है। सामूहिक रूपसे किसी देशमें देशकी आर्थिक दशाको सुधारना है तो पहले उसदेशकी खास उत्पत्तिशक्तिको बढाना चाहिये। कूपस्थ मंडूककी तरह सोचनेसे या लकीरके फकीरकी तरह बैठनेसे उत्पत्तिशक्ति बढ नहीं सकती। इसकेलिए काममें लाये जानेवाले औजारों, खाद और बीजोंमें सुधार करना पडता है और इसके लिए धन और मन लगाकर काम नहीं किया जाता है तो उत्पत्ति-शक्तिको बढाना नामुमकिन है। यह नहीं तो देशकी उन्नतिका ख्याल करना भी फिजूल है। ऐसे काम देशकी सरकारकी सहायताके बिना नामुमकिन है। ऐसी बातोंमें मैसूर सरकार कभी पीछा न रही, ऐसा कहाजासकता है। इस बातको समझना है तो हमे सन १८०० में डा. बुचानन द्वारा लिखी गयी पुस्तकको पढना चाहिये। आपने अपनी किताबमें मैसूरकी कास्तकारी, हुनर और व्यवसाय-धन्धों पर रोशनी डाली है। उससे मालूम होता है कि मैसूर इन बातोंमें बहुत पीछा रहा। लेकिन आज हम उनबातोंको सामने रखकर सोचेंगे तो यह कहना पडेगा कि मैसूरके महाराजाओंने सब बातोंमें क्रांति पैदाकी है। पहली बात कास्तकारीमें काममे लाये जानेवाले हलमें और पानी चालूकरानेके साधनोंमें ऐसा परिवर्तन कियागया है कि आज पहलेसे काम जल्दी होरहा है और पहलेकी उत्पत्तिसे आजकी उत्पत्ति दुगुनी होगयी है। दूसरी बात ऊंखकी उपजमें और ऊंखसे गुड निकालनेके औजारमें ऐसे सुधार किये गये, जिससे अच्छा ऊंख पैदा होने लगा और गुड ज्यादा निकलने लगा, और साथ ही साथ किसानकी आमदनी भी बढनेलगी। तीसरी बात Mulberry मैसूरके लिए अनजान चीज थी। पहले टिप्पूने

इसको मैसूरमें दाखिल कराया था। तब तो यह शौककी चीज थी। लेकिन आज मलबरीकी वजहसे मैसूरके जुलाहोंका काम ही नहीं बढगया; बल्कि रेशम मैसूरका खास व्यवसाय होगया है। यह पता लगता है कि आज मैसूरमें सालाना एक करोड रूपयेका रेशम पैदा किया जाता है। चौथी बात काफीका बीज अरबसे मंगाया गया। आज तो मैसूर काफीमें इतना फूला-फला है कि देशी और विदेशी व्यापारी मैसूरी काफीसे तगडे होरहे हैं। पांचवी बात मूंगफली भी मैसूरकी चीज न थी। लेकिन आज मूंगफलीसे मैसूर भरगया है। डा. बचानन तो इसे तब समझते हीं न थे; लेकिन आज मूंगफलीका मैसूरमें इतना व्यापार होता है, जिसकी हद नहीं। यह कहना बेजा नहीं कि मूंगफली मैसूरकी व्यापारकी खास चीज है। ऐसा मालूम होता है कि करीब १ लाख २० हजार एकडमें मूंगफली होती है। छटवी बात यह है कि पहले नारियल मैसूरमें बहुत कम था; लेकिन आज मैसूरके तुमकूर और हसन जिलोंमें नारियलका भरमार है। मैसूरकी कोपरी हिन्दुस्थानके सब मारकेटोंमें चलती हैं।

सुपारी, लवंग, एलाची और रूई वगैरह चीजें भी यहां होती हैं, जिनसे भी मैंसूरकी शोभा बढरही हैं। सब बातोंमें उन्नति तो हुई; लेकिन यह बडे ताज्जुबकी बात है कि पहले जो अफीम और नीली, जिनकी अच्छी उपज थी, आज नामके लिए भी मैंसूरमें नहीं मिलते। इससे रंजकरनेकी कोई बात नहीं; लेकिन आनंदकी बात यह है कि अफीम मारा ही गया।

मैंसूरकी कृषिके बारेमें सोचने और समझनेसे यह लिखना पडता हैं कि मैंसूरके किसान अपनी आर्थिक दशाको सुधारनेके लिए समयके अनुसार करवट बदलते आरहे हैं। इसलिए मैंसूरकी कृषिकी उन्नतिका अधिकांश श्रेय किसानोंको मिलना चाहिये। उनकी मेहनत और लगन ऐसी चीजें हैं, जिनकी वजहसे आज मैंसूर सस्यश्यामला हैं। हां, इसमें

मैंसूर सरकार भी बधाईके काबिल हैं। कारण यह कि मैंसूर सरकारने ऐसे कृषि विभागको खडा करदिया हैं, जिसका वैंज्ञानिक खोज-ताज और आर्थिक सहायतासे आज मैसूरकी उत्पत्तिशक्ति अच्छी ही नहीं; बल्कि क्रमोन्नतिपर हैं। इस विभागकी लगन और किसानोंकी मेहनतके सहयोगसे मैसूरकी कृषिकी बडी प्रगति हुई हैं। हमारा यह एतबार हैं कि मैसूर सरकारकी तरह देशी राज्योंके राजा और नवाब और ब्रिटीश सरकार कृषिकी उन्नतिमें लगजाते तो आज हिन्दुस्थानकी उत्पत्ति-शक्ति दुगुनी होजाती

मैसूरका नहर - पानीका विभाग (Irrigation works) बहुत मजबूत हैं। यहां तालाबोंसे ही नहर-पानीका काम चालू हैं। काडूर जिलेके अयंकेरी और मदगकेरी तालाब सात शताब्दके पुराने हैं। लेकिन उनके किनारों, आनकट, (Anicut) खराब पानीको निकालनेके रास्ते और अच्छे पानीको चालूकरनेकी सुविधाओंको देखनेसे यह कहना पडता हैं कि उस जमानेके लोगोंकी अक्ल नयी रोशनीकी अक्लसे कम न थी। बरसातका पानी सुरक्षित करनेकी तरफ मैंसूर सरकारका ध्यान रहता हैं, जिसके लिए स्टेटभरमें २५,००० तालाब हैं। ऐसा मालूम होता हैं कि एक तालाबसे औसत सवा एक वर्गमीलतक पानी चालूकिया जासकता हैं। आज इनतालाबोंको बनाने लगे तो करीब ३० करोडसे ज्यादह रकम लगसकती हैं। यह पता लगता हैं कि मैंसूरकी सारी उपजाऊ जमीनमेंसे २५ फीसदी जमीनके लिए तालाबोंका पानी ही काम आता हैं। तालाबों द्वारा आज ही नहीं; बलिक पुराने जमानेसे नहर-पानीका काम होता आरहा हैं। थोडे अर्सेसे नदियोंपर डाम (Dam) बनवाकर भी स्टेटमे पानी चालू किया जारहा है। इससे १० सालके अंदर १ लाख १६ हजार एकडकी जमीन उपजाऊ लायक बनायीगयी हैं, जिसमेंसे ९९ वी फीसदी जमीन बगैर पानी बंजर पडी थी।

खेतीबारीकी तरफ मैसूरके महाराजा और दिवान बहुत ध्यान देते हैं। इनकी देख-रेखमें मैसूरकी कृषिकी जो उन्नति हुई हैं, उसकी रूप-रेखा इस तरह खींची जासकती हैं। आज मैसूर राज्यमें जो २५००० छोटे-मोटे तालाब हैं, उनमें बरसातका पानी सुरक्षित किया जाता हैं। इस पानीसे पांच लाख अस्सी हजार एकड़की खेती होती है, जिससे सरकारको १५ लाख रूपयेकी आय होती हैं। स्टेटमें ५० नाले हैं। इनमें पानी नदियोंसे आता हैं। इनके जरिये दो लाख, चार हजार पचास एकड़की खेती होती है। इस खेतीसे सरकारको आठ लाख बाईस हजारकी आय होती हैं। इसके अलावा स्टेटमें चालीस हजार, चारसौ सत्तर कुए और कई सोतोंके पानीसे बहनेवाले नाले हैं। इनके जरिये भी स्टेटमें अच्छी खेती होती हैं। सन २९२६ तक नहरपानी (Irrigation) केलिए स्टेटकी तरफसे पांच लाख रूपया खर्च किया जाता था। लेकिन अब यह रकम १० लाख रूपये तक बढायी गयी। अब सन १९३८-३९ के लिए १२ लाख ९० हजार मंजूर किया गया है।

हमने अपने पाठकोंके सामने मैसूरकी कृषिकी उन्नति और उसतरफ मैसूर सरकारकी लगनका संक्षिप्त क्रम पेश किया है। इसका मतलब यह नहीं कि मैसूरमें इसतरफ जो होरहा है, वह काफी है और और करनेकी जरूरत नहीं। उन्नतिका अंत कहां? सरकार कोई दैवीय शक्ति नहीं। वह किसी एक व्यक्तिकी या उस व्यक्तिके मातहत कई आफसरोंकी बुद्धिपर चलती है। आखिर को मानव मानव ही है। उचितानुचितका पूरा ज्ञान मानवको नहीं रहता। इसीलिए मानवसे गलती होती है। हां, गलती होनेपर ही मानव सोचता है और ठीक रास्ता पकडता है। यहीं मैसूर सरकारके कर्णधार कररहे है। लेकिन उनके सामने रूकावटें कई हैं। जो हो, मैसूरके कर्णधार प्रस्तुत संकटोंको पारकरते हुए हमेशा करवट बदलनेकी कोशीश करते है, ऐसा हमारा ख्याल है। एक बातमें यह कहा जासकता है कि मैसूरके महाराजा साहसी हैं। इसी

लिए उनकी लगन साहसपर टिकी रहती है। इसीसाहसके बलपर वह अपने दिवान और दूसरे आफसरोंको साथ लेकर साहसके काम करनेके जतनमें लगेरहते हैं। साहसपर खडी हुई पालसीकी मददसे वह कृषिकी तरफ बहुत आगे बढे। उनकी इसतरफ हुई तो जरूर बडी प्रगति; लेकिन वह अपनी सारी शक्तिको इसतरफ न लगाकर फिर व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ दौडनेलगे। अबतो यह कहा जासकता है कि सिर्फ कृषिमें ही महाराजा क्यों टिके न रहे? यह देखनेमें आता है कि मैसूरके महाराजा व्यवसाय-धन्धोंके हिमायती हैं। इसलिए उनका एतबार है कि व्यवसाय-धन्धोंके बिना देशकी आर्थिकदशा सुधर नहीं सकती। है तो यह महत्वपूर्ण विचार; लेकिन इसी एक तरफ बढना ठीक नहीं। कारण कि उत्पत्तिशक्तिके बिना व्यवसाय-धन्धे बेकार हैं। इसीलिए दूरंदर्शी मैसूरके महाराजा पहले अपने राज्यकी उत्पत्तिशक्तिको बढानेमें लगगये और बादको व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ बढे। ऐसी हालतमें मैसूरके दिवान सर मिर्जा इस्मायल ऐसे निकले, जो राज्यकी उत्पत्ति-शक्ति और व्यवसाय-धन्धोंको एक साथ बढाते आरहे हैं।

हमारा काम तो अपने पाठकोंके सामने मैसूरकी कृषिकी प्रगतिकी बातोंको रखना ही है। अब पाठकोंका काम यह है कि वह इसपर यह फैसला देंगे कि मैसूरकी कृषिकी प्रगतिसे मैसूरकी प्रजाको लाभ पहुचा है या नहीं।

मैसूरके व्यवसाय-धन्धे

महात्माजीने एक बार कहा है कि अपनी प्रजाको अन्न और कपडा देनेका काम सरकारका है। सरकार इसके लिए क्यों बाध्य है ? जब सरकार यह कहती है कि वह अपनी प्रजाके संरक्षक है और प्रजासे कर वसूलकरती है तो प्रजाको अन्न और कपडा देनेके लिए सरकार बाध्य नहीं तो और कौन होसकता है ? इसका मतलब यह नहीं कि सरकार अपनी प्रजाको बिठाकर खाना और कपडा दे। इसका मतलब इतना ही है कि सरकार देशमें वह बन्दोबस्त करदे, जिससे प्रजाको अन्न और कपडा मिलसके। ऐसा न करके चूसे प्रजाको अपने खर्च और ढोंगके लिए सरकार, तो वह सरकार किसलिए। अपने अफसरों और दफ्तरोंके लिए बडे बडे मकान बनाना सरकारका काम नहीं। सरकारका पहला काम अपनी प्रजाको सुखदेना है याने प्रजाकी मामूली जरूरतोंकी

पूंजिका इन्तजाम करना है। जब सरकार ऐसा न करके पहले दूसरी बातोंमें लगजाती है तो यह मानना पडता है कि देशमें क्रांति पैदा होती है और हितका अहित होता है। इसीलिए मैसूरके महाराजाने एक जगह कहा है कि प्रजाका सुख सरकारका सुख और सरकारकी जड है। सचमुच मैसूरके महाराजाने ठीक कहा है। अगर हम उनकी बात पर दिमाग लगायेंगे तो यह मानना पडता है कि जरूर प्रजाका सुख ही सरकारका सुख है। प्रजा सुखी नहीं तो सरकार कैसे सुखी? अगर प्रजा भूखी और नंगी है तो सरकार टिके कैसे? इसीलिए महात्माजीने भी यह कहा कि अपनी प्रजाको अन्न और कपडा देना सरकारका काम है। हमारी समझमें महात्माजीके कहनेका मतलब यह है कि सरकार उस तरफ ध्यान दे, जिससे प्रजाको अन्न और कपडा मिलनेमें कोई बाधा न हो। इसका मतलब यह होता है कि सरकार अन्न और कपडा मिलनेके साधनोंको मजबूत बना दे और बढादें।

इस पहलूसे हम देखेंगे तो यह समझना पडता है कि सरकार वह है, जो अपनी जड प्रजाको सुखी बनावे, न कि प्रजाको चूसे और अपना उल्लू सीधा करनेके लिए प्रजाकी तरफ दांत दिखावे। ठीक है; लेकिन इसके लिए सरकारको करना क्या चाहिये? दूसरे देशोंकी बात तो छोड दीजिये; लेकिन हमारे वतन हिंदकी बाबत यह समझना पडता है कि हमारी सरकारको यहां खेतीको-जो देशकी खास चीज है— बढाना चाहिये, जिससे प्रजाको अन्न और कपडा मिलसके। लेकिन ब्रिटीश सरकारकी नीतिको देखने और समझनेसे ऐसा मालूम होता है कि वह इसतरफ कुछ भी नहीं करसकी। ऐसा तो देखनेमें आता है कि विलायतसे कोई न कोई कमेटी या कोई कृषिशास्त्रके ज्ञाता हिंदमें आता है, जिससे यह मालूम हो कि ब्रिटीश सरकार हिंदकी कृषिकी उन्नतिके लिए बहुत कुछ कररही है; लेकिन क्या इधर कुछ उन्नति हो सकी? सन् १९३७ के पहलेकी एक रिपोर्टसे यह मालूम होता है कि सारे दक्षिण

हिन्दुस्थानमें कृषिकी आमदनी घटगयी और दक्षिण हिन्दुस्थानकी कृषि सम्बधी आय दो फीसदी थी। यह है ब्रिटीश सरकारकी कृपा प्रजापर। जो हो, अगर हम मैसूर सरकारकी तरफ जरा दौड जायंगे तो वहां एक ऐसी झलक दीखती है, जिससे यह कहाजासकता है कि मैसूर सरकारने कृषिकी तरफ इतनी तरक्की कर दिखायी है, जिसे देखकर ब्रिटीश सरकारको शरमिंदाना चाहिये। हमारे कहनेका मतलब यह नहीं कि मैसूरमें अब कृषिके लिए और कुछ नहीं करना चाहिये और यहांकी प्रजा चैनकी बंसी बजा रही है। उन्नतिका अंत कहां? हां, मैसूरकी कृषिकी प्रगतिको देखकर यह कहा जासकता है कि मैसूरका भविष्य उज्वल है और मैसूरकी उत्पत्तिशक्ति क्रमोन्नतिपर है। इस बाबत हमने पिछले परिच्छेदमें थोडा बहुत लिखा है, जिससे हमारे पाठक समझसकेंगे कि मैसूरकी कृषिकी प्रगति और उसतरफ सरकारका जतन तारीफ काबिल है या नहीं। जो हो, आज यह बात देखनेमें आती है कि सिर्फ खेतीपर ही देश फूला-फला नहीं रहसकता। आजकी जरूरतोंको देखकर यह मानना पडता है कि व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीके बिना कोई देश फूला-फला नहीं रहसकता और सारी प्रजा सुखी नहीं रहसकती। अब यह सवाल उठसकता है कि पहले जब कि हमारा देश आजके मशीनकी ताकतपर खडे हुए व्यवसाय-धन्धोंको अपनाये बिना ही फूला-फला रहा तो फिर आज इन व्यवसाय-धन्धोंकी क्या जरूरत है?

योंतो दुनिया देखनेमें कई मुल्कोंमें बंटी हुई दीखती है, लेकिन राजनैतिक और आर्थिक बातोंमें सारी दुनिया एक तागेमें बंधी हुई है, ऐसा मालूम होता है। इसलिए कोई देश दूसरे देशोंकी आर्थिक और राजनैतिक बातोंको समझे-बूझे बिना अपनी तरक्कीका रास्ता बना नहीं सकता। भले ही हमारा देश पहले फूला-फला रहा हो; लेकिन आजकी हिंदकी दशाको देखकर यह कोई नहीं कहसकता कि यह मुल्क अपनी आर्थिक दशाको पहलेके ढंगपर ही सुधार सकती है। साफ सुधरी

चीजों, फुर्तीके साथ चीजोंको बनानेके तरीकों और अंतरराष्ट्रीय व्यापारके उलझनोंको देखकर, यह हमारा वतन पुराने ढरेंपर आर्थिक उन्नति करसकता है, ऐसा समझना गलत है। इससे हमारे पाठकोंको यह समझना नहीं चाहिये कि हमको देशमें चालू छोटे व्यवसाय-धन्धोंपर पानी फेर देना चाहिये और नये ढंगसे देशमें पश्चमी तरीकोंको ही दाखिल होनेदेना चाहिये। ऐसा कभी हो नहीं सकता। हमको ऐसा रास्ता बनालेना चाहिये, जिससे हमारे छोटे धन्धे मिट न जायं और बडे धन्धोंमें प्रगति हो। इस तरफ कांग्रेस काममें लगगयी है। इसलिए हम अपने पाठकोंके सामने मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंकी रूप-रेखाको खींचना चाहते हैं। ऐसा करनेमें हम यह समझते हैं कि हमारे पाठक यह समझलेंगे कि मैसूर सरकारने इस तरफ क्या किया और उसमें क्या त्रुटि है।

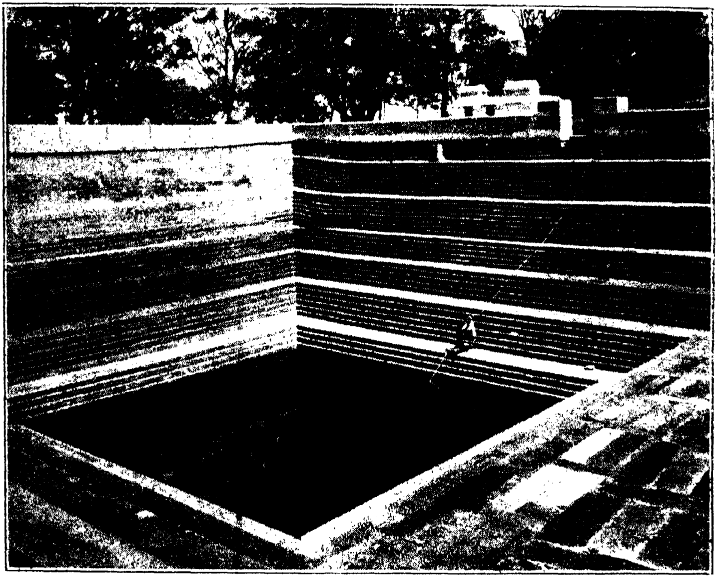
हमने इसके पहले यह तो लिख ही दिया कि मैसूर सरकार खेतीबारीकी तरक्कीमें क्या कररही है। हमारा ऐसा ख्याल है कि मैसूर राज्य कच्चे मालको बढानेमें पहले लगगया। इस तरफ चाहें मैसूर राज्य हद पार काम नहीं करगया हो, लेकिन उससे इतना तो समझा जासकता है कि मैसूरमें कच्चा माल काफी तय्यार होरहा है। ऐसी हालतमें मैसूरके महाराजा व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीमें लगगये तो कोई बुरी बात नहीं। जब कि हिंदुस्थानका काम कच्चा माल पैदा करना, उसे पश्चिम देशोंको देना और उलटे बडा दाम देकर फिर पश्चिम देशोंसे तय्यार की गयी चीजोंको खरीदना बदा है तो मैसूर राज्यके कर्णधारोंने यह समझा कि कच्चा माल दूसरोंको देनेके बनिस्पत अपने यहां हीं क्यों न नये धन्धे निकाले जाय, जिससे देशकी श्री बढ जायं। यह है तो मुनासिब ख्याल; लेकिन इससे मैसूरको कितना फायदा पहुंचा, यह समझेबिना कोई यह नहीं कहसकता कि मैसूरकी व्यवसाय-धन्धोंकी प्रगति लाभदायक है या नहीं।

मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंके विचारका जन्म सन १८८१ में हुआ, ऐसा कहा जासकता है। इससमय स्वर्गीय रंगाचार्युलु दिवान थे। आपने यह कहा और इस बातपर जोर डाला कि व्यवसाय-धन्धोंकी उन्नतिके बिना देशकी आर्थिक दशा सुधर नहीं सकती। इसलिए उन्होंने यह साफ घोषित किया कि व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीमें महाराजाकी सरकारकी पूरी सहानुभूति रहेंगी। इसलिए यह कहाजासकता है कि स्वर्गीय रंगाचार्युल मैसूर व्यवसाय-धन्धोंके जन्मदाता थे। लेकिन इसतरफ तेजीके साथ प्रगति हुई, आजके महाराजाके समयसे। सन् १९११ में आजके महाराजाने मैसूर आर्थिक कान्फरेन्सकी नींव डाली। इसके बारेमें यह कहाजासकता है कि इसी कान्फरेन्सने मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंमें क्रांति पैदा की। ऐसी हालतमें सर. एम. विश्वेश्वरय्या मैसूरके दिवान हुए, जो व्यवसाय-धन्धोंके बडे हिमायती हैं। आपने अपने समयमें मैसूर-सरकारकी पालसीको इसतरह बताया:—प्रजाके ज्ञानको और साथ ही साथ उनकी कमानेकी शक्ति, दक्षता और देशके धन्धोंको बढाना चाहिये, जिससे काम करसनेवालोंको सुभीता मिलसके। मशीनकी उपयोगिताको बढाते हुए साथ ही साथ प्रजाको विज्ञान, मशीन और व्यवसाय-धन्धों सम्बधी तालीम दिलानेकी सुबिधायें दीजाय। सर. एम. विश्वेश्वरय्याके बारेमे यह कहाजासकता है कि वह मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंके प्राणदाता हैं। आपके बाद सर मिर्जा इस्मायल दिवान हुए, जो मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंके पोषक हैं। यह कहा जासकता है कि सर मिर्जाने मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंकी पक्की नींव डाली है। सर मिर्जाके समय यह बात देखनेमें आती है कि आपने व्यवसाय-धन्धोंमें क्रांति पैदा की है। हां, आपको स्टेट साम्यवादमें पूरा विश्वास है। अभी हालमें सी. एफ. अंड्रूसने भी स्टेट साम्यवादकी तारीफ की और यह जाहिर किया कि यदि मैसूर स्टेट साम्यवादपर कदम बढायगा तो वह सचमुच आदर्श राज्य होगा। जो हो, सर मिर्जा अपने स्टेट साम्यवादपर डेटे हैं। वह क्यों स्टेट साम्यवादको चाहते हैं, इसबाबत

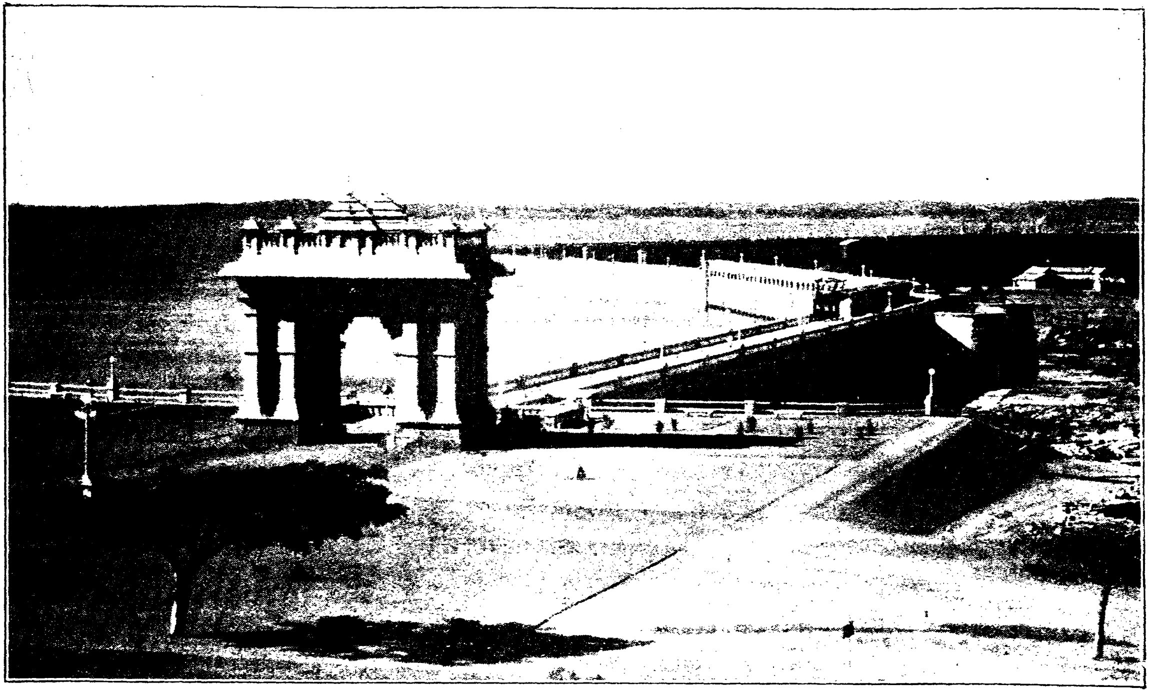
उनकी ये दो दलीलें हैं:—(१) स्टेटमें कोई ऐसा व्यक्ति या व्यक्तियोंका समूह नहीं, जो पूंजी लगाकर व्यवसाय-धन्धे निकालना चाहता हो। (२) कोई ऐसा चाहता भी है तो, वह स्टेटके सहयोगके बिना यह नहीं करना चाहता। इसलिए मैसूर सरकार जनताके सहयोगसे व्यवसाय-धन्धोंको बढ़ाने लगा। यह लिखना बेजा नहीं कि इसी नीतिपर आज मैसूर स्टेट व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ बडी प्रगति कररही है। इससमय-याने सर मिर्जाके जमाने मैसूर राज्यकी नीति सर मिर्जाकी बातोंमें इस तरह है:—सब सवालोंसे परे आर्थिक समस्या है और उसपर राज्यकी पूरी नजर है,........................स्थानिक धन्धों, बडे धन्धों, व्यापार झोपडी-धन्धों और कारीगरीयोंके बारेमें कोई स्कीम पेशकी गयी तो सरकार उसपर अमल करनेके लिए तय्यार है।.............................. इससे यह नहीं समझना चाहिये कि सर मिर्जा व्यवसाय-धन्धोंपर ही नजर रखते हैं। उनके लिए व्यवसाय-धन्धे और कृषि दोनों बराबर है। वह दोनोंकी आर्थिक महत्ताको बराबर तौलते हैं। वह यह समझते हैं कि दोनोंसे ही राज्यकी आर्थिक दशा सुधरसकती है। इसलिए वह सरकारकी नीतिको ऐसा बनारहे हैं, जिससे दोनोंमे मेल होजाय।

यह तो मानी हुई बात है कि व्यवसाय-धन्धोंकी प्रगति बिजली या तेल और कोयले पर टिकसकती हैं। खेदकी बात हैं कि मैसूर तेल और कोयलेसे खारिज है। लेकिन मैंसूरपर खुदरतकी इतनी मेहरबानी हैं कि यहां बहुतसे जलपात हैं, जिनसे बिजली पैंदा की जासकती है।

चाहे सन १८८१ से मैसूरमें व्यवसाय धन्धोंकी ख्वाहिशकी नीव पडी हो; लेकिन बीजतो बोया गया सन १९०२ मेंसे। इसी साल कावेरी नदके किनारे शिवसमुद्रममें बिजली पैदा करनेका काम शुरू किया गया। इसका श्रेय दिवान शेषाद्री अय्यरको मिलना चाहिये। आपने यह कहा: -- अब तक यह शक्ति फिजूल बही जाती आरही है।



नंदी पर्वतपर, अमृतसरोवर



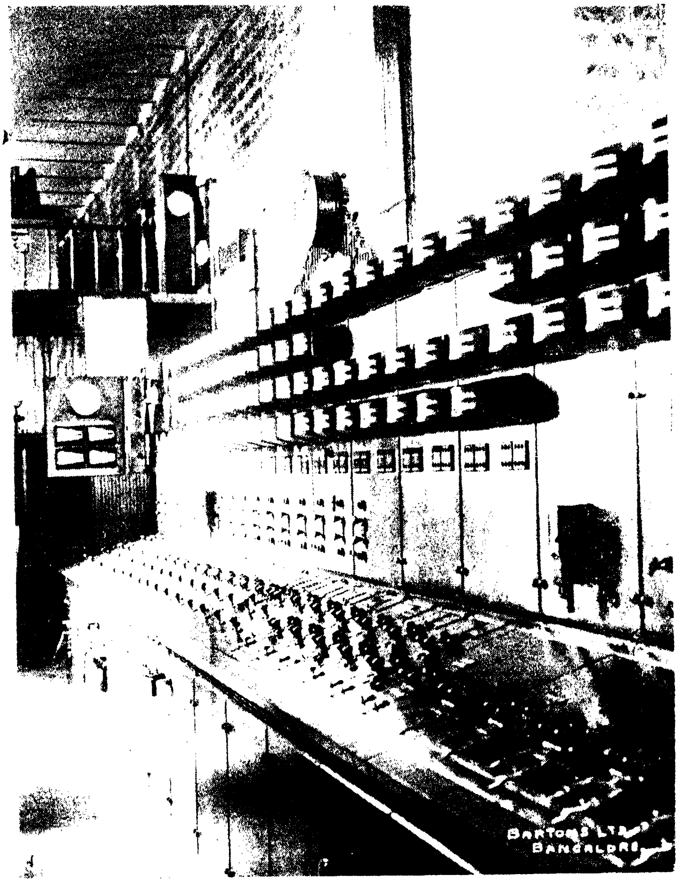
कृष्णराज सागरका डाम

आज मैसूर दर्बार अपनी स्कीम द्वारा इसे काममे लाना चाहता है, जिससे आगे राज्यमें व्यवसाय-धन्धे बढजायं। इन बातोंको कहे ३६ साल गुजर चुके। तबतो शेषाद्री अय्यर जीका मतलब इतना ही था कि बिजली कोलारकी सोनेकी खानों तक चालू की जाय, लेकिन आज यहां की बिजली कोलारकी सोनेकी खानों, भद्रावतीके लोहा और स्टील बनानेके कारखानों, मांड्याकी शक्कर फाक्टरी, देहातों, शहरोंके कारखानों, शहरों, नहर-पानीके कामों और मैसूर और बंगलूरके बडे बडे कारखानोंके लिए काम आरही है। हिंदमें बिजली कई जगह पैदाकी जाती है; लेकिन यह मानना पडता हैं कि शिवसमुद्रके बराबर जगह कोई नहीं। यह सच हैं कि दुनियाकी सबसे ज्यादह बिजली पैदा करनवाली जगहोंमें शिवसमुद्र एक हैं। यहांसे ज्यादहस ज्यादह ९२ मील तक बिजली चालू की जाती हैं। इसके लिए करीब ३ करोड रूपया खर्च किया गया; लेकिन अब तक वापस मिला सिर्फ करीब ३४ लाख रुपया। फायदेकी बात छोड दीजिये: लेकिन उपयोगिताकी नजरसे देखाजाय तो यह मानना पडता है कि शिवसमुद्रकी स्कीम वह है, जिससे मैसूर राज्य फूला-फला होसकता है। और इसके बारेमें यहां तक कहाजासकता है कि शिवसमुद्रकी स्कीम नहीं हुई होती तो मैसूर आज इस रूपमें नहीं रहसकता। जो हो, मैसूर सरकारने यह काम करके वह साहस दिखाया, जिसमें प्रजावत्सलताकी बू है।

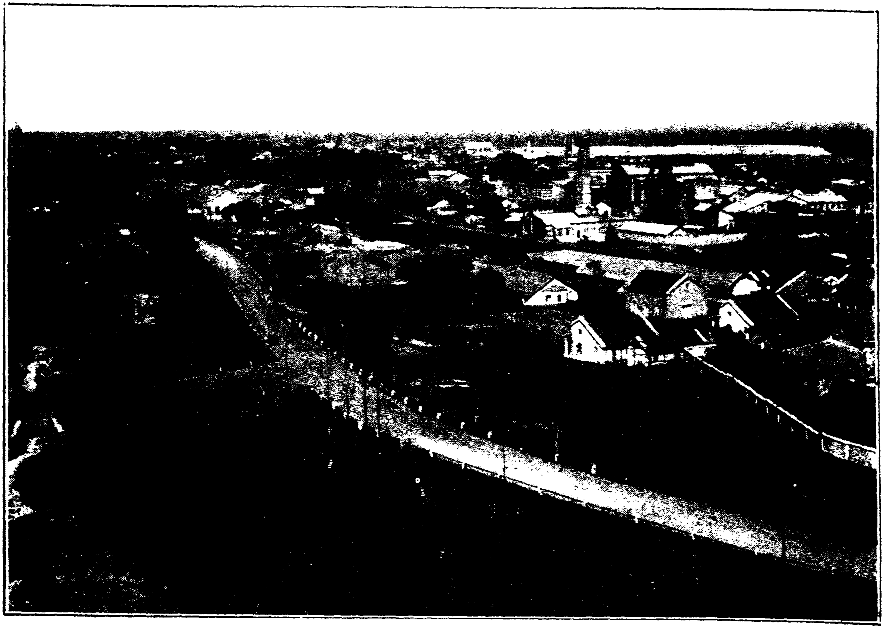
इसके बाद फिर यह बात समझनेमें आयी कि कावेरीसे और बिजली पैदा की जासकती है। यह तब होसकता है, जब कावेरीके बहावको चारों मौसम चालू रखा जासकता है। इसकाममें सर एम. विश्वेश्वरय्याका दिमाग लगगया। पाठकोंको मालूम ही होगा कि सर एम विश्वेश्वरय्या किस कोटिके व्यक्ति हैं। आप संसार ख्याति प्राप्त इंजनीयर और व्यवसाय-धन्धोंके पक्के पूजारी हैं। हैं तो आप मैसूरके ही बासिन्दे; लेकिन आपकी अक्ल ऐसी है, जिसके बलपर आप अंतरराष्ट्रीय ख्याति

प्राप्त व्यक्ति होगये। आप इस समय कांग्रेसके व्यवसाय धन्धे-निर्माण-संघके प्राण हैं। आप लगगये कावेरी नदके बहावको गर्मीके दिनोंमें भी चालू रखनेके काममें। यह है तो प्रकृति विरूद्ध कार्य; लेकिन विश्वेश्वरय्या जी इसमें मैदान मारगये। पाठक मैसूर जायंगे तो आप लोग वहां कन्नंबाडी बनाम कृष्णराजसागर देखेंगे। यह श्री सर एम. विश्वेश्वरय्याकी विश्वामित्र सृष्टि है। यहां आपको दो दृश्य देखेंगें। एक दृश्य, जिसमें कृषि और विद्युच्छक्ति-उत्पन्नशक्तिको बढानेकी स्कीम भरी है। यह तो अदृश्य रहता है; लेकिय दिमाग लगानेसे यह साफ दीखता है, जिसका बयान ही लेखनीके बाहरका है। दूसरा दृश्य बृन्दावनका है। पहला दृश्य तो मैसूर राज्यकी आर्थिक दशाका पोषक है; दूसरा मनोरंजनका है। पहला दिनमें देखाजासकता है: दूसरा सिर्फ रातमें ही। पहलेका वैभव शाश्वित है; दूसरेका क्षणिक है। जो हो, इन द्वंद दृश्योंकी नींव डालनेमें विश्वेश्वरय्या लगगये। उनके सामने दो तरफा रूकावटे आयी। एक तरफकी रुकावट इंजनीयरीसे ताल्लूक रखनेवाली थी: दूसरी ब्रिटीश हिंदकी भलाईकी हिफाजित करनेकी। जो हो, श्री विश्वेश्वरय्या स्वप्न सदृश आशाको श्री कृष्णराजसागरके रूपमें सादृश बनाया है। श्रीरंगपट्टम से नौ मील दूर श्री कृष्णराजसागर और कुछ नहीं: बल्कि डाम (Dam) है। इस डामकी लम्बाई ८६०० फीट और ऊंचाई १२० फीट है। कावेरी-जलको सुरक्षित करनेवाला प्रदेश ५० वर्गमीलका है। इसके नीचे एक लाख, बीस हजार एकडकी खेती होती है। इसके बनानेमें लगगया सवा करोड रूपया। सचमुच यह कृष्णराजसागर तिर्थि काव्य है, जिसमें से तीन मतलब निकलते हैं। एक कृषिका; दूसरा धन्धोंका और तीसरा मनोरंजनका। तिर्थि काव्यमें सर मिर्जाका भी हाथ है; जो तीसरे मतलबसे ताल्लुक रखता है।

श्रीकृष्णराजसागरकी कृषिके सम्बन्धमें मैसूर सरकारने अपने और रय्यतोंके फायदेके ख्यालसे ब्लाक सिष्टमको [Block System]



शिवसमुद्रका कन्ट्रोल बोर्ड



कोलार गोल्ड फील्ड

अपनाया है, जिससे तीन सालके दर्मियान ऊंख, धान और बगीचेकी उपजें [Garden crops] पैदा हों। इस तरह तीन तरहकी उपजें तीन सालके दर्मियान करानेका सरकारका मतलब है, जिससे श्री कृष्णराज-सागरकी लागत जल्दी निकल आवे और साथ ही साथ रय्यतोंकी काफी आमदनी हो। इस तरह मैसूर सरकार खेतीको कानून न करदेती तो मद्रासमें जैसे रय्यत धान ही पैदा करके कमजोर पडते जारहे हैं, वैसे मैसूरके रय्यत भी होजाते। इस तरहकी खेतीसे मैसूरमें एक एकडमें तीन सालके अंदर जो आमदनी होती है, उसका क्रम इस तरह बताया जासकता है :— ऊंखसे एह एकडमें ५०० रू धानसे ८० रू और बगीचेकी उपजोंसे ५० रू। अगर धान ही पैदा किया जाता है तो तीन सालके अंदर सिर्फ २४० रू की आमदनी होसकती है। जो हो, अब यह कहाजासकता है कि मैसूरकी Block system से फायदा ही है, न कि नुकसान।

श्री कृष्णराजसागरकी वजहसे एक तरफ बिजली पैदाकरनेकी शक्ति बढगयी और वहां Block system को अपनानेसे ऊंखकी उपज और बढगयी। इन दोनों बातोंका नतीजा यह निकला कि मैसूर सरकारको शक्कर बनानेकी फाक्टरी खोलनी पडी। जब बिजली ज्यादह पैदा होनेलगी तो सरकार व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ बढे बिना कैसे रहसकती है ? इसलिए मैसूर सरकारने समझदारीका काम यह किया कि वह ज्यों ज्यों उत्पत्तिशक्ति बढती गयी त्यों त्यों नये व्यवसाय-धन्धे भी निकालती गयी। वह किसतरह ?

उत्पत्ति शक्ति और व्यवसाय धन्धोंमें अविनाभाव सम्बन्ध है। एकके बिना दूसरा टिक नहीं सकता। मैसूर सरकारने ऊंखकी उत्पत्तिको बहुत बढाया। इस तरफ सरकारकी तरफसे सब तरहका प्रोत्साहन मिला, ऐसा कहाजासकता है। नतीजतन मैसूरके रय्यत ऊंखकी तरफ बहुत दौड जानेलगे। सरकारकी तरफसे सब तरहकी सुविधायें मिलनेलगी

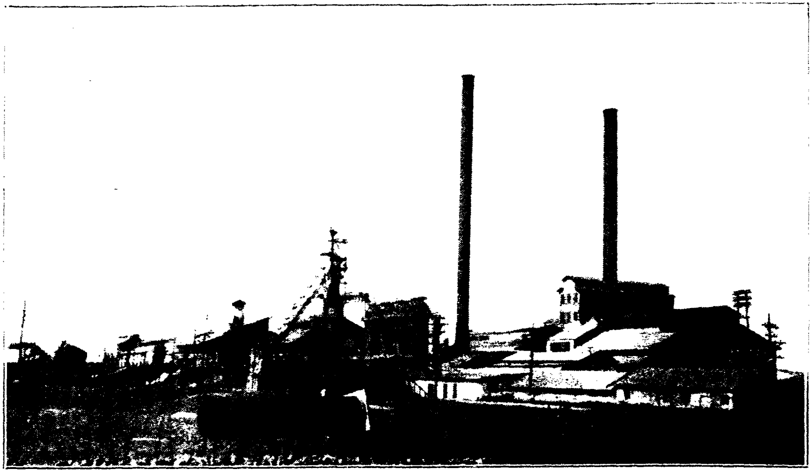
तो रय्यत क्यो हाथपर हाथ रखकर बैठजायं ? इसका यह नतीजा निकला कि स्टेट भरमें ऊंख ही ऊंख नजर आने लगा। अब सरकारकी परखका मौका आगया। लेकिन मैसूर सरकार विलायती सरकार नहीं कि मौनमुद्रालंकार बने। झट उसने यह तयकरलिया कि ऊंखको बाहर भेजदेनेका इन्तजाम करना या ऊंखकी बढतीको रोकना मुनासिब नहीं। ऐसे मौकेपर ब्रिटीश हिंदुस्थानी सरकारने बाहरसे आनेवाले शक्करपर भी सुरक्षितकर (Protective duty) लगाया है तो, झट मैसूर सरकारने ऊंखको खरीदनेका काम शुरु किया और सन १९३४ में मंड्यामें एक शक्कर फाक्टरी खोलदी।

पाठकोंको मालूम ही है कि मैसूरके रईस खुद व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ आगे नहीं बढते और बह सरकारका सहयोग चाहते हैं। इसलिए मैसूर सरकारने इसफाक्टरीको खडाकरनेमें ऐसा इन्तजाम किया कि ६० फीसदी लागत सरकारकी हो और ४० फीसदी मैसूरके बासिंदोंकी इस तरह मैसूर सरकारने २० लाखकी लागतपर शक्कर फाक्टरी खडाकरदी। इस फाक्टरीके बोर्डमें सरकारकी तरफसे चार मेम्बर होते हैं, जिनमेंसे एक बोर्डके चेरमन होते हैं। जो हो, एक सालके अंदर ही फाक्टरीकी ताकत दुगुनी होगयी। पहले तीन सालके अन्दर ही फाक्टरीको तीन लाख रुपयेका मुनाफा हुआ और १९३५-३६ तक फाक्टरीकी लागतमेंसे ११ फीसदी आदा हो चुकी। यह हुई शक्कर फाक्टरीकी बात।

हमारा ऐसा ख्याल है कि जहांकी प्रजा अपनी तरफसे व्यवसाय-धन्धोंको बढा नहीं सकती, वहां साकारको लाजमी व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्की करनी चाहिये। यह तभी होसकता है, जब सरकार प्रजाकी मानेजिंग एजेन्ट बनजाती है और प्रजाकी तरह नुकसान और फायदेका हिस्सा बांट लेती है। बस, मैसूर सरकार यही कररही है, ऐसा हमारा एतबार है। मैसूरकी शक्कर फाक्टरीको बातोंको समझकर पाठकोंको यह



मांड्या शक्कर फाक्टरी



भद्रावती कारखाना

ख्याल बनालेना नहीं चाहिये कि मैसूर सरकार फायदेमें है, नकि घाटेमें। भद्रावतीके मैसूर ऐरन वर्क्सकी बातको समझनेसे यह बात पाठकोंको मालूम होगी कि मैसूर सरकारने भले हीं अच्छा धन्धा उठाया हो; लेकिन इसधन्धेमें वह बहुत पानीमें उतरगयी। सच बात तो यह है कि मैसूर सरकारने भद्रावती ऐरन वर्क्सको खडाकर गर्व करनेका काम करदिखाया है, जिसमें ३ करोड रुपयेकी लागत लगायी गयी। मैसूर राज्यकी आर्थिक दशाको मजबूत बनानेके लिए मैसूर सरकारने इसधन्धेको उठाया। लेकिन शुरूसे अभी तीन या चार साल तक इसमें घाटा ही घाटा रहा। मैसूरने इस कामको सन १९१७ से शुरू किया। पाठकोंको मालूम ही होगा कि विश्व युद्धसे लोहेके धन्धेपर शनि लगगया है। इसकी वजह जापान है। संसारमें जापानके मुकाबलेमें सस्ता लोहा देनेवाला देश कोई नहीं। ऐसी खतरनाक हालतमें भी मैसूर सरकार हार न गयी। चोट पर चोट लगनेपर भी मैसूर सरकारने इसधन्धेको छोडा नहीं। हार जाना तो दूर, उलटे सरकारने २५ लाख रूपया लगाकर स्टील बनानेका नया बोझ उठालिया। इसके बादसे अंधेरेमें रोशनी दीखने लगी। लोहेसे स्टीलमें मुनाफ़ा मिल रहा है, ऐसा कहाजासकता है। जो हो, यह मानना ही पडता है कि भद्रावतीमें मैसूरका भविष्य उज्वल होगा। दक्षिण हिंदुस्थानमें अगर भद्रावती बर्मिंगहाम होजायगा, तो कोई बडी बात नहीं होगी। भद्रावती अपने खनिजों, लकडी और टिम्बरसे फूला-फला है। कावेरीकी मेहरबानीसे बिजलीकी तो कोई कमी नहीं। इनसबके ऊपर मैसूर सरकारकी लगनका किला है। अब इसी जगह कागज और सीमेन्टके नये धन्धे शुरु कियेगये। ऐसा मालूम होता है कि मैसूर सरकार भद्रावतीमें अपने धन्धोंको केन्द्रित करना चाहती है। यह भी एक तरह अच्छी बात है। चाहें मैसूर सरकार बडे असेंतक भद्रावतीमें पानीमें उतरगयी हो; लेकिन हम पूरी आशा रखते हैं कि यही मैसूरका भविष्य उज्वल होगा।

मैसूरका खास धन्धा रेशमका है। पाठकोंको मालूम ही है कि इसकी वजह मलबरी है। रेशमसे मैसूर राज्यमें २ लाख आदमियोंको काम मिलता है। मैसूरमें रेशमकी कुल उत्पत्ति १·५ मिलियन पौंड है, जिसका दाम एक करोड़ रुपया होसकता है। यों तो हिंदमें मैसूर और काश्मीर रेशमके प्रधान केंद्र हैं। ऐसा माना जासकता है कि काश्मीरसे भी मैसूर रेशममें चार गुना बड़ा है। सारे हिन्दमें जो रेशम पैदा होता है, उसमेंसे आधा मैसूरमें होता है। मलबरीकी उत्पत्तिपर पिछले परिच्छेदमें रोशनी डाली गयी। जो चीज पहले शौककी मानीगयी, वह आज मैसूरकेलिए लाभदायक होगयी है। आज मैसूरमें रेशम झोपड़ी धन्धा बनगया है। यह कहाजासकता है कि रेशम मैसूरके रय्यतोंके लिए अन्नदाता है।

मैसूरका रेशमकी कृषिका विभाग बहुत मजबूत और कामकी चीज है। इसविभाग द्वारा रय्यतोंको सब तरहकी सुविधायें दी जाती हैं और स्टेट भरमें कृषि सम्बन्धी ज्ञान बढ़ानेके लिए स्कूल चलायी जाती हैं। जापान और चीनकी तरह सब तरहके सुन्दर सुन्दर रेशमी कपड़े तय्यार करानेके जतन किये जाते हैं, जिससे व्यापारकी दृष्टिसे मैसूरका रेशमी कपड़ा चलसके।

मैसूर स्पन सिल्क मिल्स लिमिटेडकी स्थापना इसलिए की गयी, जिससे बेकाम फेंकदिये जानेवाले रेशम भी काममें लाया जाय। इसके पहले ऐसा रेशम विलायत भेजा जाता था, जिससे विदेशमें नया कपड़ा तय्यार कराया जाता था और बहुतसा मुनाफा उठाया जाता था। लेकिन मैसूरमें ही बेकाम रेशम (Waste Silk) काममें लाया जारहा है, जिससे इस धन्धेमें फायदा हो।

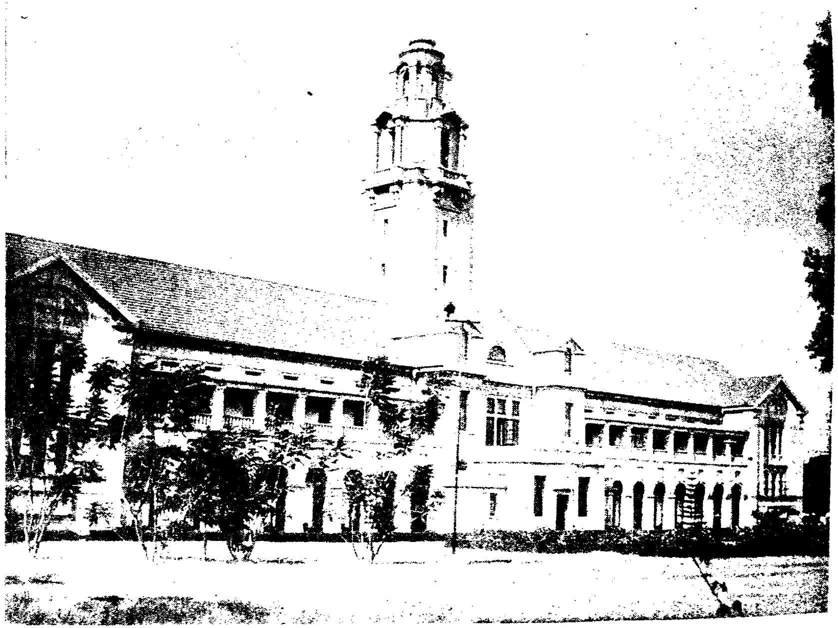
इस तरफ तो सरकारकी तरफसे सब तरहकी उन्नति की जारही है; लेकिन फिरभी इस धन्धेमें उलटा-सीधा होता ही है। इसकी दो वजहें

हैं। एक दशवासियोका देशी चीजोंकी तरफ लापरवाही दिखाना; दूसरी जापान और चीनकी प्रतिद्वंदिता। इसलिए सन १९१७ में रेशमकी ११६०००० पौंडकी जो उत्पत्ति थी सन १९३० में २४०००० पौंड तक घटगयी। इसी क्रमसे ११६ लाखसे ४५ लाख रूपये तक स्टेट भरके रेशमका दाम भी घट गया। ऐसी खतरनाक हालतसे इसव्यवसायको बचाना है तो एक ही उपाय है। वह बाहरसे आनेवाले जापानी और चीनी रेशम वगैरह रेशमपर अधिक कर लगाया जाय। लेकिन खेदकी बात है, कि ऐसे कामोंमें हिंदकी सफेद सरकारकी ही बात चलती है। ब्रिटीश सरकार योंतो कहती है कि देशी राज्य स्वतन्त्र हैं; लेकिन वह आजाद कहां? इसलिए जरकी बातोंमें देशी राज्योंकी बात क्यों मानी जाती है? मैसूर सरकार हिन्दुस्थानकी ब्रिटीश सरकारको आज भी करीब २३ लाख रूपयेकी सबसीडीके अलावा निर्यात करके रूपमें करीब एक करोड देती है। लेकिन ब्रिटीश सरकार मैसूर सरकारको इसमुसीबतसे बचानेकी कोशिश नहीं करती। इस तरफ टारिफ बोर्ड द्वारा तहकीकात की जाय और विदेशी रेशमके ऊपर कर लगाया जाय तो मैसूरको बहुतसा फायदा होसकता; लेकिन यह हो क्यों? विदेशी प्रतिद्वंदितासे बचानेकी कोशिश की गयीतो मैसूरके रेशमका भाग्य खुलजायगा। अब यह देखना बाकी है कि इस बाबत जो तहकीकात होरही है, उसका नतीजा क्या होगा। ऐसी मुसीबतोंका सामना करते हुए भी मैसूर सरकार अपने रेशम व्यवसायको सुरक्षित करनेकी जी-जानसे कोशीश कररही है। उम्मेद है कि मैसूर सरकारकी लगन ही मैसूरके रेशमको बचायगा और मैसूरके रय्यत और व्यापारी फूले-फले रहेंगे।

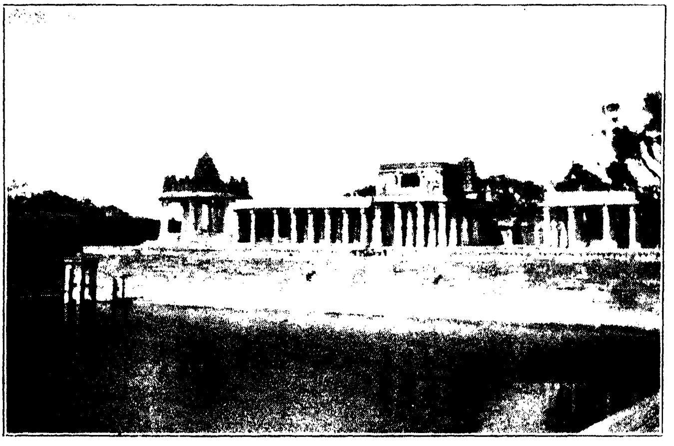
गुलाम मुल्कोंमें इच्छा और दीक्षा होनेपर भी मुसीबतोंका पहाड़ सामने रहता है। अनगिनत मुसीबतोंका सामना करता हुआ अगर, हिन्दुस्थानमें किसी देशी राज्यने व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ कदम बढ़ाया

है, तो वह मैसूर ही है। मैसूरके सब व्यवसाय-धन्धोंमें जो व्यवसाय-धन्धा बहुत चमकरहा है, वह चंदनतेलका है। इधर मैसूर सरकारकी काफी नजर है। हिन्दुस्थानमें जितना चंदनतेल खपता है, उसमेंसे पौना हिस्सा मैसूरका है। सन १९१४ की लडाईके पहले तक मैसूर की चंदनकी लकडी जर्मनीको भेजी जाती थी। इससे मैसूर सरकारको २२ लाख रूपयेकी आमदनी होती थी। पिछली लडाईमें एकदम चंदन लडकीका जर्मनी भेजना बंद होगया, जिससे मैसूर सरकारकी आमदनी भी घटगयी। अब उससमयके व्यवसाय-धन्धोंके डाइरेक्टरने सरकारके सामने यह सलाह पेश की कि यहीं मैसूरमें चंदनतेल निकालनेका इन्तजाम किया जाय। इस तरफ बंगलूरकी इंडियन इन्स्टिट्यूट आफ साइन्सने जर्मनीके बराबर तेल निकालनेका अन्वेषण किया। हालांकि उससमय यूरोपसे जरूरत मशीनें मंगानेकी सुबिधा न रही; तो भी मैसूर सरकारने किसी तरह काम शुरु किया। सन १९१६-१७ में इस कामके लिए एक फाक्टरी खडी करदीगयी। इधर तो जरूर क्रमोन्नति हुई; लेकिन हिन्दुस्थानकी व्यापारकी मंदगी और आस्ट्रेलियाके तेलकी प्रतिद्वंदितासे जरूर मैसूरके तेलमें धक्का लगरहा है। इसव्यवसायसे भी रय्यतोंको भी काफी फायदा पहुंचरहा है।

मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंकी प्रगतिकी जड मैसूर सरकारका इंडस्ट्रीस और कामर्सका विभाग है। क्रमोन्नतिमें यह विभाग आज आधुनिक ढगोंपर खडा है। इसविभागके काबिल डाइरेक्टर होचुके। आजके डाइरेक्टर श्री रामचंद्रराव भी काफी काबिल हैं। ये डाइरेक्टर अपनी सलाहसे सरकार और प्रजाकी काफी सेवायें किया करते आरहे हैं। लेकिन खेदकी बात यह है कि इसविभागका क्षेत्र बहुकालतक स्टेटमें ही रहा। आज यह कहा जासकता है कि इसविभागका क्षेत्र विस्तृत होगया है। विदेशोंकी मार्केटें और उनकी रूप-रेखाको समझे बूझे बिना आजतो अपने व्यवसाय-धन्धोंको चालू रखना मुश्किल है। इसलिए लंदनमें



इन्डियन इन्स्टिट्यूट आफ साइन्स



मेलकोटका तालाब

इस विभागकी तरफसे एक ट्रेड कमीशनरकी नियुक्ति हुई, जिनका काम यह है कि वह बिदेशोंकी मार्केटोंको समझें, मैसूरकी चीजोंको खफानेके रास्ते निकालें और मैसूरके धन्धोंकी उन्नतिमें नयी सलाहे देते रहें। अमेरिका और यूरोपमें मैसूरकी चीजोंके लिए मार्केट बनाना ही नहीं; बल्कि मैसूरके लिए जरूरतके मुताबिक चीजोंको खरीदनाभी कमीशनरका काम है।

खुदरतके बाद मैसूरको जो मानव वर मिला है, वह इन्स्टिट्यूट आफ साइन्स है। इसवरका श्रेय सर शेषाद्रीको मिलाना चाहिये। आपने अपनी दूर दृष्टिसे ऐसा इन्तजाम किया है, जिससे यह इन्स्टिट्यूट बंगलूरमें खडी की गयी। इस इन्स्टिट्यूटके लिए मैसूर सरकारने जगह मुफ्तमें दी और ५ लाख रूपये मकानात बनानेके लिए दिये। इसके अलावा मैसूर सरकार इस इन्स्टिट्यूटको सालाना ग्रांटके तौरपर काफी रकम देती है। इसइन्स्टिट्यू द्वारा भी मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीमें काफी मदद मिली है, जो विज्ञानके साथ ताल्लुक रखती है। व्हैटलेड इन्डस्ट्री, [White Lead Industry] चंदनतेल निकालने और साबून बनानेमें इसइन्स्टिट्यूटने वैज्ञानिक अन्वेषणके रूपमें मैसूर सरकारको बहुतसा फायदा पहुँचाया है।

जिसदेशके लोग व्यवसाय-धन्धोंकी महत्ताको नहीं समझते और जिसदेशकी सरकार प्रजाकी भलाईके ख्यालसे नये साधन नहीं देती, उसदेशमें एक मैसूर देशी राज्य ऐसा निकला, जो अपने तंगदायरेमें देशके व्यवसाय-धन्धोंको बढानेके काममें लगगया। फ्रांसकी सरकारने व्यवसाय-धन्धोंको प्रोत्साहन दिया, जर्मनीकी सरकारने अपने व्यवसाय-धन्धोंको फूला-फला बनाया और जापानकी सरकारने शुरुसे अपने व्यवसाय-धन्धोंमें क्रांति पैदाकी; लेकिन ब्रिटीश सरकारके नीचे मैसूर सरकारको व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ इसप्रगतिसे दौडना कम

तारीफकी बात नहीं! डा. बुचाननकी लखनीसे यह मालूम होता है कि पहले मैसूरमें कृषि, गुड और शक्कर बनाना, कताई-बुनाई और बोरे बनाना, बस येही व्यवसाय थे। मैसूरका वह चित्र और आजके मैसूरका चित्र सामने रखकर देखनेसे, यह कहना पडता है कि सरकार की सद्भावना और भलमनसाहतके बिना कोई देश फूला-फला नहीं रहसकता। जिससरकारमें सद्भावना और भलमनसाहत नहीं; वह सरकार नहीं; बल्कि प्रजाको चूसनेवाली डाकनी है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि कोई देश अपनी सरकारकी सद्भावना और भलमनसाहतपर ही फूल-फलसकता है। चाहिये इसमें प्रजाकी चेतना और क्रियाशीलता भी। मैसूरके महाराजाने अपनी प्रजामें चेतना और क्रियाशीलताको पैदा करनेके विचारसे मैसूर एकनामिक कान्फरेन्सको खडा कराया। हमारा ऐसा ख्याल है कि इसीकान्फरेन्सके जन्मके बादसे सरकार और प्रजामें नयी ज्योति पैदा हुई, जिसका नतीजा यह निकला कि पहले खुद मैसूर सरकार और बादको प्रजा क्रमश: अपनी जरूरतों और उन जरूरतोंकी पूर्तिके साधनोंको समझने और समझकर उस तरफ बढने लगी।

मैसूरके महाराजाने एक जगह कहा है कि सरकार और सरकारकी सूरतोंने नहीं; बल्कि प्रजाकी शक्तिने राष्ट्रोंको बनाया है। बस, आजके मैसूरके महाराजा अपनी प्रजाको इसी लायक बनानेमें लगगये। अगर हम मैसूर स्टेटकी प्रगतिपर ठीक तौरसे मन लगायेंगे तो यह मानना पडता है कि इसप्रगतिकी आडमें प्रजाकी चेतनाका उज्वल रूप देखनेमें आता है। कर्नाटक जाति मरी हुई जाति नहीं। उसका लंबा इतिहास है। उसने एक समय अपनी बहादुरी दिखायी है। शिक्षा और संस्कृतिमें वह संपन्न है। इसलिए मैसूरकी महाराजाकी तरफसे प्रेरणा मिलते ही अपनी नींदसे वह उठ खडी हुई। मैसूरकी कृषि और व्यवसाय-धन्धों और शिक्षा वगैरह बातोंमें मैसूरकी प्रजाका जीता जागता चित्र

दीखता है | आज यह कहा जासकता है कि मैसूरकी प्रजा अपनी उन्नतिके लिए आगे बढ़रही है | सन् १९११ तक मैसूरके बासिन्दे व्यवसाय-धन्धोंकी तरफ खास तौरसे नहीं बढ़े; लेकिन उसके बादमें उनकी प्रगति मार्केकी चीज है | काफी, छाय, तेल, चावल, ईंट, छप्पर चमड़ा, इंजनीयरिंग, कताई-बुनाई, रेशम, ऊन और छपाई वगैरह चीजोंमें मैसूरवाले अपनी तरफसे नये नये धन्धे निकालरहे हैं | इसमें मशीन और बिजली भी काममें लायीजारही है । हालके हिसाबसे यह मालूम होता है कि मैसूर राज्यमें मैसूरवासियों द्वारा चलाये जानेवाले छोटे व्यवसाय-धन्धोंकी संख्या २२५ है, जिनमें २० से ज्यादह आदमी काम करते हैं । मैसूरके छोटे झोपडी धन्धोंमें मार्केकी चीजें कताई-बुनाई, कार्पेट बनाना, रंगाई, सिलाई, कपडेकी छपाई, गुड बनाना, मट्टीके बर्तना बानना, खिलौने बनाना, लाखकी चीजें बनाना वगैरह हैं | इन कामोंमें भी बिजली काममें लायी जाती है | योंतो बंगलूरमें टेक्सैल व्यवसायमें प्रगतिशील दो मिले हैं, जिनकी पूंजी स्थानिक है, जिनमें ४८०० बेलकी रूई खपती है और जिनमें ८००० मजूर कामकरते हैं । फिर भी स्टेट भरमें चालीस हजार खरगे चलते हैं | इसमेंसे तीस हजार रूई और रेशमका काम और दस हजार ऊनका ही कामकरते हैं । इनके अलावा ३७५ पवर लूम चालू हैं । ऐसा कहा जासकता है कि खरगों द्वारा ८३,००० आदमियोंको काम मिलता है | यह व्यवसाय मैसूर वासियोंके हाथमें है ।

धन्धे बाजियोंको सामूहिकरूपसे व्यवसाय-धन्धोंकी उन्नतिमें संघटित होना पडता है | हमारे कहनेका मतलब यह है कि जुदे जुदे धन्धेवालोंके संघोंकी और उन धन्धोंमें आर्थिक सुबिधायें पहुँचानेके मजबूत संघोंकी जरूरत है । आर्थिक सुबिधायें देनेके बंक और सलाह-मशवरा करनेके जुदे जुदे धन्धोंको चलानेवालोंके सामूहिक संघ, ऐसी बातोंमें भी मैसूर किसी बातमें कम नहीं | आर्थिक सहायता पहुँचानेमें ऐसे तो

मैसूरमें कई बंक हैं। लेकिन मैसूर बंक ऐसी चीज है, जिसकी जड बहुत मजबूत है। इस बंककी मजबूती और काम चलानेके ढंगोंको देखकर यह कहा जासकता है कि यह जड पकडे हुए बंकोंसे कम नहीं। इसके साथ मैसूर सरकारका भी ताल्लुक है। इसके अलावा कोआपरेटिव क्रेडिट बंकोंसे भी छोटे धन्धोंमें काफी मदद मिलरही है। सारकी बात यह है कि व्यवसाय-धन्धोंमें सरकार और बंकोंकी तरफसे काफी सहायता मिलरही है। जुदे जुदे धन्धे करनेवालोंके संघ--अरेकनट ग्रोयर्स असोसिएशन मैसूर सिल्क असोसिएशन, काफी प्लांटर्स असोसिएशन, और हांडलूम वीवर्स असोसिएशन वगैरह--मजबूत और कामकी चीजें हैं। इनसबके ऊपर मैसूर चांबर आफ काममें सिरकी तरह खडा है, जो मैसूरके धन्धोंमें हिन्दुस्थानकी अर्थनीति और मैसूरके धन्धोंकी प्रगति और विघटनमें मुनासिब सलाह देती है।

परिवर्तन होता है; लेकिन वह मौकेपर होता है। मैसूरके व्यवसाय-धन्धोंकी प्रगतिने मैसूरमें ऐसा परिवर्तन करदिखाया है, जिस की रूप-रेखा समझनेसे यह मालूम होता है कि इसने मैसूर राज्यका काया-पलट करदिया है। कारण कि पहले मैसूर ब्रिटीश हिंद और बिदेशोंको अपना कच्चा माल बेचदेता था; लेकिन आज मैसूरका कच्चा माल मैसूरमें ही सुरक्षित किया जारहा है और मैसूरमें तय्यार की गयी चीजोंसे हिन्द और एक अंशमें विदेश सोभरहे हैं। यह खुशीकी बात है कि आज हिन्दमें एक मैसूर राज्य ऐसा है, जो व्यवसाय धन्धोंका दिमाग लेकर दौडरहा है। यह सच है कि मैसूर व्यवसाय-धन्धोंमें आगे है; लेकिन इस प्रगतिसे मैसूरकी प्रजा सुखी है, या नहीं यह समझनेकी बात है।

यह माननेकी बात है कि मैसूर सरकार अपनी प्रजाकी आर्थिक दशाको मजबूत बनानेके जतनमें है और इसने इस तरफ बहुत कुछ

कर दिखाया है | यह तो कहाजासकता है कि जहां हिन्दवासीकी सालानी औसत आय करीब तीस रूपया है, वहां मैसूरवासीकी ६८ रूपया है | अगर हम व्यवसाय-धन्धोंमें अग्रगामी यूरोपके देशोंकी औसत आयपर सोचेंगे तो, यह मानना पडता है कि व्यवसाय-धन्धोंकी तरक्कीसे मैसूरकी प्रजा फूली फली नहीं| कृषि और व्यवसाय-धन्धोंमें देशी राज्यों और कई ब्रिटीश प्रांतोंसे दुगुनी उन्नति प्राप्त मैसूर राज्यकी प्रजा सुखी नहीं तो, आप ही आप यह विचार उठसकता है कि इसमें जरूर मैसूरके महाराजा दोषी होंगे; लेकिन यह बात नहीं | ऐसा समझना बडा अन्याय है। यह इसलिए कि मैसूरके महाराजाका राजकोषपर हाथ नहीं-जैसे सब देशी राज्योंमें होता है । उनके खर्चकी रकम कौंसिल द्वारा मंजूर कीजाती है | वह भी महाराजा खुद अपनेलिए खर्च नहीं करसकते। इसमेंसे आधा हिस्सा कई रूपोंमें बांटदेना पडता है । दूसरी बात यह है कि वह मौजी जीव हैं या विदेश भ्रमणोंमें फजूल खर्च करते हैं, ऐसी बात भी नहीं । फिरभी प्रगतिशील मैसूर राज्य क्यों फूला-फला नहीं, इस बात पर सोचनेसे यह मानना ही पडता है कि इसका सारा दोष साम्राज्यवादका ही है | यों तो ब्रिटीश साम्राज्यका बोझ सारे हिन्दपर है, जिससे हिन्द गारत होरहा है । मैसूर राज्य पर तो साम्राज्यका बोझ दो तरफा है, जिससे सरकार और प्रजा परेशान हैं | एक तरफकी बात यह है कि मैसूर सरकारको सालाना करीब २४ लाख रूपयेकी सबसीडी भरनी पडती है | इस बोझदार सबसीडीसे सरकारका हाथ बंधा हुआ है, जिससे यह चाहनेपर भी प्रजाकी भलाईके काम करने नहीं पाती और सद्भावनासे स्टेटकी भलाईके लिए उठाये गये कामोंको संभालनेमें दबजारही है | यह देखनेमें तो सरकार की जिम्मेदारीका बोझ है; लेकिन यह बोझ प्रजापर पडे बिना कैसे रहसकता है ? इसके अलावा साम्राज्यकी आयमें (Imperial revenue) आयात-निर्यात, (Customs) निमक, आबकारी, सिक्के करेन्सी और डाकफीसकी सूरतमें मैसूर स्टेटसे करीब १४० लाखकी रकम आती हैं। इसका भी बोझ प्रजापर पडे बिना कैसे रहसकता है ? इस

दोनों बोझोंसे प्रजा दबे बिना कैसे रहसकती ? अब प्रजा सुखी रहें कैसे ? ऐसी हालतमें पाठक यह भी समझसकते हैं कि सारी मैसूर स्टेटकी आय बहुत नहीं होसकती। हमने एक जगह लिखा है कि मैसूरकी आय अंदाजन चार करोडकी है। इससे पाठकोंको यह नहीं समझना चाहिये कि यह आय नैसर्गिक है। मैसूर सरकारने अपनी तंग हैसियतमें राज्यके कामोंको संभालनेके लिए कृषि और व्यवसाय-धन्धोंको बढाया, जिससे प्रजाकी कर देनेकी शक्ति बढजाय और राज्यके काम चालू रहें। इससे मैसूरकी प्रजा फायदेके बदले घाटेमें है, ऐसा कहा जासकता है। लेकिन हम यह मानते हैं कि जिसदिन ब्रिटीश साम्राज्यका बोझ मैसूरके सिरसे टलेगा, उस दिन सचमुच हिंदमें मैसूर ही रामराज्य होकर रहेगा। तबतक यह मानना दुस्तर है कि मैसूरकी प्रजा सुखी है और मैसूरके महाराजाके प्रयत्न श्रेयस्कर हैं। हां, हम तो मैसूरके महाराजा और उनकी सरकारके साहसकी तारीफ किये बिना नहीं रहसकते। हां, मैसूरकी कृषिकी और व्यवसाय-धन्धोंकी उन्नतिपर मुनासिब फैसला देसकनेवाले हमारे सुशिक्षित पाठक ही हैं। हमारा काम तो मैसूरकी बातोंको पेश करना ही है। जगहकी कमीसे हमने सिर्फ खास बातोंपर ही रोशनी डाली है। अगर मैसूरके हरएक व्यवसायपर रोशनी डाली जाती तो, कितना ही अच्छा होता; लेकिन हम मजबूर हैं। इसलिए तंबाकू, दियासलाई, खादी और चीनी बर्तन वगैरह ऐसे कितने ही व्यवसाय हैं, जिनपर कुछ लिखना जरूरी है; लेकिन यह हो न सका। हम आशा करते हैं कि हमारे सुशिक्षित पाठक हमारी कमजोरीपर तरस खायेंगे। हां, अंतमें हम खादीके बारेमें इतना ही लिखना चाहते हैं कि हिंदमें एक मैसूर सरकार ही है, जो खादीका पोषण कररही है। अब तक अंदाजन स्टेटमें ४०,००० रूपयेकी खादी तय्यार की जाती है, जिसमेंसे मैसूर सरकार अपने लिए १०,००० रूपयेकी खादी काममें लाती है। यों तो मैसूर सरकार देशी चीजोंका पक्षपाती है; बल्कि केवल विशेष परिस्थितियोंमें वह विदेशी चीजें भी खरीदती है।

मैसूरमें शिक्षा

एक जगह श्री आनंद कुमारस्वामीने लिखा है—"अंग्रेजी सरकारकी खूबी यह है कि जिसबातने बेहद हानि पहुँचायी है, वही आशीर्वादरूप मालूम होती है। इसीका यथार्थ उदाहरण शिक्षा है।" सचमुच श्री आनंद कुमारस्वामीने अंग्रेजी सरकारका और उसकी तरफसे चालू शिक्षाका ऐसा सुंदर चित्र खींचकर हमारे सामने रखा है—चाहे जिसे समझनेमें विलंब हुआ हो; लेकिन आज वह हमारे सामने प्रत्यक्ष दीखरहा है। हमारा ऐसा ख्याल है कि करीब ३० या २० सालके पहले तक अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रप्त शिक्षाका रूप और उसकी भयंकरताको हिंदवासी समझ न सके। यह सच बात है कि आज हमारे देशमें हितकरको अहितकर, स्वाभाविकको अस्वाभाविक, रूचिकरको अरूचिकर और यहां तक कि तथ्यको मिथ्या समझा जारहा है। इसका

नतीजा यह निकला कि लोगोंकी सोचनेकी शक्ति गुमगयी, जैसे हमारे देशमें जाति-वर्ण भेद हैं, इसी तरह लोगोंके विचार विभिन्न और संकुचित होगये, पारस्परिक सहकार-भाव मिटगया और यहां तक कहा जासकता है कि यह हिंद एक तरह निर्जीवसा होगया। करीब डेढ सौ सालकी गुलामी और उस गुलामीकी शिक्षाने हिंदको ऐसा बदल दिया कि शायद ही यह एक सुसंघटित राष्ट्र होगा। इतना हुआ, तब भी हिंद टससे मस नहीं हुआ। इसी शिक्षाको वरदान समझकर हिंद बढने लगा। लेकिन हिंद की आंखें खुली तब जब, यह मालूम हुआ कि शिक्षासे ही बेकारी और गरीबी बढरही है। जीवन याने नव-नूतनता है। अगर शिक्षा जीवनको फीका और नंगा बनाती है तो, वह शिक्षा क्यों? चाहिये तो ऐसी शिक्षा, जिससे देशका आर्थिक राजनैतिक और सामाजिक जीवन उन्नत हो और देशवासी संसारकी नजरसे गिर न जाय; लेकिन हिंदको ऐसी शिक्षा बदी नहीं। पहलेसे अंग्रेजोंकी समझमें यह बात घुस गयी कि हिंदमें ऐसी शिक्षा दी जाय, जिससे हिंद इग्लैंडसे अलग न होजाय और हिंद इग्लैंडकी महत्ताको समझता रहे। बस, हिंदमें दी जानेवाली शिक्षाका यही आशन है, न कि और।

अंग्रेज अपनी मनमानी शिक्षाको ब्रिटीश हिंदमें ही नहीं, बल्कि देशी राज्योंमें भी फैलानेका विचार रखते आरहे हैं, जिससे सारा हिंद एक तागेमें बंध जाय। इस शिक्षाका श्रीगणेश मैसूरमें सन १८५४ में हुआ, ऐसा कहा जासकता है। इसीसाल मैसूरके महाराजा तृतीय श्री कृष्णराज ओडयरने सन १८५४ की हालीफाक्सकी डिसपाचके मुताबिक मैसूरमें एक अंग्रेजी स्कूल चालू की और वह मिशनरी द्वारा अपने राज्यमें और स्कूलोंको खुलवानेके जतनमें लगगये। नतीजतन मिशनरियोंने एक तरह स्टेटभर की खास जगहोंमें स्कूलें खोलदी। बंगलूर वेसलेयन मिशनका आदि पीठ

बनगया। स्टेटकी सरकारकी तरफसे मिशनरियोंको काफी आर्थिक सहायता मिलती थी। ऐसा मालूम होता है कि उससमय मैसूर स्टेट शिक्षाके लिए १७ हजार रूपया खर्च करती थी। पाठकोंको मालूम ही है कि सन १८३१ से यह राज्य कमीशनरोंके अधीन होगया। अबसे सन १८८१ तक शिक्षाकी तरफ साधारण ध्यान दियाजाता था। लेकिन इसके बाद जब फिर राज्य परंपरागत राजवंशजोंके हाथमें आगया, तबसे शिक्षाकी उन्नति माकेंकी चीज है। अबसे फिर खर्च और शिक्षा-विधानमें भी बड़ा परिवर्तन आगया। सन १८८१ तक तीन लाख, अस्सी हजार सालाना शिक्षाका खर्च था और विधान वही मिशनरीका। लेकिन सन् १८८१ से शिक्षाके खर्च और विधानमें बिलकुल काया-पलट होगया। सन १९०१ तक स्टेटकी शिक्षाका खर्च ११ लाख रूपये तक बढगया और शिक्षामें धन्धोंकी शिक्षाकी तरफ विशेष ध्यान दिया जाने लगा। नतीजतन स्टेटमें क्रमशः इन्डस्ट्रियल स्कूलें चालूकी गयी। इसके बाद आजके महाराजाका जमाना शुरु होता है। यह मानना पड़ता है कि अबसे स्टेटमें एक तरह प्राण आने लगता है। कृषि और व्यवसाय-धन्धोंमें जैसे जान फूंक दी गयी, उसीतरह शिक्षामें भी। हमने पहले एक जगह यह लिख ही दिया है कि मैसूर एकनामिक कान्फरेन्स ही कृषि और व्यवसाय-धन्धोंका आधार है। ऐसे ही मैसूर एकनामिक कान्फरेन्ससे शिक्षामें भी क्रांति लायी गयी। इसकान्फरेन्समें महाराजाने यह घोषित किया कि सब आर्थिक रोगोंका इलाज शिक्षा है। सब बातोंसे इसतरफ ज्यादह ध्यान दिया जाना चाहिये। शिक्षाके खर्चमें कंजूस बनना नहीं चाहिये। महाराजाकी बातोंका क्रिया-रूप इस तरह दिया जासकता है कि आज मैसूरमें लोअरसेकंडरी तक निशुल्क शिक्षा दी जाती है। हाईस्कूलसे कालेज शिक्षा तक २५ फीसदी विद्यार्थिवेतन दिये जाते हैं। गरीब लडकोंको रहने और खानेका इन्तजाम किया जाता है। इन्हीं बातोंको संख्यामें इसतरह रखाजासकता है। शिक्षाका खर्च रू ६६,४२,१९६ है, जिसमेसे हाईस्कूलों और कालेजोंके विद्यार्थियोंसे रू

५१,०७,७७७ की रकम मिलती है। बाकी रकम लोकल और मुनिसिपल संस्थाओंसे मिलती है। इसपर यह कहा जासकता है कि मैसूरकी आबादीपर आदमीका शिक्षा-खर्च एक रूपया सात पाई है, जिसमेंसे तेरह आने तीन पाई सरकारकी तरफसे दी जाती हैं। यह हम सन १९३६-३७ की बात लिखरहे हैं। लेकिन सन १९३६-३५ में औसत खर्च १ रूपया था। जिसमेंसे मैसूर सरकारने बारह आने तीन पैसे दिये थे।

आज मैसूरमें स्कूलोंकी संख्या काफी है। यह संख्या ७७३१ है, जिनमें आर्ट कालेजस १०, प्रोफेशनल कालेजस ३, हाइस्कूलस ३९, मिडिल स्कूलस ३४०, प्राइमरी स्कूलस ६३५५, ट्रेनिंग स्कूलस ११, दूसरी विशेष स्कूलस १३५, और प्राइवेट स्कूलस ८३८ हैं। सन १९३१ के हिसाबसे मैसूर की आबादी ६५२३१६९ है। मैसूरका क्षेत्रफल २९४२५ वर्गमील है। यहां १०२ शहर और १६४८३ गांव हैं। इसपर यह कहाजाता है कि मैसूरमें ३·८ वर्गमीलमें और ८३२ की आबादीकेलिए एक स्कूल है। स्टेटकी कुल पुरुषोंकी आबादीमेंसे ८·०१ फीसदी और कुल स्त्री-संख्यामेंसे २·४४ शिक्षा प्राप्त करती है। दोनोंको मिलाकर कुल आबादीमेंसे ५·३ फीसदीको शिक्षा दी जारहीं हैं।

यह माननेकी बात है कि हिन्दका शिक्षा-विधान देशकी परिस्थितिके बाहरकी चीज है। लेकिन यद्यपि मैसूरके महाराजा आधुनिक शिक्षा–विधानके विरोधी हैं, तथापि वह अपने तंगदायरेमें राज्यके शिक्षा-विधानमें नया प्रकाश लारहे हैं। इसके लिए उन्होंने यह समझा कि मैसूर शिक्षा-विधान मद्रास विश्वविद्यालयसे अलग किया जाय और मैसूरमें अपना एक विश्वविद्यालय खोल दिया जाय। देशी राज्योंमें पहले पहल सन १९१६ में मैसूर विश्वविद्यालयकी स्थापना हुई। राज्यकी जरूरतोंके मुताबिक शिक्षामें परिवर्तन लानेकेलिए इस विश्वविद्यालयकी स्थापना कीगयी। बादको विश्वविद्यालयकेलिए आवश्यक

अंग-उपांगोंको पक्की नींवपर खडा करते हुए, मैसूर राज्यने इसी विश्वविद्यालयको आधुनिक ढंगोंपर एक उच्चकोटिका बनाया है। हिंद और हिंदके बाहर भी आज मैसूर विश्वविद्यालयका आदर है और इसके विद्यार्थी दूसरे यूनिवर्सिटियोंमें माने जारहे हैं।

डिग्री और नौकरीके मोहमें पडकर हिंदवासियोंने अंग्रेजी शिक्षाको अपनाया है। डिग्रीसे नाम होगा और नौकरीसे उदर-पोषण होगा, ऐसा पढने-लिखनेवालोंका ख्याल है। ऐसे मोहमें पडकर हम हिंदवासी अपने खास व्यवसायोंको भी छोडकर अंग्रेजी शिक्षाकी तरफ बहुत बढगये। और यहां तक कि इसशिक्षाको अपने बच्चोंको दिलानेके लिए कई मां-बापोंने अपनी जायदादोंको भी फूंक दिया है। यह भेडिया-धसान तो तब तक सोभता था, जब तक नौकरियोंकी कमी नहीं। सरकार तो कामधेनु नहीं कि सामने आनेवाले सबको नौकरियां दी जायं। हमारी विदेशी सरकार धर्मछत्र नहीं कि सब पढे-लिखों के लिए खोल दिया जाय। उसके पीछे बडा परिवार है। संसार त्यागी सन्यासिनी है कि हमारी सरकार अपने भाई-बंधुओंका ख्याल किये बिना हमारा ख्याल करे। बेचारी सरकारके पास हैं कितनी नौकरियां? जो हैं, उनमेंसे थोडा अंश तो अपने भाई-बन्धुओंको देना ही पडता है। फिर भी जो बची हैं, उनमें अधिकोंको गुंजाइस कहां? सारे हिंदमें जितनी नौकरियोंकी गुंजाइस है, उनसे कई गुने पढे-लिखे होगये। तब जाकर यह बात पैदा हुई कि इसविनाशनी शिक्षासे कोई प्रयोजन नहीं। अब निठल्ले पढे-लिखोंकी गति क्या है? और भी इसी शिक्षाके फेरमें हाइस्कूलों और कालेजोंमें भरे हुए लडकोंकी गति क्या है? इसशिक्षामें दक्ष लोग और किसी कामके हैं तो, वह भी नहीं। इसी लिए आज हिंदमें इन पढे-लिखोंका एक सवाल होगया। इस सवालपर फिर दूसरा सवाल यह उठा कि इसशिक्षामें कौनसा सुधार करनेसे फिर पहला सवाल न उठेगा। पाठकोंको मालूम ही है कि

मैसूर यूनिवर्सिटीका आदर्श जरूरतोंके मुताबिक शिक्षा विधानमें सुधार लाना है। इसलिए विश्वविद्यालयके अधिकारियोंने जब यह समझा कि सिर्फ पढने-लिखनेसे याने चालू विश्वविद्यालयकी उपाधियोंसे शिक्षित अपनी जिन्दगीको सुखवंत नहीं बनासकेंगे और उनके सामने जीवनका खास सवाल उदरपोषण भयंकर होगा तो, झट उन्होंने कृषि और सिविल, मेकानिकल, एलक्ट्रिकल इंजनीरिंग सम्बंधी शिक्षा देनेलगे, जिससे विद्यार्थी अपनी रोजगारी कमाने लायक हो। मैसूर यूनिवर्सिटीने जब इसशिक्षाकी महत्ताको पाया, तब उसने एक कमेटी कायम की, जिसका काम यह था कि वह इसबातपर सोचे कि जिनसाधनोंको अपनानेसे विद्यार्थी शिक्षा पूरा करनेके बाद स्वावलंबी होसकेंगे। इसकमेटीकी सलाहपर मैसूर विश्वविद्यालयने सेरिकलचर (रेशमसम्बंधी) पशु शास्त्र ओटंबायल इंजनीयरिंग, कामर्स, छपाई, बैंडिंग, संगीत, गृह-शास्त्र, चित्रकला और ड्राइंग वगैरह विषयोंकी शिक्षा दिलानेका इन्तजाम किया है।

वृत्ति-शिक्षापर मैसूर सरकार ध्यान देती आरही है। इस सम्बंधमें मध्यम और हाइस्कूलें चालू की गयी। प्राइमरी स्कूलकी शिक्षाके बाद विद्यार्थी हाइस्कूलकी शिक्षामें वृत्ति शिक्षा लेसकता है। फिर हाइस्कूलके बाद कालेजमें भी वृत्ति-शिक्षा पानेका काफी इन्तजाम है। इसबातपर गौरकरनेसे यह मानना पडता है कि मैसूर यूनिवर्सिटी अधविश्वासियोंकी तरह शिक्षा फैलाना ही नहीं चाहती; बल्कि वह यह भी ख्याल करती है कि ऐसी शिक्षाका इन्तजाम किया जाय, जिससे आगे चलकर विद्यार्थी अपनी जिन्दगीमें स्वावलम्बी होनेमें कोई तकलीफ न हो। इस दृष्टिसे देखनेसे यह लिखना पडता है कि मैसूर यूनिवर्सिटी अपनी शिक्षाको राष्ट्रीय बनानेका जतन कररही है, जो मद्रास और बम्बई वगैरह यूनिवर्सिटीयोंको भी अनुकरणीय है।

यूनिवर्सिटीकी तरफसे व्याख्यान दिलानेकी एक स्कीम चालू है, जिसके लिए स्टेटके बाहरके भी नामी व्यक्तियोंको बुलाकर व्याख्यान दिलाये जाते हैं। यों तो यह सब यूनिवर्सिटियोंमें चालू है; लेकिन इसतरफ मैसूरकी यह विशेषता है कि यहांके अध्यापकोंका समय-समय पर एक दल बनाया जाता है, जो निर्धारित जगहोंपर जाकर चुने हुए विषयोंपर व्याख्यान देता है। ऐसा करानेसे ग्रामीण और नगरके जानोंको बहुतसा फायदा होरहा है।

समाज-क्षेम [Social welfare] कार्यकी तरफ भी मैसूर विश्वविद्यालयका ध्यान है। अब यह जतन किया जारहा है कि यूनिवर्सिटी के कुछ अध्यापकों और विद्यार्थियोंको समाज-क्षेम-कार्यमें तालीम दिलायी जाय, जिससे वह गावों और शहरोंमें जाकर काम करसके। इसके अलावा जगह-जगहोंपर आश्रमके ढंगपर सेटिलमेंट्स बनवानेका भी प्रयत्न किया जारहा है, जिससे विद्यार्थी चुट्टीके दिनोंमें वहां जाकर रहसकेंगे और साधारण प्रजासे सम्बंध रखकर देशकी समस्याओंको समझ सकेंगे। इसकामपर पहले सर मिर्जा इस्मायलने अपने मद्रास यूनिवर्सिटीके दीक्षांत भाषणमें रोशनी डाली। उसके बाद सी. एफ अंड्रूसने भी मैसूर-विश्वविद्यालय-दीक्षांत भाषणमें विशेष प्रकाश डाला। अबतक एक तरह ऐसा प्रयत्न तो मैसूरमें चालू ही है; लेकिन यह यूनिवर्सिटिकी तरफसे नहीं। अभी हालकी यूनिवर्सिटीकी बैठकमें इसबातपर प्रस्ताव पास किया गया है। इससे हम आशा रखते हैं कि इसकामको शुरुकर, मैसूर युनिवर्सिटी दूसरी युनिवर्सिटियोंके लिए आदर्शप्राय होगी।

हम यहां मैसूरकी एकाध उपयोगी शिक्षा-संस्थाओंका अपने पाठकोंसे परिचय कराना चाहते हैं। हम यह मानते हैं कि हमारे पाठक श्री चामराजेंद्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूटके बारेमें जानकारी हासिलकर खुश

होंगे। श्री चामराजेंद्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूट मैसूरकी एक उपयोगी संस्था है। यह आजके महाराजाके पिता स्वर्गीय महाराजा श्री चामराजेंद्र ओडयरके नामसे स्थित है। इस संस्थाके भवनका शरीर और इसका बनाव देखकर एक दम लोग आकर्षित होसकते हैं और यह राय बनायी जासकती है कि इसके बनानेमें काफी रकम लगी होगी। लेकिन संस्थाओंकी महत्ता उसके रूप और उसपर लगी रकमसे नहीं; बल्कि उसके कार्यपर टिकती है। इससंस्थाकी नींव डाले ४६ साल होचुके। तब तो यह संस्था साधारण मकानमें थी। आजका यह भवन आजके महाराजाने सन १९०६ में बनवाया है। हिंदमें बहुतसी ऐसी संस्थायें हैं, जिनके मकान बहुत लंबे—चौडे और बडी लागतपर खडे किये गये हैं। लेकिन मैसूरकी यह संस्था सिर्फ मकानमें ही नहीं, बल्कि अपने कार्य—क्षेत्रमें भी सचमुच बहुत उपयोगी और आदर्शप्राय है। इस संस्थामें एक बार जाकर देखनेसे यह मानना पडता हैं कि स्वर्गीय श्री चामराजेंद्र ओडयर कला-प्रेमी ही नहीं; बल्कि ऊंचे दर्जेके राजनीतिज्ञ रहे होंगे। आधुनिक शिक्षा और इसशिक्षाके कारण वर्द्धमान बेकारी और गरीबीसे पढे-लिखोंको दूररखना है तो, चाहिये शिक्षामें सुधार लाना और वह सुधार यही होसकता है, जो शिक्षाके बाद पढे-लिखोंको अपनी रोटी कमानेमें काबिल बनासकें याने उनको स्वावलंबी बनासकें। बस श्री चामराजेंद्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूट वह है, जिसमें रोटी कमानेकी शिक्षा दी जाती है। सचमुच यह संस्था मैसूर-प्रजाके लिए वरदान है। यहां एक पंथ दो काज होते हैं। एक शिक्षा; दूसरा उदर—पोषण साधन हैं। इसंसस्थाको खडाकरनेका उसूल इसतरह बताया जासकता है:—[१] मैसूरमें चालू धन्धोंको बढाना [२] मैसूरमें ऐसे धन्धोंको दाखिल कराना है, जिनके फूलने-फलनेकी आशा है[३] राज्यके लालोंको कलाओं, हाथकी कारीगरियों और व्यापारमें ऐसी तालीम दी जाय, जिससे वह अपनी जिन्दगीमें गुजर-बसर करसकेंगे। [४] चीजोंको बनानेमें सुंदरता कैसे लायी जाय और कलाको व्यवसाय-

धन्धोंमें कैसे काममें लाना चाहिये, इसकी शिक्षा दीजाय।

श्री चामराजेंद्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूटमें शिक्षा ही नहीं दी जाती; बल्कि शिक्षाके बाद काम भी देनेकी जिम्मेदारीको अधिकारियोंने अपनाया है। इससंस्थामें एक कारखाना भी है, जहां बडे पैमानेमें चीजें तय्यार की जाती है। इसलिए विद्यार्थी बेफिक्र शिक्षाके बाद यही रहकर अपनी रोटी भी कमालेसकते हैं और साथ ही साथ और सीखभी सकते हैं। इससंस्थाके कारण राज्यके झोपडी धन्धों और वृत्ति-शिक्षामें एक तरह क्रांतिसी हुई, ऐसा कहा जासकता है।

यहां लकडी और लोहोंका काम होता है तरह तरहके लकडी लोहोंसे जितनी चीजें बनायी जाती हैं या नये नमूने अपनाये जाते हैं, वह सब काम यहां सिखाये जाते हैं। लकडीके कामोंमें कुर्सी, टेबिल, बेंच और कटिया वगैरह चीजोंके बनानेका काम कारपेंटरी एक तरह जीता-जागता धन्धा है, जिसमें आय काफी है। इसकाममें जरूरत चीजें मैसूरमें ही मिलसकती हैं और इसकी मार्केट भी मैसूरमें है। सबसे अच्छी और बहुत मिलनेवाली लकडी जो मैसूरमे है, वह गुलाबी लकडी है। इसलिए यहां गुलाबी लकडी ज्यादह काममें लायी जाती है। इस लकडीकी सुंदर, कलापूर्ण और नये ढंगकी मैसूरकी चीजोंकी हिंदमें ही नहीं; बल्कि हिंदके बाहर भी मांग और कद्रदानीभाव है। मैसूरका रतनकाम (Rattan work) याने पेटी, डलिया और ट्रे वगैरह मैसूरमें बनायी जानेवाली चीजें बहुत चलती हैं और यहां तक कि इन चीजोंकी इंगलैंड और अमेरिकामें भी मांग और कद्र है। चंदनलकडी और हाथी-दांतसे बनायी जानेवाली चीजोंमें मैसूर काफी ख्याति प्राप्त कर चुका है। जैसे ट्रावनकूर हाथीदांतकी चीजोंसे काफी नामी होगया है, वैसे ही मैसूर चंदनलकडीकी चीजोंसे। चंदनलकडीसे काम सिर्फ मैसूरके दो तालूकोंमें होता था; लेकिन आज इसकी सूरत इतनी

बढगयी कि मैसूरके कई लोग इसपर गुजर-बसर कररहे हैं। हमारी समझमें इसका सारा श्रेय श्री चामराजेंद्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूटको ही मिलना चाहिये।

[१] ड्राइंग और चित्रकला [२] मोडलिंग [३] व्यवसाय-धन्धोंकी कक्षायें, इनकी शिक्षा टेक्निकल इन्स्टिट्युटमें दी जाती है। इसशिक्षाका परिमित काल पांच साल है और कारपेंटरी और काबिनेट बनानेकी शिक्षा छ: सालमें दी जाती है।

शिक्षाके अतिरिक्त यहां एक कारखाना चलायाजाता है। यहां अनुभवकी शिक्षा दीजाती है। इससंस्थामें इस तरह शिक्षा और अनुभव पाकर विद्यार्थी आसानीसे रोटी कमाने लायक होजाते हैं और चाहे तो इससंस्थामें रहकर या बाहर जाकर योग्य बनसकते हैं। इस संस्थाकी कार्यवाहीको समझनेके बाद यह कहाजासकता है कि ऐसी संस्थाओंका बोझ सरकारपर नहीं पडता। कितना अच्छा हो कि हिन्दमें हर एक जगह ऐसी संस्थायें खोली जायं। हम आशा करते हैं कि ऐसी संस्थाओंको चलाकर प्रांतिक और देशी राज्योंकी सरकारें झोपडी-धन्धों और बेकारीमें सहायक होंगी।

श्री चामराजेन्द्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूटसे भी कृष्णराज टेक्निलाजिकल इन्स्टिट्यूट ऊंचा और कामकी संस्था है, जिसमें ललित कलाओं झोपडी-धन्धों, तरह तरहकी देशी वृत्तियों और नयी रोशनीके धन्धोंकी शिक्षा दीजाती है। लेकिन यह मानना पडता है कि इसकी बुनियाद श्री चामराजेन्द्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूटके आधारपर है। जहां श्री चामराजेन्द्र टेक्निकल इन्स्टिट्यूटमें साधारण शिक्षा दीजाती है, वहां श्री कृष्णराजेन्द्र टेक्नलाजिकल इन्स्टिट्यूटमें विशेष शिक्षा दीजाती है, जो आधुनिक विज्ञानपर अवलंबित रहती है। विशेषताकी बातको छोडकर

और बातोंमें श्री कृष्णराजेन्द्र टेक्नलाजिकल इन्स्टिट्यूट श्री चामराजेन्द्र टेन्कलाजकल इन्स्टिट्यूटकी बडी बहिन है, इसलिए हम इससंस्थापर ज्यादह रोशनी नहीं डालना चाहते। हां, हम इससंस्थाके सम्बन्धमें इतना ही लिखना चाहते हैं कि इससंस्था द्वारा मैसूरके छोटी-धन्धों, कलाओं और व्यवसाय-धन्धों और वृत्तियोंकी शिक्षामें बडी प्रगति होरही है। इन दोंनो और इनके अलावा कृषि और धन्धोंकी शिक्षा देनेवाली मैसूरकी छोटी और बडी संस्थाओंको देखकर यह माना जासकता है कि मैसूर राज्य शिक्षितोंको स्वावलम्बी बनानेमें तल्लीन है।

मैसूरमें स्त्री-शिक्षाकी बडी प्रगति है। प्रारम्भिकसे लेकर कालेज शिक्षातक स्त्रियोंकेलिए पाठशालायें मैसूर राज्यमें हैं। हम उनसब संस्थाओंका ब्योरा और उनमें दीजानेवाली शिक्षापर विशेष रूपसे न लिखकर, अपने पाठकोंके सामने स्त्रीयोपयोगी एक संस्थाकी रूप-रेखा खींचना चाहते हैं। इससे पाठकोंकोयह नही समझना चाहिये कि बाकी संस्थायें गणनीय नहीं। लेकिन स्त्रियोंकेलिए वोकेशनल इन्स्टिट्यूट एक तरह कल्प वृक्ष है। इसलिए हम इसी एक संस्थाका अपने पाठकोंसे परिचय कराना चाहते हैं। इससंस्थामें पहले विधवागृह था। लेकिन सन १९३० में यह वोकेशनल इन्स्टिट्यूटमें बदल दीगयी। यह संस्था सुहागिनों और विधवाकेलिए बहुत उपयोगी है। यहां शिक्षा पाकर स्त्रियां शिक्षित ही नहीं; बल्कि स्वावलम्बी होसकती है। स्त्रियोंकेलिए योंतो संस्थायें खोली जासकती हैं; लेकिन उनमें नीतिशीला कार्यकर्ता नहीं रहती तो, स्त्री संस्थायें औरकी और होजाती हैं। सरकारकी दीक्षासे हम इस संस्थाकी अवैतनिक सुपरिंटेंडेंट श्रीमती तेबोल्दकी तारीफ किये बिना नहीं रहसकते। आपका व्यक्तित्व और व्यक्तित्वसे भी आपकी नैतिक शक्ति और सेवाभाव ही इस संस्थाके प्राण हैं।

इस संस्थामें रहनेका भी इन्तजाम है। यहां मैसूरवासिनियोंके

अलावा बाहरवालियोंको जो शिक्षा देनेका इंतजाम है। प्राय: बाहरवालियों और स्थानिकवासिनियोंसे -जो शुल्क और अपना खर्च देखकरती हैं-पैसा लिया जाता है। विशेषतः ऐसी स्त्रियां ही यहां रहती हैं और काम सीखती हैं, जो शुल्क और अपना खर्च नहीं देसकती। जो हो, यह मानना ही पडता है कि इस संस्थासे आमदनी कम है। इस संस्थाकी बडी विशेषता यह है कि यहां अंधियों और गूगियोंको भी शिक्षा दीजाती है। सचमुच इनको जो शिक्षा दीजाती है, वह मार्केकी है।

यहांकी शिक्षाकी रूप-रेखा इस तरह खींची जासकती है :— (१) सिलाई और सिलाई सम्बन्धी तरह तरहके काम। (२) कपडेपर सीनेके तरह तरहके सुन्दर काम। (३) बुनाई (४) साधारण शिक्षा, जिसमें कनडा, हिन्दी और अंग्रेजी भाषायें हैं। (५) रसोई बनानेकी शिक्षा;

यहां पढानेवाली सब अध्यापिकायें सुशिक्षिता और अनुभवप्राप्ता होती हैं। यहां लन्दनकी नामी गरल्स और गिल्ड्स इन्स्टिट्यूट की परीक्षायें होती हैं। यहांकी विद्यार्थिनियों द्वारा तय्यार की गयी चीजें मार्केकी हैं। इससे यह समझा जासकता है कि यहांकी शिक्षा उच्च कोटिकी है, जिससे विद्यार्थिनियां स्वावलम्बी होसकेंगी।

श्रीमती तेबोल्दकी देख-रेखमें जो दूसरी संस्था चालायी जाती है, वह नर्सरी स्कूल और किण्डरगार्टेन है। यह संस्था सारे दक्षिण हिंदुस्थानकी सबसे बडी संस्था है। यह माना जासकता है कि इस संस्थाके कारण मैसूरका सिर ऊंचा है। शिशु शिक्षाकेलिए इससे बढकर कोई संस्था हिन्दभरमें नहीं, ऐसा हमारा ख्याल है। जो लोग यह मानते हैं कि पांच सालके अंदर शिक्षा नही दीजानी चाहिये, उनसे हमारी बिन्ती यह है कि वह एक बार इससंस्थाको देखेंगे। इससंस्थामें २ से सात साल तकके शिशु हैं। वहांके शिशु हमेशा खुश और हंसमुख

रहते हैं। यहां कोई यह नहीं पासकता कि शिक्षासे शिशु परेशान हैं। खेलके साथ शिक्षा देना, यहांके शिक्षा-विधानका मूल रहस्य है। यहांकी शिक्षाका आधार कनडी भाषा है। योतो अंग्रेजी भी पढाई जाती है। शिक्षासे बढकर यहां आनन्दकी जो चीज देखनेमें आती हैं, वह चरित्र, अनुशासन और नियमकी तरफ ध्यान देना है। कितना अच्छा हो, ऐसी संस्थाओंको हिन्दमें प्रोत्साहन मिले।

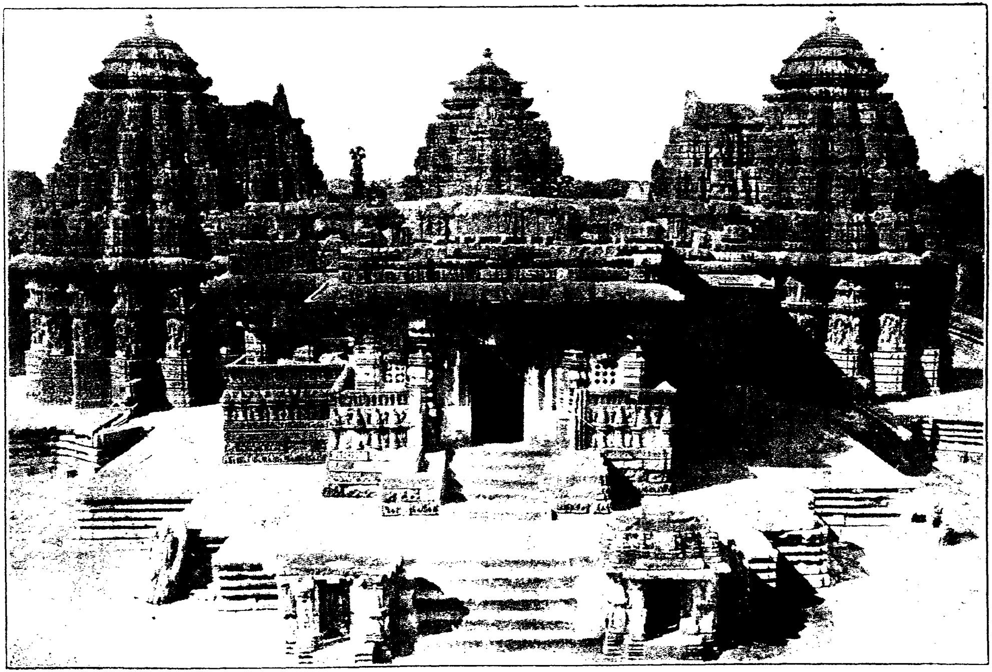
दुनियामें सबसे अभागे कोई हैं, तो वह अंधे और गूंगे हैं। अगर ये लोग गरीब घरमें पैदा होते हैं तो, इनकी गति खराब होजाती है और नतीजतन ये भिखमंगे होजाते हैं। कोई यह नहीं कहसकता कि ऐसे लोगोमें मानवके गुण नहीं होते। होते हैं; लेकिन इन लोगोंका ख्याल नहीं किया जाता है, तो इनके गुण किसी कामके नहीं होते। हिंदके देशी राज्योंमें मसूर एक है, जहां इन अभागोंका ख्याल किया जाता है। इनकेलिए मैसूरमें एक स्कूल खोली गयी हैं, जहां ये अभागे पढते-लिखते हैं। अब तक इसस्कूलको खोले ३८ साल हो चुके। यह लिखना बेजा नहीं कि ये लोग शिक्षा पाकर स्वावलम्बी होरहे हैं। यहां ६० से ७० तक लडके शिक्षा पाते हैं। पढने-लिखनेके अलावा खास तौरसे संगीतमें दक्षहोकर चन्द अंधे अपनी रोजी कमारहे हैं। लेकिन इनके सामने जटिल समस्या यह है कि ये भद्दे होते हैं। स्कूलके अधिकारी इनको भद्देपनसे बचानेकी भी कोशिश कररहे हैं। इसका मतलब यह नहीं कि अधिकारी नयी सृष्टि कररहे हैं। बनावटी आंखें वगैरह दिया जायं और और बातोंमें ख्याल किया जाय तो, अंधे सुन्दर और साफ-सुथरे क्यों नहीं होसकते ?

इसस्कूलमें भी धन्धोंका एक विभाग है, जहां छोटे धन्धोंकी शिक्षा दीजाती है। बुनाई, Ratan Work, और बागके काम वगैरह चीजोंकी शिक्षा दीजाती है। इसस्कूलसे लगे हुए बगीचेको देखकर यह कहा जासकता है कि अन्धोंका काम कैसा होता है। जब अन्धोंकी मेहनतसे स्कूलके खर्चमें कुछ आय होती है, तो इससे बढकर और क्या

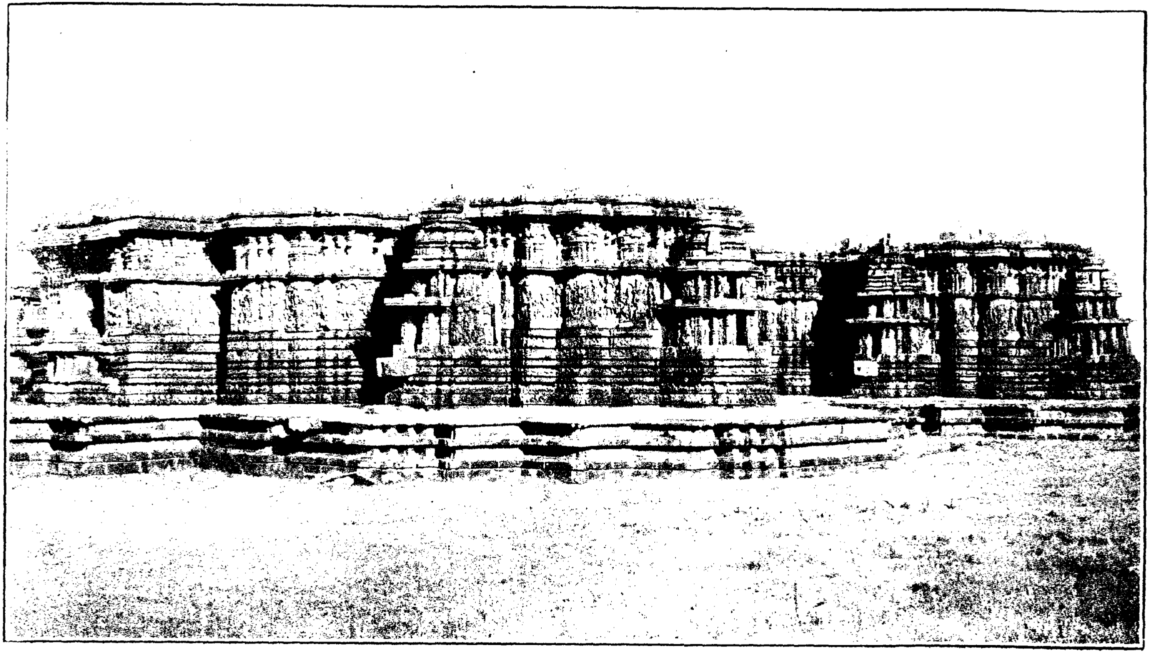
चाहिये। यहां छात्रोंको कुछ मेहनतानाभी दीजाती है, जो उनके हिसाबमें जमा किया जाता है।

इसस्कूलके बारेमें जगहकी कमीसे ज्यादह न लिखकर हम इतना ही लिखना चाहते हैं कि यहां अंधे और गूंगे शिक्षा पाकर बहुत मजेमें हैं! श्री आर. एन. बायसने—जो एक फारसी सज्जन हैं—२५ हजार रूपया दानमें देकर इससंस्थाके सुंदर मकानको बनवाया है, जो इस संस्थाके सामने हिस्सेका भवन है।

मैसूरमें ऐसे तो बहुतसी ऐसी संस्थायें हैं, जिनकी शिक्षा और इन्तजाम देखकर यह कहा जासकता है कि मैसूर शिक्षामें भी आगे है। हमें तो मैसूर शिक्षा—विधानमें जो मन लगी बात दीखी है, वह व्यवसाय-धन्धों, कलाओं और दूसरे धन्धोंकी तरफ लगन है। अगर देशकी शिक्षितोंकी गरीबी और बेकारीको दूर करना है, तो शिक्षामें काम-काजकी चीजोंकी शिक्षा देना जरूरी है। हिंदमें तो खास चीज कृषि है और उसके बाद देशमें चालू व्यवसाय हैं। अगर हमारे शिक्षित इनकी काफी शिक्षा पायेंगे तो जरूर उनकी बेकारी और गरीबी कम होसकती है। मैसूरमें इसतरफ काफी इन्तजाम है, ऐसा कहा जासकता है। बस, यहां यही एक बात है, जिससे मैसूरके शिक्षा-विधानसे प्रेम होजाना चाहिये। हम आशाकरते हैं कि मैसूरके महाराजा इस तरफ और ध्यान देंगे और शिक्षामें क्रांति पैदा करेंगे। वह जब यह मानते हैं कि सब आर्थिक रोगोंकी चिकित्सा शिक्षा है, तो कौन कह सकता है कि वह अपने राज्यकी शिक्षाको ऐसा नहीं बनादेंगे, जो देशके आर्थिक रोगोंसे दूर न रखसके? वे अपने राज्यकी शिक्षामें बहुतसा परिवर्त लाये हैं, जिनसे शिक्षा आर्थिक रोगोंकी दवा होरही है। लेकिन अच्छाईका अंत कहां? इसतरफ कितना भी करें; लेकिन वह कम ही कम है। बस, मैसूरके महाराजा और यहांका विश्वविद्यालय उसकमीको दूर करनेमें तल्लीन रहेंगे, यह हमारी आशा है। कितना अच्छा हो, मैसूर वर्धा शिक्षा—विधानको अपनाकर और यशस्वी होजाय!



केशव मन्दिर, सोमनाथ



होयसलेश्वर मन्दिर, हलेबीड़

उपसंहार

मैसूरके इतिहासपर दृष्टिपात करनेसे यह मानना पडता है कि मैसूर भोगी, विरागी और वेदांतीके लिए आकर्षक चीज है। इसका कारण यह है कि यहांका प्रकृति सौंदर्य और प्राकृतिक साधन शांति और सुखदायी हैं। शांति और सुखदायी मैसूरकी प्रजा अचेत होगयी होगी, ऐसा नहीं समझना चाहिये। देशका शीतल पवन और शरीर-पोषणार्थ अन्न और जल देनेवाली भूमि मैसूरवासीको अचेतसे सचेत ही बनानेमें सहायक है, यह निर्विवादांश है। हिंदमें जितने धार्मिक, नैतिक और वेदांतिक आंदोलन हुए, उनसबसे मैसूरका सम्बंध रहा। यह लिखना बेजा नहीं कि आर्य-संस्कृति और सभ्यताको दक्षिणमें फैलानेमें मैसूरकी सहायता सराहनीय थी। नवनूतना प्रगतिका अर्थ है तो, मैसूरमें स्थित साहित्य कलाओं और शिल्प-कलाको समझनेसे यह विचार बना लेना पडता

है कि इनकी प्रगति नवनूतनता का द्योतक है। बेलूर, हलेबीड, नंजनगूड और सोमनाथ आदि प्रदेशोंके मंदिरोंकी शिल्प-कला, यहां प्रचलित कुठीर-व्यवसाय, बौद्ध, जैन, शैव और वैष्णव आदि धर्मोंके आधारपर प्रगति प्राप्त साहित्य और भिन्न राजनैतिक उलझनोंसे अनुभव प्राप्त प्रजाके बुद्धिबलको समझनेसे यह मानना पडता है कि मैसूरवासी समयपर करवट बदलना जानते हैं और ये प्रगतिशील हैं। मैसूरवासियोंकी शरीर-पटिमा, अंगसौष्ठव, संस्कृत बुद्धि और साहसको देखकर यह मानना पडता है कि ये आर्य हैं, नकि अनार्य। आप लोगोंके राज्य आज नामके भी नहीं; लेकिन जब ये राजवंशज थे, तबकी इनकी शासन-पद्धति और वीरताको समझनेसे यह मानना पडता है कि ये मराठे, सिख और राजपूत जातियोंसे किसी बातमें कम नहीं रहे। आज इनबातोंकी गिन्ती कहां? समय पलटता है; लेकिन हमारी समझमें यह अच्छके लिए ही है। उठी हुई जातियां क्यों गिर गयी? यह मानना पडता है कि पतन दोषके बिना नहीं होता। हिंद-ऊंचा रहा हिंद-किसी दोषसे गिर गया तो, हिंदके अंतर्गत लडाकू जातियां क्यों गिर गयी हैं, इस बातको सोचना फिजूल है।

मैसूरवासी सफेद सरकारके नीचे नहीं; किन्तु हैं देशी महाराजाकी छत्र-छायामें। मैसूरके महाराजाकी छत्री है तो सब बातोंमें देशी; लेकिन यह मानना ही पडता है कि इसके ऊपरका कपडा सफेद है। लेकिन यह ध्रुव सत्य है कि उत्तरदायित्व मैसूरके महाराजाके ऊपर है। इसउत्तरदायित्वके नीचे मैसूरवासियोंकी नागरिक और सामाजिक स्थिति क्या है, यह समझना बुरा नहीं।

समाजकी पहली सीढी देशकी सुदृढ और सुसंघटित राज्य-व्यवस्था है। सभ्य और शक्तिवान प्रजाका देशकी राज्य-व्यवस्थापर हाथ होता है। इसदृष्टिसे देखा जाय तो मैसूरमें यह नदारत है। हां, मैसूरवासियोंको

अपने वांछित प्रतिनिधियोंको राज्यकी प्रतिनिधि-सभा और कौंसिलमें भेजनेका हक है। जो हो, यह मानना पड़ता है कि सारी राज्य-व्यवस्थापर श्री महाराजा सिर हैं। हां, इसबातसे खुश होना चाहिये कि मैसूरवासी ही राज्य-व्यवस्थाके संचालक होते हैं। इससे यह मानना पड़ता है कि राज्य-व्यवस्था चलानेमें मैसूरवासी दक्ष हैं। रहगयी आम जनताकी बात। इसतरफ राज्य-व्यवस्थापर प्रजाका नागरिक हक और बढाया जायगा या नहीं, यह भविष्यकी बात है। इस तरफ महाराजा क्या सोचरहे हैं, यह हम नहीं कहसकते। जो हो, मैसूरकी राज्य-व्यवस्थामें परिवर्तन करनेका विचार होरहा है। हमें यह लिखनेका साहस नहीं कि श्री महाराजा मैसूर-प्रजाकी इच्छाकी अवहेलना करेंगे और उनका हक उनको नहीं देंगे।

राज्य-व्यवस्थाके बाद दूसरी सीढी आर्थिक संरक्षण और उन्नति है। संसारके दूसरे देशोंकी आर्थिक दशाको समझकर, यह कोई नहीं कहसकता कि मैसूर वासियोंकी आर्थिक दशा अच्छी है। लेकिन यह लिखना बेजा है कि इसतरफ राज्यकी नजर नहीं - जैसे सब देशी राज्योंमें होता है। ऐसा कहा जासकता है कि सन १९११ से मैसूरके महाराजा अपने राज्यकी प्रजाकी आर्थिक दशाको मजबूत बनानेमें लगे हैं। इसका क्रियात्मक रूप मैसूर एकनामिक कान्फरेन्ससे शुरू होता है। यह तो माननेकी बात है कि मैसूर सरकारने देशकी उत्पत्ति-शक्तिको बढाया है और उत्पत्ति-शक्तिका हास नहीं होने देनेके लिए व्यवसाय-धन्धोंको प्रोत्साहन दिया गया है। इतना होनेपर भी देशकी गरीबी मिटी नहीं। इसका कारण हमने पिछले परिच्छेदमें बताया है। जो हो, मैसूरका राष्ट्रीय ऋण करीब ३५ करोड़ है। यह सुननेमें आता है कि मैसूर सरकार इस ऋणसे प्रजाको बचानेमें जी-जानसे संलग्न है। अगर मैसूर सरकार चाहे तो, यह बात बातकी बातमें हल होसकती है; लेकिन यह तब होगा, जब साम्राज्यका बोझ मैसूरके सिरसे टलेगा। आमदनी आम

यह है कि ब्रिटीश सरकारने सबसीडी, साम्राज्यकी आय और कन्टोन्मेंट और उसके आसपासकी जगहोंकी आयके--जो सब मिलाकर सालाना करीब सवादो करोड रूपयेकी होती है --- अलावा गत युद्धमें मैसूरसे करीब २ करोड रूपयेकी सहायता ली और मैसूरके बोझको और बढाया अभी हालमें मैसूरमें श्री वायसराय साहेब पधारे। उन्होंने तो भावि युद्धकी सहायताके लिए जोरहार दलील पेशकी; लेकिन वह मैसूर-प्रजाकी गरीबीको दूर करनेकी सलाह तक नहीं देसके। सलाह तो दूर; लेकिन उन्होंने सबसीडी और कन्टोन्मेन्टकी बात तक नहीं छेडी, जिसकी मैसूर प्रजाको पूरी आशा थी। जो हो, मैसूर प्रजाकी आर्थिक दशाको मजबूत बनानेके श्री महाराजाके जतनकी कोई निन्दा नहीं करसकता; लेकिन यह सुधरी नहीं। जब धन नहीं तो सामाजिक और नागरिक ओहदा कम रहता ही है, यह मामूली सूझकी बात है। लेकिन प्रजा और श्री महाराजाकी संलग्नताको देखकर यह मानना पडता है कि मैसूरका भविष्य उज्वल है। मैसूरके सहकार संघोंकी बाबत हम कुछ भी नहीं लिख सके, जिनका काम मजबूत है। ऐसा तो मैसूरमें इसतरफ सन १९०५ से काम शुरु हुआ है; लेकिन आज मैसूरमें १९९८ सहकार संघ हैं। इससम्बन्धमें यह लिखना बेजा नहीं कि एक दिन मैसूरमें जापानकी तरह सहकार संघोंका संघटन सुसंघटित होगा। कर्ज देनेके ही नहीं; बल्कि व्यापारकी दृष्टिसे भी यहां बहुतसे सहकार संघ हैं। कृषि और व्यापारमें इनसंघोंसे किसानोंको बहुतसा फायदा होरहा है, ऐसा कहा जासकता है। यह मानना चाहिये कि मैसूर सरकारने देशकी आर्थिक दशाको पुष्ट बनानेमें कोई रास्ता छोड नहीं रखा है; लेकिन साम्राज्य-नीति ऐसी है, जो मैसूरके गुडको गोबर बना रही है।

प्रजाकी सोचने और काम करनेकी शक्ति नहीं बढाथी जाती है यानि प्रजा राज्य-व्यवस्थाकी, आर्थिक, नागरिक और सामाजिक बातें समझने और उनके लिए काम करने लायक नहीं होतीहै तो, किसी देशमें

प्रजाकी हैसियत ऊंची नहीं होसकती। ब्रिटीश हिन्दकी और हिन्दके देशी राज्योंकी बातोंको समझनेसे या यहां प्रचलित अधिकार-आडम्बरताको देखनेसे यह कोई नहीं कहसकता कि यहांकी प्रजा ही खुद राज्य-व्यवस्थाकी, आर्थिक, नागरिक और सामाजिक बातोंको सुदृढ और सुसंघटित बना सकती है, जिससे इसका ओहदा यहां हिंद और हिंदके बाहर ऊंचा हो सके। जब देशकी आधारभूत राज्य-व्यवस्था —जो प्रजाकेलिए है —प्रजाके हाथमें नहीं रहकर, एक व्यक्ति या उसव्यक्तिके इशारोंपर चलनेवाले व्यक्ति समूहपर टिकी है तो, यह कैसे कहा जासकता है कि प्रजाही अपनी सोचने और काम करनेकी शक्तिको बढासकतीहै, जिससे वह नागरिक और सामाजिक दशामें उन्नतऔर सुसंस्कृत हो? यह तब होगा, जब राज्य-व्यवस्था प्रजाके हाथमें होगी या राज्य-व्यवस्था के संचालक खुद यह चाहेंगे। देशीराज्योंमें ऐसा होनेकी बात बहुत दूर है, ऐसा सूझता है। कारण कि देशी राज्योंके महाराजा और नवाब खुद आजाद नहीं। उनके ऊपर साम्राज्यका अंकुश है। महाराजा और नवाब अपनी बुद्धिसे कुछ भी नहीं करसकते, जो साम्राज्यवादसे भिन्न हो। यह तो सच बात है कि देशी राज्योंकी बातें बहुत खराब हैं और वहांके महाराजा या नवाब अपने राज्योंको सुधार लेना भी नहीं चाहते। इसतरफ याने प्रजाकी सोचने और काम करनेकी शक्तिको बढानेमें कुछ किया जासकता है तो, वह सिर्फ शिक्षाके जरिये। यह माननेकी बात है कि मैसूर सरकार इसतरफ लापरवाह नहीं। यहां प्राथमिकसे माध्यमिक शिक्षा निशुल्क दीजाती है तो, क्या यह कम तारीफकी बात है? मैसूरवासी शिक्षा-प्रेमी जरूर हैं और ये इसतरफ तीजीके साथ बढरहे हैं। स्टेट भरमें २१ ग्रन्थालय हैं, जो स्टेटभरके लिए काफी हैं। यहां काफी ग्रन्थ संग्रह है, जो आधुनिक दृष्टिसे उपयोगी है। यहां कुल १५४ छापाखाने चलते हैं, जिनमें ६२ काफी काम लायक हैं। आधुनिक दृष्टिसे प्रगति प्राप्त साहित्य प्रकाशन संस्थायें बहुतसी हैं जिनके द्वारा समयानुकूल साहित्य प्रकाशित कियाजाता है कुल ८१ पत्र, पत्रिकायें, मैसूर राज्यमें हैं, जो सोलह आना राष्ट्रीय हैं।

दैनिक और साप्ताहिक पत्र करीब २३ हैं, जिनमेंसे चार अंग्रेजीके और एक उर्दूका है। ६० मासिकोंमेंसे १६ अंग्रेजीके हैं। यह कहा जासकता है कि राज्यकी भाषा कनडी सब पहलुओंसे प्रगतिपर है। यूनिवर्सिटी और श्री महाराजाकी तरफसे कनड-साहित्यकी प्रगतिमें बड़ा प्रोत्साहन मिलता है।

नये विचारोंसे साहित्य प्रकाशनके और प्रगतिशील पत्र, पत्रिकाओंके कारण मैसूरकी प्रजामें नूतन ज्योति फैलरही है, ऐसा कहा जासकता है। इसतरफ मैसूर सरकार बधाईके काबिल है। यह लिखना बेजा नहीं कि साहित्य-प्रकाशन और पत्र, पत्रिकाओंके लिए सरकारसे सहायता मिलती हैं। मैसूरकी नागरिक और सामाजिक दशामें पत्र-पत्रिकाओं और नव साहित्य प्रकाशनके अतिरिक्त कुछ प्रभावशाली व्यक्ति भी स्तुतिके पात्र हैं। यों तो मैसूर राज्यमें ऐसे बहुतसे व्यक्ति हैं; लेकिन हम यहां मैसूरके पितामह स्वर्गीय एम. वेंकटकृष्णय्याजीका नाम लिये बिना नहीं रहसकते। इसकी वजह यह है कि आप प्रजोपयोगी कार्योंकी प्रगतिके जन्मदाता थे। आपके सम्बन्धमें इतना ही लिखदेना काफी है कि आपका साधु जीवन और सेवा भाव आजके मैसूरकी प्रगतिके प्राण हैं। आज मैसूरमें साहित्यिक, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति जो होरही है, उसकी नींव श्री वेंकटकृष्णय्याके पावन कर-कमलोंसे डाली गयी, ऐसा कहा जासकता हैं। आज भी मैसूरवासी आपको भूले नहीं। और यहां तक कि श्री महाराजाको भी आपपर गुरु-भाव है।

यह तो माननेकी बात है कि दक्षिण हिन्दू धर्मका अड्डा है। धर्म खुआ है, ऐसा कोई नहीं कहसकता। यह तो सब मानते हैं कि हमारे देशमें कुछ ऐसी रूढ़ियां जड पकडी हैं, जिनके कारण हिन्दूकी प्रगतिके रास्तेमें कांटे हैं। वर्ण-भेद, अस्पृश्यता, समुद्र-यान, स्त्री-शिक्षा और वैवाहिक बन्धन वगैरह बातोंमें हमारे देशके विचार ऐसे हैं, जिनमें सुधारकी जरूरत है। श्री राजा राम मोहनसे लेकर महात्माजी